VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

PT 365

संस्कृति

Classroom Study Material

(May 2020 to January 2021)

DELHI LUCKNOW JAIPUR HYDERABAD PUNE AHMEDABAD CHANDIGARH GUWAHATI

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /Vision_IAS vision_ias www.visionias.in /VisionIAS_UPSC

संस्कृति

विषय सूची

1. मूर्तिकला और स्थापत्यकला (Sculpture and Architecture) 4

1.1. लिंगराज मंदिर (Lingaraj Temple) 4

1.2. सुर्ख़ियों में रहे अन्य मंदिर (Other temples in News) 5

1.3. सुर्ख़ियों में रहे स्मारक (Monuments in News) 7

2. चित्रकला और अन्य कलाएं (Paintings & Other Art Forms) 9

2.1. गुफा चित्रकारी (Cave Paintings) 9

2.2. भारत के पारंपरिक खिलौने (India's Traditional Toys) 11

2.3. मध्य प्रदेश के वस्त्र शिल्प (Textiles of Madhya Pradesh) 14

2.4. सुर्ख़ियों में रही अन्य कलाएं (Other Art forms in News) 16

3. नृत्य और संगीत (Dances & Music) 19

3.1. खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2021 में स्वदेशी खेलों का समावेश (Inclusion of Indigenous Sports in Khelo India Youth Games 2021) 19

3.2. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 20

4. भाषा और साहित्य (Languages and Literature) 22

4.1. प्रबुद्ध भारत पत्रिका (Prabuddha Bharat Journal) 22

4.2. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 22

5. यूनेस्को की पहलें (Initiatives of UNESCO) 25

5.1. यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची {UNESCO's World Heritage Cities (WHC) List} 25

5.2. स्ट्रीट हॉकर संस्कृति (Street Hawker Culture) 26

6. त्यौहार (Festivals) 29

7. प्राचीन और मध्यकालीन भारत (Ancient & Medieval History) 32

7.1. गुर्जर-प्रतिहार (Gurjara-Pratiharas) 32

7.2. काकतीय वंश (Kakatiya Dynasty) 33

7.3. सिंधु घाटी सभ्यता से डेयरी उत्पादन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं {Evidence of Dairy Production in the Indus Valley Civilization (IVC)} 34

7.4. सादिकपुर सिनौली में उत्खनन (Sadikpur Sinauli Excavations) 37

8. व्यक्ति (Personalities) 39

8.1. नेताजी सुभाष चंद्र बोस (Netaji Subhas Chandra Bose) 39

VISION IAS

8.2. ज्योतिबा फुले (Jyotiba Phule) 40
8.3. बाल गंगाधर तिलक (Bal Gangadhar Tilak) 42
8.4. बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की 350वीं जयंती (350th Jayanti of Baba Banda Singh Bahadur) 42
8.5. पुरंदर दास (Purandara Dasa) 43
8.6. सुर्ख़ियों में रहे अन्य प्रमुख व्यक्ति (Other Personalities in News) 44

9. ऐतिहासिक घटनाक्रम (Historical Events) 48

9.1. मालाबार विद्रोह (Malabar Rebellion) 48
9.2. अखिल भारतीय श्रमिक संघ कांग्रेस (All India Trade Union Congress: AITUC) 49
9.3. द्वितीय विश्व युद्ध (World War 2) 50
9.4. किस्सा ख्वानी बाजार नरसंहार (Qissa Khwani Bazaar Massacre) 51
9.5. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News) 51

10. विविध (Miscellaneous) 53

10.1. भौगोलिक संकेतक टैग {Geographical Indication (GI) Tag} 53
10.2. विरासत प्रबंधन (Heritage Management) 56
10.3. कुशीनगर (Kushinagar) 58
10.4. करतारपुर कॉरिडोर (Kartarpur Corridor) 59
10.5. लद्दाख की भाषा, संस्कृति और भूमि की रक्षा के लिए समिति का गठन (Committee to Protect Language, Culture & Land of Ladakh) 59
10.6. साहित्य में नोबेल पुरस्कार (Nobel Prize in Literature) 61
10.7. सुर्ख़ियों में रही जनजातियाँ (Tribes in News) 61
10.8. पुरस्कार और अवार्ड्स (Prize and Awards) 64
10.9. खेलो इंडिया स्टेट सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस (Khelo India State Centres of Excellence: KISCE) 64
10.10. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News) 65

नोट:

PT 365 (हिंदी) डाक्यूमेंट के अंतर्गत, व्यापक तौर पर विगत 1 वर्ष (365 दिन) की महत्वपूर्ण समसामयिकी को समेकित रूप से कवर किया गया है ताकि प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी में अभ्यर्थियों को सहायता मिल सके।
अभ्यर्थियों के हित में PT 365 डॉक्यूमेंट को और बेहतर बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित नवीन विशेषताओं को शामिल किया गया है:

1. टॉपिक्स के आसान वर्गीकरण और विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को रेखांकित तथा याद करने के लिए इस अध्ययन सामग्री में विभिन्न रंगों का उपयोग किया गया है।
2. अभ्यर्थी ने विषय को कितना बेहतर समझा है, इसके परीक्षण के लिए QR आधारित स्मार्ट क्विज़ को शामिल किया गया है।

VISION IAS

3. विषय/ टॉपिक की आसान समझ के लिए इन्फोग्राफिक्स को शामिल किया गया है। यह सीखने और समझने के अनुभव को आसान बनाता है तथा पढ़े गए विषय/कंटेंट को लंबे समय तक याद रखना सुनिश्चित करता है।

SMART QUIZ	विषय की समझ और अवधारणाओं के स्मरण की अपनी क्षमता के परीक्षण के लिए आप हमारे ओपन टेस्ट ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर स्मार्ट क्विज़ का अभ्यास करने हेतु इस QR कोड को स्कैन कर सकते हैं।	

1. मूर्तिकला और स्थापत्यकला (Sculpture and Architecture)

1.1. लिंगराज मंदिर (Lingaraj Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, ओडिशा सरकार ने 11वीं शताब्दी के लिंगराज मंदिर को इसके 350 वर्ष प्राचीन संरचनात्मक स्वरूप के समान इसकी पुनर्सज्जा (facelift) करने की घोषणा की है।

लिंगराज मंदिर के बारे में

- इसका निर्माण 11वीं शताब्दी ईस्वी में **सोम वंश के शासक ययाति केसरी (Jajati Keshari)** द्वारा करवाया गया था, जिसमें आगे **गंग वंश** के शासकों द्वारा परिवर्धन किया गया।
- **यह भगवान शिव को समर्पित है।**
  - यह मंदिर ओडिशा में **शैववाद और वैष्णववाद के सामंजस्य** का प्रतीक है।
- इसके **देउल** (शिखर) की ऊंचाई **180 फीट** हैं तथा यह भुवनेश्वर में मंदिर स्थापत्यकला की पराकाष्ठा को दर्शाता है, जो कि **मंदिर स्थापत्यकला की कलिंग शैली** का उद्गम स्थल था।
- मंदिर को सामान्यतया 4 मुख्य सभामंडपों में विभाजित किया जा सकता है, यथा-
  - **गर्भगृह** (मुख्य देवता का स्थान),
  - **यज्ञ मंडप** (प्रार्थना के लिए कक्ष),
  - **नाट्य मंडप** (नृत्य व संगीत कक्ष), एवं
  - **भोग मंडप** (जहां भक्तों को भगवान का प्रसाद /भोग प्राप्त होता है)।
- **दैनिक जीवन के क्रियाकलापों व गतिविधि केंद्रों को दर्शाती हुई उत्कृष्ट नक्काशी** मंदिर को पूजा स्थल होने के साथ-साथ, एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक सभागार भी बनाती है।
- लिंगराज मंदिर को **"स्वयंभू"** माना जाता है - **(स्वयं-प्रकट शिवलिंग)** तथा **शिवलिंग को हरिहर के रूप में जाना जाता है**। यह ओडिशा में **शैव एवं वैष्णववाद संप्रदायों के समन्वय** का संकेत देता है।
- मंदिर का अन्य आकर्षण **बिंदुसागर झील** है, जो मंदिर की उत्तर दिशा में स्थित है।
- **शिवरात्रि उत्सव** मंदिर में मनाया जाने वाला प्रमुख त्यौहार है।
- मंदिर परिसर में **गैर-हिंदुओं का प्रवेश वर्जित** है, परंतु दीवार के निकट **एक मंच** बना हुआ है, जहां से मुख्य बाह्य भाग का एक मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। मूल रूप से, इस मंच का निर्माण **वायसराय लॉर्ड कर्जन की यात्रा** के दौरान करवाया गया था।

मंदिर स्थापत्यकला की कलिंग शैली

- **कलिंग स्थापत्य शैली नागर स्थापत्यकला की एक उप-शैली है, जो प्राचीन कलिंग क्षेत्र** (वर्तमान में ओडिशा, पश्चिम बंगाल एवं उत्तरी आंध्र प्रदेश) में विकसित हुई थी।
- इसमें, **शिखर (ओडिशा में देउल कहा जाता है)** शीर्ष पर वक्रित होने से पूर्व लगभग ऊर्ध्वाधर होता है।
- शिखर से पहले **मंडप (ओडिशा में इसे जगमोहन** या नृत्य मंडप कहते हैं) होता है।
- इस शैली में मंदिरों के **तीन विशिष्ट प्रकार** सम्मिलित होते हैं यथा: **रेखा देउल, पीढ़ा देउल एवं खाखरा देउल**।
- **रेखा देउल एवं खाखरा देउल** में **गर्भगृह** होता है, जबकि पीढ़ा देउल में बाह्य नृत्य एवं भोग सभाकक्ष होता है।
- **कलिंग वास्तुकला के अन्य उदाहरण**: राजरानी मंदिर (भुवनेश्वर); जगन्नाथ मंदिर (पुरी) आदि।

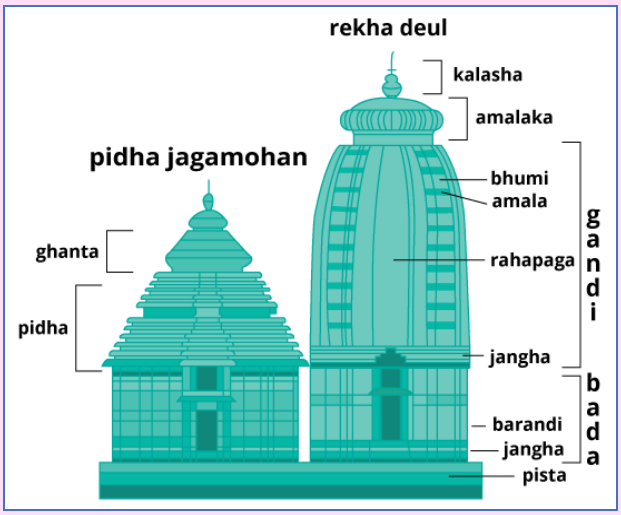

VISION

1.2. सुर्ख़ियों में रहे अन्य मंदिर (Other temples in News)

प्रमुख यूनेस्को स्थल	
सूर्य मंदिर, कोणार्क (ओडिशा) (Konark Sun Temple, Odisha)	• इसका निर्माण गंग वंश के **शासक नरसिंहदेव प्रथम** द्वारा 13वीं सदी ई. के मध्य में करवाया गया था। • यह मंदिर **सूर्य देव के 24 पहियों से युक्त सूर्य रथ** का प्रतिनिधित्व करता है। • यह **यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल सूची** में सम्मिलित है। • यह अपने काले रंग के कारण **'ब्लैक पैगोडा'** के रूप में भी जाना जाता है। • नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने कोणार्क सूर्य मंदिर तथा कोणार्क शहर को **'सूर्य नगरी'** के रूप में विकसित करने हेतु **इनके शत प्रतिशत सोलराइजेशन की योजना का शुभारंभ किया है।**
विट्ठल मंदिर कर्नाटक (Vittala Temple, Karnataka)	• हम्पी में विट्ठल मंदिर का निर्माण **विजयनगर साम्राज्य के शासक देवराय द्वितीय (1422 - 1446 ईस्वी)** के शासनकाल के दौरान किया गया था। ○ **कृष्णदेवराय (1509- 1529 ईस्वी)** के शासनकाल के दौरान मंदिर के **कई हिस्सों का विस्तार और जीर्णोद्धार** किया गया था। • यह मंदिर **भगवान विष्णु के अवतार विट्ठल को समर्पित** है। यह तुंगभद्रा नदी के तट पर हम्पी के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। • यह मंदिर वास्तुकला की **द्रविड़ शैली** में बनाया गया है। विट्ठल मंदिर के मुख्य आकर्षण इसके प्रभावशाली स्तंभयुक्त **सभागार और पाषाण निर्मित रथ** हैं। • **यह हम्पी के ऐतिहासिक स्थलों में से एक है।** ○ हम्पी कर्नाटक में स्थित एक **यूनेस्को विश्व विरासत स्थल** (UNESCO World Heritage Site) है। ○ इसका नामकरण **पम्पा** (तुंगभद्रा नदी का प्राचीन नाम) नदी के नाम पर किया गया था, जिसके तट पर यह शहर स्थित है। **यह विजयनगर साम्राज्य की अंतिम राजधानी थी।** ○ **विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का द्वारा 1336 ईस्वी में की गई थी।** इसे 1565 ईस्वी में **(तालिकोटा के युद्ध में)** दक्कन के मुस्लिम शासकों ने नष्ट कर दिया था। • **प्रमुख स्थल:** अच्युतराय मंदिर, विट्ठल मंदिर, पट्टाभिराम मंदिर, कमल महल आदि।
पशुपतिनाथ मंदिर, काठमांडू (नेपाल) Pashupatinath Temple, Kathmandu, Nepal)	• हाल ही में, भारत और नेपाल ने इस मंदिर परिसर की अवसंरचना में सुधार हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ○ यह परियोजना **नेपाल-भारत मैत्री: विकास भागीदारी (Nepal-Bharat Maitri: Development Partnership)** का एक भाग है, जो कि भारत द्वारा संचालित व उच्च प्रभाव वाली एक सामुदायिक विकास योजना है। • यह एक हिंदू मंदिर है तथा यह **नेपाल का सबसे बड़ा मंदिर परिसर** है। इसका विस्तार **बागमती नदी के दोनों किनारों** तक है।

 © Vision IAS

	○ यह मंदिर **यूनेस्को के सांस्कृतिक विरासत स्थलों** में से एक है।
अन्य मंदिर	
सोमनाथ मंदिर, गुजरात (Somnath Temple, Gujarat)	• **भारत के प्रधान मंत्री को** सोमनाथ मंदिर न्यास के **अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है।** • सोमनाथ मंदिर **गुजरात** के पश्चिमी तट पर सौराष्ट्र में वेरावल के निकट **प्रभास पाटन** में अवस्थित है। • यह **शिव के बारह ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग माना जाता** है। • वर्तमान मंदिर को हिंदू मंदिर वास्तुकला की **चालुक्य शैली में** पुनर्निर्मित किया गया है। मई 1951 में इसे वल्लभभाई पटेल द्वारा पूर्ण करवाया गया था। • यह स्थल कपिला, हिरन और सरस्वती का **त्रिवेणी संगम** (तीन नदियों का संगम) माना जाता है।
श्री श्री जय काली मातर मंदिर, नटोर, बांग्लादेश (Sree Sree Jai Kali Matar temple, Natore, Bangladesh)	• यह बांग्लादेश के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। **इस मंदिर का निर्माण लगभग 300 वर्ष पूर्व श्री दयाराम रॉय द्वारा करवाया गया था, जो दिघपतिया शाही वंश के संस्थापक थे।** • हाल ही में, **उच्च प्रभाव वाली सामुदायिक विकास परियोजना (High Impact Community Development Project)** के तहत भारत द्वारा प्राप्त सहायता से इसका पुनर्निर्माण किया गया। ○ ज्ञातव्य है कि इस मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए वर्ष 2016 में एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए थे।
बारिकोट घुंडई, पाकिस्तान (Barikot Ghundai,	हाल ही में, उत्तर पश्चिम पाकिस्तान के स्वात जिले के बारिकोट घुंडई में **भगवान विष्णु** के एक प्राचीन हिंदू मंदिर की खोज की गई है।

Pakistan)	• इसे 1,300 वर्ष पूर्व हिंदू शाही शासन काल के दौरान बनवाया गया था • **हिंदू शाही या काबुल शाही (850-1026 ईस्वी)** एक हिंदू राजवंश था, जिसने काबुल घाटी (पूर्वी अफगानिस्तान), गांधार (आधुनिक पाकिस्तान) और वर्तमान उत्तर-पश्चिम भारत पर शासन किया था। ○ शब्द हिंदू शाही इस राजवंश की **एक शाही उपाधि थी**, न कि इसका वास्तविक वंशानुगत या नृजातीय नाम। ○ यह वंश **कुषाण साम्राज्य (आधुनिक अफगानिस्तान), या तुर्क (तुरुष्क)** के पूर्वजों से उत्पन्न हुआ था।

1.3. सुर्ख़ियों में रहे स्मारक (Monuments in News)

गोलकुंडा किला, तेलंगाना (Golconda Fort, Telangana)	• यह **हैदराबाद शहर के पश्चिमी भाग में हुसैन सागर झील के निकट** स्थित है। • यह मूल रूप से **मंकल (Mankal) के रूप में जाना जाता** था। इसे 1143 ई. में एक पहाड़ी के शिखर पर निर्मित किया गया था तथा वारंगल के राजा के शासनकाल के दौरान यह एक मिट्टी से बनाया गया किला था। • कालांतर में, 14वीं एवं 17वीं शताब्दी के मध्य क्रमशः **बहमनी सुल्तानों और तत्पश्चात क़ुतुब शाही वंश** के शासकों द्वारा इसे सुदृढ़ता प्रदान की गई थी। 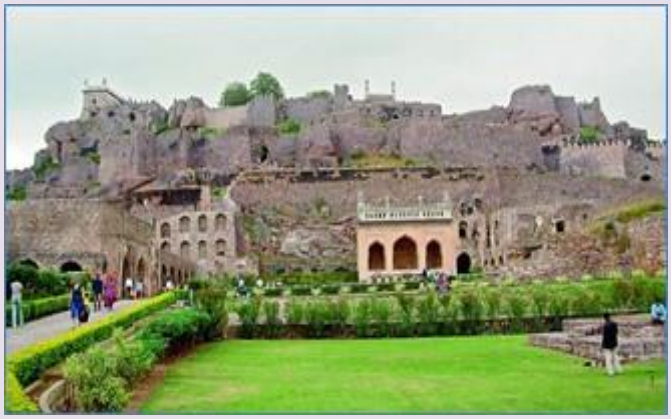
बूंदी, राजस्थान की स्थापत्य विरासत (Architectural heritage of Bundi, Rajasthan)	• बूंदी दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में स्थित एक जिला है। यह पूर्व में **हाड़ा राजपूत रियासत की राजधानी थी, जिसे हाड़ौती के नाम से जाना जाता था।** बूंदी को **सीढ़ीदार बावड़ी शहर, नीला शहर और छोटी काशी** के रूप में भी जाना जाता है। • इसकी **स्थापत्य विरासत को निम्नलिखित में वर्गीकृत किया जा सकता है यथा:** ○ **गढ़ (किला):** तारागढ़। ○ **गढ़ महल (शाही महल):** भज महल; छत्र महल व उम्मेद महल। ○ **बावड़ी (सीढ़ीदार बावड़ी):** खोज दरवाजा की बावड़ी एवं भावलदी बावड़ी। ○ **कुंड (सीढ़ीदार तालाब):** धाभाई जी का कुंड; नागर कुंड; सागर कुंड और रानी कुंड। 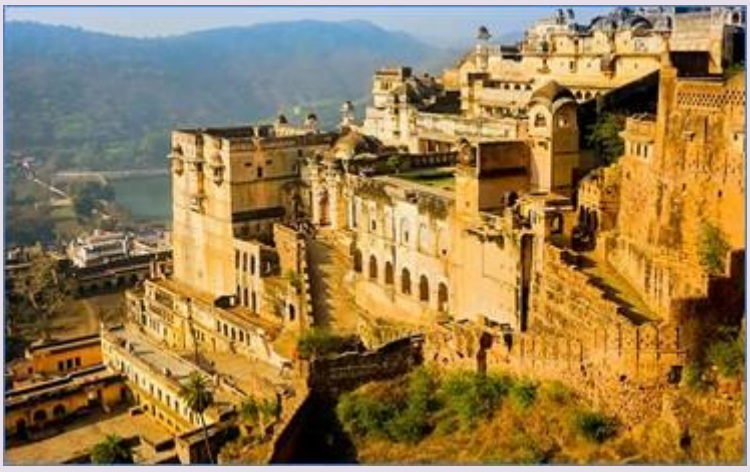

© Vision IAS

	○ **सागर महल (लेक पैलेस):** मोती महल; सुख महल व शिकर बुर्ज। ○ **छतरी (सेनोटाफ):** चौरासी।
हागिया सोफिया, तुर्की (Hagia Sophia, Turkey)	• हाल ही में, हागिया सोफिया नामक इस्तांबुल के एक प्रतिष्ठित संग्रहालय को **मस्जिद में परिवर्तित** कर दिया गया। • छठी शताब्दी ईस्वी में पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी के लिए एक कैथेड्रल चर्च के रूप में इस विश्व प्रसिद्ध इमारत का निर्माण हुआ था। 1453 ईस्वी में जब इस शहर पर ऑटोमन साम्राज्य का अधिकार हुआ तो इस इमारत में तोड़फोड़ कर इसे मस्जिद में बदल दिया गया। • वर्ष 1934 में इसे एक संग्रहालय बना दिया गया। यह **यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में भी शामिल** है।

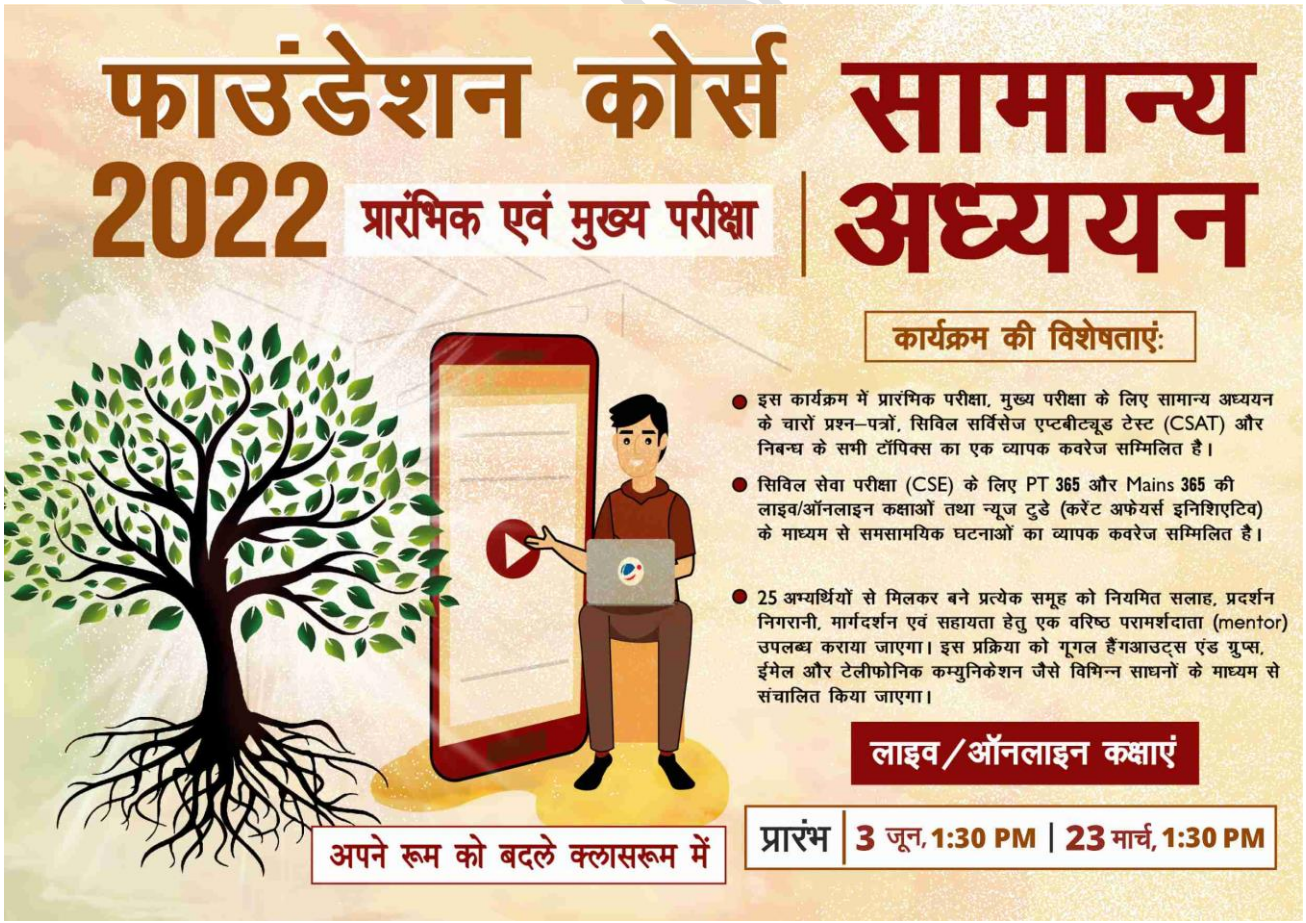

2. चित्रकला और अन्य कलाएं (Paintings & Other Art Forms)

2.1. गुफा चित्रकारी (Cave Paintings)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, विश्व की सबसे पुरानी ज्ञात गुफा चित्रकारी (लगभग 45,000 वर्ष पूर्व चित्रित) इंडोनेशिया के लैंग तेंदोंग (Leang Tedongnge) में एक चूना पत्थर की गुफा में मिली है।

अन्य संबंधित तथ्य

- साउथ सुलावेसी में खोजी गई इस गुफा चित्रकारी में विशाल आकार के **मस्से वाले शूकरों (warty pigs)** को चित्रित किया गया है।
- इससे पूर्व ज्ञात प्राचीनतम गुफा चित्रकारी लगभग 43,900 वर्ष प्राचीन थी। इसमें मानव-पशु संकर आकृति द्वारा सुलावेसी मस्से वाले शूकरों और बौने बोविड (मृग, भेड़ आदि) के शिकार का चित्रण किया गया था।

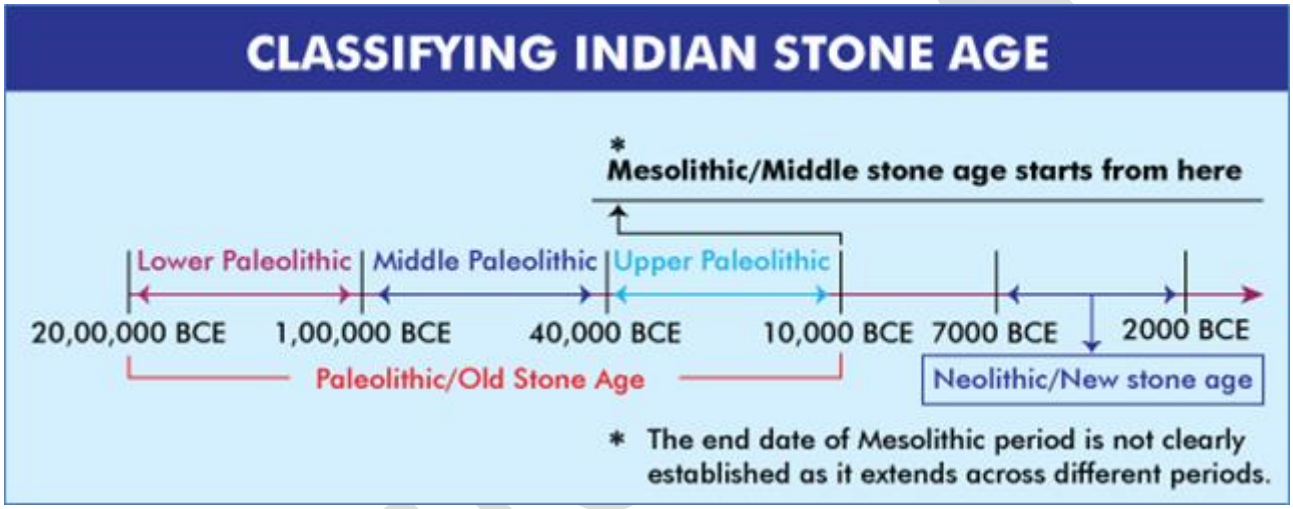

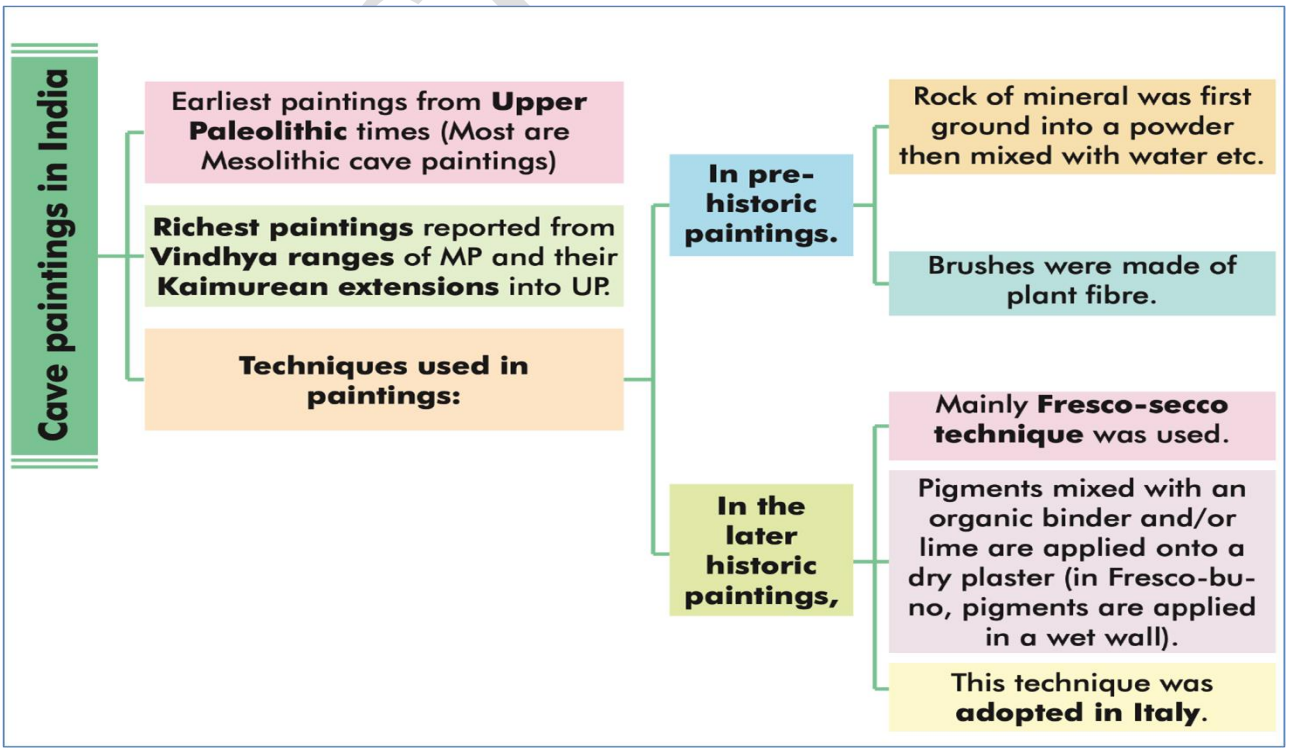

© Vision IAS

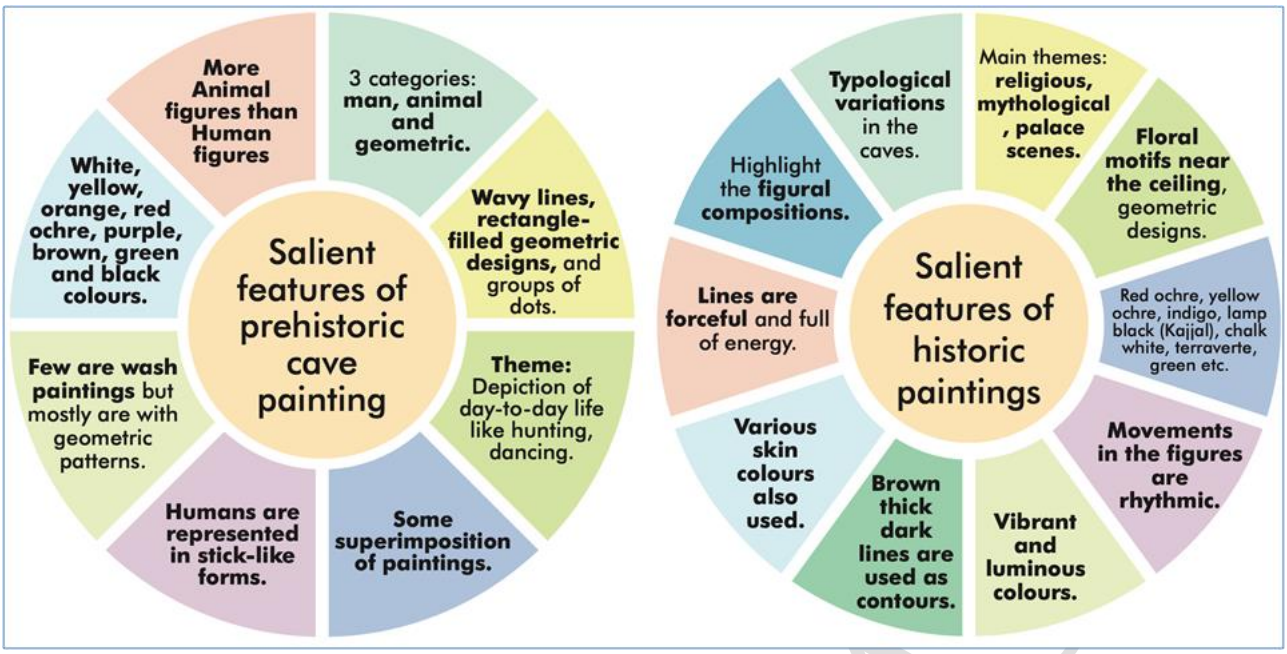

प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों का विकास		
उत्तर पुरापाषाण गुफा चित्र	**मध्यपाषाण गुफा चित्र**	**नवपाषाणकालीन गुफा चित्र**
• इस काल में पहली बार पशु और मानव आकृतियां सरल ज्यामितीय रूप में चित्रित की गईं। • जानवरों को उनकी प्राकृतिक रूपरेखा में दिखाया गया था और मनुष्य को **शिकार या नृत्य की गतिशील** क्रिया में भावात्मक रूप में व्यक्त किया गया था। • इन चित्रों में सटीक 'S' आकार की मानव आकृतियों को दर्शाया गया है, जो विभिन्न गतिविधियों को दर्शाती हैं जैसे कि वे शिकार कर रहे हैं, नृत्य कर रहे हैं और दौड़ रहे हैं। • ऐसा प्रतीत होता है कि इस अवधि के दौरान यह गुफाओं का ऊपरी हिस्सा था, जिसे सर्वाधिक चित्रित किया गया था।	• कई **रूपांकनों व डिजाइनों के रूप में रचनात्मकता की व्यापकता दृष्टिगोचर** हुई है। आकृतियां अधिकतर मृदुतापूर्वक प्रवाहित महीन रेखाओं में दर्शाई गई हैं, जो गतिशील मुद्रा को व्यक्त करती हैं। • शिकारियों को **साधारण वस्त्र और आभूषण धारण किए हुए दर्शाया गया है, सिर-पर धारण किए जाने वाले आवरण और मुखौटे** भी कभी-कभी देखे जा सकते हैं। • **पशु रूप प्रकृतिवादी** चित्रण हैं जबकि **मानव आकृतियां स्थिर और भावात्मक** हैं। • **पुरुष आकृतियां छड़ी** के रूप में हैं, जबकि महिला आकृतियां सर्पिल या मधुकोष जैसी जटिल शारीरिक संरचना के साथ भारी बॉक्स के आकार में चित्रित हैं। • मानवों के पीछे दौड़ते विशाल जानवरों, उपचारात्मक एवं शवाधान आदि जैसी **मिथकीय छवियां** चित्रित की गई हैं। • **नृत्य, गर्भवती महिलाएं,** बच्चे के जन्म और एक बच्चे के साथ एक माता जैसे दृश्य भी चित्रित किए गये हैं। • **उदाहरण: लाखाजोर** (मछली पकड़ने का दृश्य, झोपड़ी में परिवार का भोजन करना), **भीमबेटका** (एक रोगी व्यक्ति का जादुई उपचार), **चतुर्भुजनाथ नाला** (गतिशील धनुर्धर) आदि।	• चित्रों में संचलन की अभिव्यक्ति का लोप है, आकृतियों में प्रतीकों का दोहराव हैं। **मनुष्य और पशु आकृतियां अधिक से अधिक योजनाबद्ध और शैलीबद्ध होने लगती हैं।** • आकार, सामान्यतया कम हो गया है, हालांकि कुछ बड़ी आकृतियां भी हैं। • शिकार के दृश्य हैं, परन्तु एक **बड़े समूह के कार्य के रूप में शिकार अनुपस्थित है।** इनमें, एकान्त शिकारी को चित्रित किया गया है। • **उदाहरण:** चतुर्भुजनाथ नाला (रथ चित्रण), कूपगल्लू, पिकलीहल, टेककलकोटा आदि।

गुफा चित्रों के अन्य उदाहरण

- **अजंता की गुफाएँ:** अजंता **प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व की चित्रकला** का एकमात्र जीवित उदाहरण है।
  - इन चित्रों का विषय, छत और स्तंभों पर सजावटी प्रतिरूपों को छोड़कर, लगभग विशेष रूप से बौद्ध है। अजंता में प्रथम बौद्ध गुफा स्मारक **दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व** का है।
  - गुप्त काल के दौरान (5वीं-6वीं शताब्दी ईस्वी), मूल समूह में कई और अधिक समृद्ध रूप से सुसज्जित गुफाओं को शामिल किया गया था।
- **बाघ की गुफाएं:** बाघिनि नदी के सुदूर किनारों पर स्थित इन गुफाओं में बौद्ध चित्र और अवशेष हैं, जो 5वीं से 7वीं शताब्दी के हैं।
  - सबसे महत्वपूर्ण गुफा नंबर 4 है, जिसे सामान्यतया रंग महल (रंगों का महल) के रूप में जाना जाता है।
- **बादामी गुफाएं:** बादामी प्रारंभिक चालुक्य वंश (543 से 598 ईसा) की राजधानी थी।
  - ये गुफा चित्र भगवान शिव को समर्पित हैं और अब तक ज्ञात (6वीं शताब्दी) प्राचीनतम ब्राह्मणवादी चित्रों से संबंधित हैं।

- **सित्तनवासल:** यह पुदुक्कोट्टै के निकट पांडय युग (9वीं शताब्दी) का एक शैलोत्कीर्णित जैन मंदिर है। ये गुफाएं चित्र जैन विषयों और प्रतीकवाद को समर्पित हैं।
- **एलोरा गुफाएं:** ये गुफाएं 600 से 1000 ईस्वी तक स्मारकों के निरंतर निर्माण को दर्शाती हैं।
  - इनमें हिंदू, बौद्ध और जैन मंदिर शामिल हैं। इन चित्रों का मुख्य विषय भी इन 3 धर्मों पर केंद्रित है।
- **एलीफेंटा/घारपुरी गुफाएं:** इन गुफाओं का निर्माण लगभग 5वीं से 6वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य हुआ था।
  - वे हिंदू और बौद्ध मंदिरों की शरणस्थली हैं।
  - एलिफेंटा में बौद्ध स्तूपों के अवशेष संभवत: ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के बौद्ध धर्म के प्रारंभिक चरण के हैं।

संबंधित तथ्य

सुलावेसी कला

- **विश्व के सबसे प्राचीन गुफा-चित्र इंडोनेशिया में** खोजे गए हैं।
- 45,000 वर्षों से अधिक प्राचीन इन गुफा चित्रों में **इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप, जहां ये चित्र पाए गए हैं, के स्थानीय पशु, मस्से वाले शूकरों (warty pigs) को चित्रित किया गया है।**
  - चित्रकारी **चूना पत्थर की एक गुफा में** पाई गई थी और इसे **लाल गेरूआ रंग** का उपयोग करके चित्रित किया गया था।
  - सुलावेसी मस्से वाले शूकरों का चित्रण यह दर्शाता है कि **ये पशु प्राचीन मनुष्यों के लिए महत्वपूर्ण थे।**

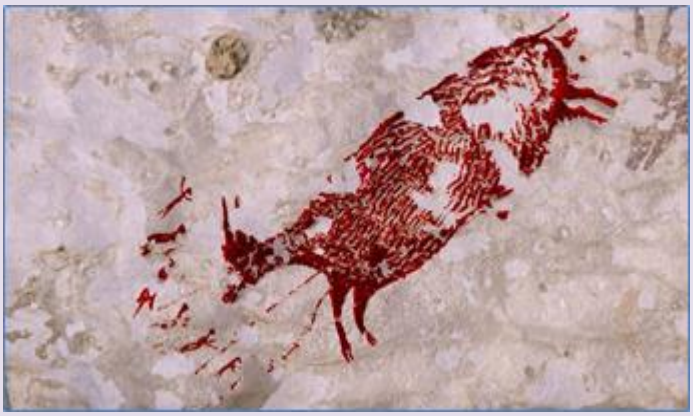

- पुरातत्वविदों ने इन गुफा चित्रों के काल-निर्धारण के लिए **यूरेनियम-श्रृंखला समस्थानिक विश्लेषण (Uranium-series isotope analysis) पद्धति का उपयोग किया है।** इस विश्लेषण के अंतर्गत **कैल्शियम कार्बोनेट निक्षेप** का उपयोग किया जाता है जो कि गुफा की भित्ति की सतह पर स्वाभाविक रूप से निक्षेपित होने लगता है।

© Vision IAS

- सुलावेसी द्वीप में प्रत्यक्ष रूप से दिनांकित कुछ **विश्व की सर्वाधिक प्राचीन शैल कला** पाई जाती है। इसके अतिरिक्त, यहाँ हिम युग के एशियाई महाद्वीप की दक्षिण-पूर्वी सीमाओं से परे होमिनिंस (hominins) की उपस्थिति के भी कुछ सर्वाधिक प्राचीन साक्ष्य मिले हैं।
  - **विगत सर्वाधिक प्राचीन चित्र** (जो लगभग 44000 वर्ष पुराने थे) में भी सुलावेसी में एक शूकर और भैंस को चित्रित किया गया था।
  - होमिनिंस (hominins) के अंतर्गत आधुनिक मानव, विलुप्त मानव प्रजातियां और हमारे तत्काल पूर्वज शामिल हैं।
- गुफा या शैल चित्र **गुफा अथवा शैल भित्तियों और उनकी छत पर** चित्रित चित्र होते हैं। ये चित्र यूरोप, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण पूर्व एशिया में पाए गए हैं।

2.2. भारत के पारंपरिक खिलौने (India's Traditional Toys)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय** के **उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)** ने **हस्तशिल्प एवं भौगोलिक संकेतक (Geographical Indications: GI) दर्जा प्राप्त खिलौनों को गुणवत्ता नियंत्रण आदेश से छूट** प्रदान की है। यह कार्यवाही भारत को खिलौनों के विक्रय एवं निर्यात के लिए वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने के दृष्टिकोण को साकार करने हेतु की गई है।

भारतीय खिलौना उद्योग की स्थिति

- भारत का खिलौना बाजार लगभग 450-500 मिलियन डॉलर का है, जो **वैश्विक खिलौना बाजार का लगभग 0.5%** है। वैश्विक खिलौना बाजार लगभग 90 बिलियन डॉलर का अनुमानित है।
  - इसके अतिरिक्त, भारत विश्व के **सर्वाधिक युवा आबादी वाले देशों में से एक है,** जिस कारण देश में खिलौना उद्योग में तीव्र वृद्धि परिलक्षित होती है।
- 1980 के दशक तक, भारत में उपयोग किए जाने वाले अधिकांश खिलौने देश में ही बनाए जाते थे। हालाँकि, वर्ष 1991 में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण से इसमें परिवर्तन आया, क्योंकि चीन से खिलौनों का अत्यधिक आयात हुआ था।
- वर्तमान में, भारतीय खिलौनों का 80% चीनी आयात से पूरित होता है और गैर-ब्रांडेड चीनी खिलौनों की भारत के बाजार में 90% हिस्सेदारी है।
  - चीन विश्व के लगभग 75% खिलौनों का निर्माण करता है।

भारत के पारंपरिक खिलौनों के बारे में

- भारत काष्ठ, प्लास्टिक, वस्त्र, रेशे, काष्ठ लुगदी, रबड़ और धातु जैसी विभिन्न सामग्रियों से निर्मित हज़ारों खिलौनों का एक प्राचीन क्रीड़ा-स्थल रहा है।

भारत के खिलौना उद्योग को पुनर्जीवित करने के लिए सरकार द्वारा और क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

- **टॉयकैथोन (Toycathon-2021):** इसे हाल ही में आरंभ किया गया था, जो केंद्र द्वारा आयोजित एक विशेष प्रकार की हैकथॉन है।
  - इसका उद्देश्य **स्वदेशी खिलौना उद्योग को बढ़ावा देना और आयात को कम करना** है।
  - यह छात्रों और शिक्षकों, डिज़ाइन विशेषज्ञों, खिलौना विशेषज्ञों और स्टार्ट-अप्स को भारतीय संस्कृति, लोकाचार, लोक कथाओं, नायकों एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित खिलौनों तथा खेलों को विकसित करने के लिए लोगों के विचारों को एकत्रित करने हेतु एक मंच प्रदान करती है।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020:** विद्यालय पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में, छठी कक्षा के उपरांत छात्रों को खिलौना बनाने का कौशल प्रदान किया जाएगा। यह कार्यशालाओं व निर्माण कारख़ानों के भ्रमण के साथ-साथ स्थानीय कारीगरों के माध्यम से किया जाएगा।
- ज्ञातव्य है कि स्वदेशी खिलौनों के विकास, उत्पादन और बिक्री को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार एक व्यापक योजना पर भी कार्य कर रही है।

- भारत में अपने **खिलौनों के माध्यम से कहानी सुनाने की एक समृद्ध संस्कृति** है, जो जीवन के परिप्रेक्ष्य को दर्शाती है।
- ऐतिहासिक रूप से, भारत में खिलौने का अस्तित्व 5,000 वर्ष पुराना है। हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो के उत्खनन में पाए गए खिलौने और गुड़ियों में **छोटी गाड़िया, नर्तकी** आदि शामिल थीं।
    - कुछ पारंपरिक खिलौना निर्माण केंद्रों में **कर्नाटक में चन्नपटना, उत्तर प्रदेश में चित्रकूट, आंध्र प्रदेश में कोंडापल्ली** और **मध्य प्रदेश में बुदनी-रीवा** शामिल हैं।
- पेपर क्ले (कागज़ का पेस्ट बनाकर आकृतियां बनाना), काष्ठ, वनस्पति रंगों आदि जैसे प्राकृतिक उत्पादों से निर्मित होने के कारण **पारंपरिक खिलौने पर्यावरण के अनुकूल हैं।**
- **'वोकल फॉर लोकल' प्रचार-वाक्य और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत,** सरकार द्वारा इस क्षेत्र की क्षमता का दोहन करने के अवसर तलाशे जा रहे हैं।

नाम	राज्य	विवरण
चन्नपटना खिलौने	**कर्नाटक**	मैसूर के शासक टीपू सुल्तान ने 18वीं शताब्दी में फ़ारस से उपहार के रूप में प्राप्त एक रोगन-लेपित काष्ठ की कलाकृति से प्रभावित होकर, अपने राज्य के लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए भारत में फ़ारसी कारीगरों को आमंत्रित किया था।
किन्नाली खिलौने	**कर्नाटक**	ये काष्ठ निर्मित खिलौने हैं, जो अधिकतर हिंदू देवी-देवताओं को दर्शाते हैं।
कोंडापल्ली खिलौने	**आंध्र प्रदेश**	बोम्मल कोलुवु (दसरा गुड़िया) के नाम से भी ज्ञात ये खिलौने आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के कोंडापल्ली नामक स्थान पर बनाए जाते हैं। इन खिलौनों की शैली इस्लामी और राजस्थानी कला का मिश्रण है, जो अपनी यथार्थवादी अभिव्यक्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
एटीकॉप्पका खिलौने	**आंध्र प्रदेश**	एटीकॉप्पका खिलौने मुलायम काष्ठ और लाख (lacquer) के रंग से बने होते हैं। ये बीज, लाख, जड़ों और पत्तियों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों से रंगे जाते हैं। खिलौने बनाने के इस तरीके को **टर्न्ड वुड लैकर क्राफ्ट (turned wood lacquer craft)** के रूप में भी जाना जाता है।
निर्मल खिलौने	**तेलंगाना**	तेलंगाना के निर्मल खिलौनों की शैली अजंता पुष्पीय और मुगल लघु चित्रकला का एक सुंदर मिश्रण है।
तंजावुर गोलू गुड़िया	**तमिलनाडु**	तंजावुर नृत्य मुद्रा में गुड़िया, इन्हें पारंपरिक रूप से **तंजावुर थलयाटि बोम्मई** के रूप में जाना जाता है। ये तंजौर से सुंदर हस्तशिल्प की एक विशिष्ट विरासत का एक हिस्सा हैं।
लैफादिबी	**मणिपुर**	लैफादिबी या गुड़िया पुराने (प्रयोग किए जा चुके) वस्त्रों से बनाई जाने वाली भगवान की स्त्री प्रतिमा होती है। एक खेलने की वस्तु से लेकर अनुष्ठानों के अभिन्न हिस्से के रूप में प्रयुक्त होने वाली इन गुड़ियों को जीवित आत्माओं के रूप में माना जाता है। लोकप्रिय रूप से इन्हें लैफादिबी कहा जाता है।
अशारीकांदी टेराकोटा खिलौने	**असम**	ये हड़प्पा सभ्यता के टेराकोटा के समान हैं। ये असम के अशारीकांदी (मदैखाली) शिल्प ग्राम में बनते हैं, जो कि सबसे बड़ा समूह है। यहां टेराकोटा और मृद्भाण्ड शिल्प दोनों पाए जाते हैं तथा पारंपरिक तरीके से उपयोग किए जाते है।
अन्य पारंपरिक खिलौने		• **ओडिशा** के संबलपुर के खिलौने और कागज़ लुगदी तथा पत्थर के खिलौने; • **बिहार** की कन्यापुत्री गुड़िया और सिक्की कार्य; • **उत्तर प्रदेश** में वाराणसी के काष्ठ के खिलौने; • **पश्चिम बंगाल** की नतुनग्राम गुड़िया; • **तमिलनाडु** का चोप्पू सामान; • **गुजरात** का थिगडा ढिंगला; • **पंजाब** का छनकना (सीटी के साथ एक खिलौना), घुग्गू (बच्चों के लिए झुनझुना पेटी), लट्टू (शीर्ष से घूमने वाला), हंदवई (किचन सेट); • **महाराष्ट्र** का भातुकली लघु रसोई सेट और सावंतवाड़ी खिलौने।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI © Vision IAS

2.3. मध्य प्रदेश के वस्त्र शिल्प (Textiles of Madhya Pradesh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

ट्राइफेड (TRIFED) द्वारा मध्य प्रदेश के बड़वानी में स्थानीय जनजातियों हेतु सतत आजीविका सुनिश्चित करने के लिए **बाग, माहेश्वरी और चंदेरी वस्त्र शिल्प का प्रशिक्षण** दिया जा रहा है।

अन्य संबंधित तथ्य

- मध्य प्रदेश में बड़वानी अपनी सामाजिक-आर्थिक विकास की निम्नस्तरीय स्थिति के कारण एक **आकांक्षी जिला (aspirational district)** है।
- **बड़वानी** में कोई पारंपरिक शिल्प नहीं है। हालांकि, **खरगौन और धार** के आसपास के जिलों में जनजातीय शिल्पकार **बाग छपाई और माहेश्वरी शैली में वस्त्रों की पारंपरिक बुनाई** के कार्य में संलग्न हैं।

बाग छपाई के बारे में

- यह मध्य प्रदेश के धार जिले में प्रचलित प्राकृतिक रंगों वाली एक **पारंपरिक हस्त आधारित ब्लॉक प्रिंट (ठप्पा छपाई) कला है।**
- इसका **नाम बाग नदी के किनारे स्थित बाग़ गाँव** से लिया गया है।
- इस छपाई कला में **सूती और रेशमी वस्त्र** में **जंग लगे लोहे की भराई, फिटकरी एवं ऐलिज़रिन (जैविक लाल रंग) का मिश्रण** प्रयुक्त होता है।
- छपाई प्रक्रिया के पूर्ण होने पर, छपाई किए हुए वस्त्र बार-बार नदी के प्रवाहित जल में धोए जाते हैं तथा तत्पश्चात बेहतर चमक प्राप्त करने के लिए एक विशिष्ट अवधि हेतु धूप में सुखाए जाते हैं।
- सामान्यतया इस कला शैली में एक श्वेत पृष्ठभूमि पर **लाल और काले रंग के वनस्पति रंगों के साथ ज्यामितीय एवं पुष्पीय रचनाएं** निर्मित की जाती हैं।
- बाग छपाई को **वर्ष 2008 में भौगोलिक संकेतक** (Geographical Indication) टैग प्राप्त हुआ था।

माहेश्वरी वस्त्र शिल्प के बारे में

- माहेश्वरी वस्त्र **सूती और रेशमी कपड़े** होते हैं, जिन्हें **ज़री के साथ बुना** जाता है या ये बेल बूटेदार होते हैं। इनका उपयोग **मुख्य रूप से साड़ी बनाने** के लिए किया जाता है।
- माहेश्वरी साड़ी, मध्य प्रदेश के **खरगौन जिले के माहेश्वर (नर्मदा के तट पर स्थित)** से संबंधित है।
- मध्य प्रदेश में **किलों की भव्यता और उनके डिजाइनों** ने माहेश्वरी वस्त्रों पर **तकनीक, बुनाई और रूपांकनों** को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- इन लोकप्रिय डिजाइनों में से कुछ में **मैट पैटर्न (चटाई), जैस्मीन पैटर्न (चमेली), ब्रिक पैटर्न (ईंट) और डायमंड पैटर्न (हीरा)** शामिल हैं।
- महेश्वरी वस्त्र से बुनी गई **साड़ियों की 5 प्रमुख श्रेणियां** हैं। ये हैं - **चंद्रकला, बिंगानी चंद्रकला, चंद्ररता, बेली और परबी।** ये साड़ी **चमकदार और हल्के वजन** की होती हैं।
- माहेश्वरी साड़ियों को **होल्कर के शाही परिवार द्वारा संरक्षण** दिया गया था और कहा जाता है कि **रानी अहिल्या बाई होल्कर** स्वयं इनकी बुनाई करती थी।

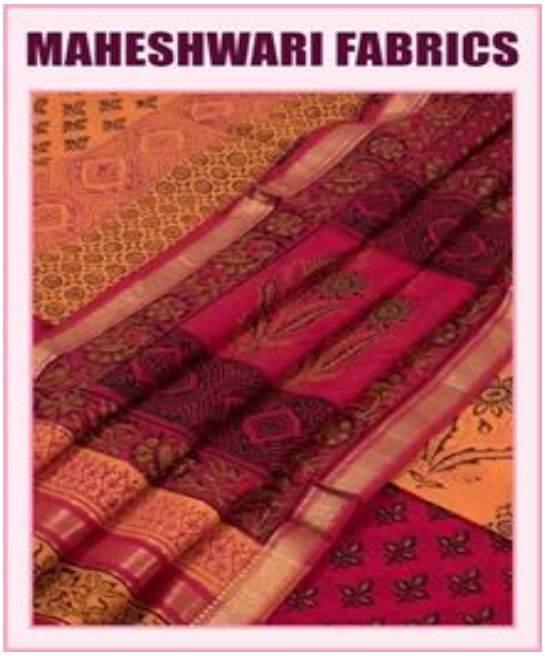

चंदेरी वस्त्र शिल्प के बारे में

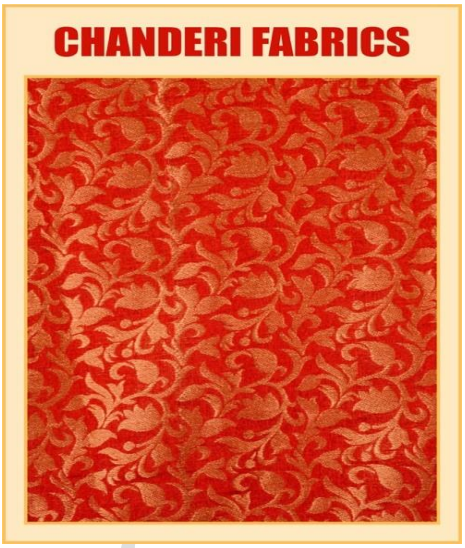

- यह एक **पारंपरिक व विशिष्ट सांस्कृतिक वस्त्र (ethnic fabric)** है, जो **वजन में हल्की, महीन बनावट और शानदार विलासिता युक्त अनुभव की विशेषता** से परिपूर्ण है।
- ये वस्त्र **पारंपरिक सूती धागे में रेशम और सुनहरी ज़री में बुनाई द्वारा निर्मित** होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप **झिलमिलाती बनावट का निर्माण** होता है।
- इस वस्त्र ने **मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर चंदेरी से अपना नाम** ग्रहण किया है। इसे **3 प्रकारों** में वर्गीकृत किया जा सकता है, यथा- **चंदेरी सिल्क कॉटन, प्योर सिल्क और चंदेरी कॉटन।**
- चंदेरी साड़ियों को **सिंधिया शाही परिवार द्वारा संरक्षण** प्रदान किया गया था।

© Vision IAS

संबंधित तथ्य

कोरवई बुनाई

- कोरवई **तमिलनाडु के कांचीपुरम** में प्रचलित बुनाई की एक प्राचीन व जटिल तकनीक है।
- **इस तकनीक में साड़ी के मुख्य भाग और बॉर्डर की एक ही करघे पर पृथक-पृथक रूप से बुनाई की जाती है।** तत्पश्चात दोनों को कौशलपूर्ण बुनाई द्वारा इंटरलॉक कर दिया जाता है।

ट्राइफेड अर्थात् भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (Tribal Cooperative Marketing Development Federation of India: TRIFED)

- इसकी स्थापना **वर्ष 1987 में सहकारी समिति अधिनियम, 1984** के तहत भारत सरकार द्वारा एक **राष्ट्रीय स्तर की सहकारी संस्था के रूप में** की गई थी।
- यह **जनजातीय कार्य मंत्रालय** के अंतर्गत आता है।
- ट्राइफेड को जनजातियों द्वारा एकत्रित व उत्पादित **लघु वनोपजों (Minor Forest Produce: MFP)** और **अधिशेष कृषि उत्पादों (Surplus Agricultural Produce: SAP)** के व्यापार को संस्थागत रूप प्रदान कर देश की प्रमुख जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु अधिदेशित किया गया है।
- यह **बाजार विकासकर्ता और सेवा प्रदाता दोनों की दोहरी भूमिका** निभाता है।
- **ट्राइब्स इंडिया (TRIBES India)** वह ब्रांड है, जिसके तहत जनजातीय लोगों के दस्तकारी उत्पाद विक्रय किए जाते हैं।
  - संपूर्ण देश में 120 भवन आधारित **ट्राइब्स इंडिया आउटलेट्स** हैं।

2.4. सुर्ख़ियों में रही अन्य कलाएं (Other Art forms in News)

कोल्लम चित्रकारी (Kollam Drawing)	• यह **फर्श पर ज्यामितीय प्रतिरूपों को चित्रित करने की एक पारंपरिक भारतीय कला शैली** है। • इन्हें घरों में **स्वास्थ्य और समृद्धि को आमंत्रित करने की अभिव्यक्ति के रूप** में चित्रित किया जाता है। • इसमें कच्चे माल के रूप में **चावल का आटा व दाल** जैसे खाद्य पदार्थ **और पत्तियां** प्रयुक्त होते हैं। • इस कलाकृति में कमल, मत्स्य, पक्षी आदि का रूपांकन किया जा सकता हैं जो **मनुष्य और जीव-जंतुओं के मध्य** एकता को अभिव्यक्त करता है। • अधिकांश कलाकृतियां **वृत्ताकार होती हैं, जो समय की अंतहीनता की भावना को** प्रदर्शित करती है। सूर्य, चंद्रमा और अन्य राशि चिन्ह भी इसके सामान्य विषय हैं।

वारली चित्रकारी, महाराष्ट्र (Warli Paintings, Maharashtra)	• यह महाराष्ट्र की **वारली जनजाति की दैनिक और सामाजिक घटनाओं को व्यक्त करती है।** यह चित्रकला **पौराणिक पात्रों या देवताओं की छवियों को चित्रित करने की बजाय** सामाजिक जीवन को चित्रित करती है।
	• इस चित्रकला में दैनिक जीवन के दृश्यों के साथ-साथ मनुष्य और जानवरों के चित्र भी बनाए जाते हैं जो बिना किसी योजना के, सरल शैली में चित्रित किए जाते हैं।
	  ○ इसके तहत बनाए गए चित्र **आखेट, नृत्य, बुवाई और कटाई** जैसी गतिविधियों में संलग्न मानव आकृतियों के दृश्यों को प्रदर्शित करते हैं।
	  ○ **कई बिंदुओं और छोटी-छोटी रेखाओं (डेश) को मिलाकर एक बड़ी रेखा बनाई जाती है।**
	• इन चित्रों का निर्माण **मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा** किया जाता है।

मधुबनी चित्रकारी, बिहार (Madhubani Painting, Bihar)	• मधुबनी या **मिथिला** चित्रकला **बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित एक लोक चित्रकला है।** • यह **स्थानीय रूपांकनों और चटकीले मिट्टी के रंगों के उपयोग के कारण लोकप्रिय** है। कलाकारों द्वारा तैयार किए गए खनिज रंजकों (मिनरल्स पिगमेंट्स) के माध्यम से इस चित्रकला को संपन्न किया जाता है। • **विषय-वस्तु:** हिंदू देवता, दरबारी दृश्य, विवाह के दृश्य, सामाजिक घटनाएं इत्यादि। • स्थान अंतरालों को भरने के लिए वनस्पतियों, जीवों व पक्षियों के रूपांकनों तथा ज्यामितीय डिज़ाइनों का प्रयोग किया जाता है।
रोगन चित्रकला, गुजरात (Rogan painting, Gujarat)	• यह 300 वर्ष प्राचीन शिल्प परंपरा है, जो कभी **गुजरात के कच्छ क्षेत्र में विकसित** हुई थी। • सभी रोगन शिल्पकलाएं बिना खाका (अर्थात् रूपरेखा या ब्लूप्रिंट) के निर्मित की जाती हैं। यह मूल रूप से **बड़े कैनवास पर धातु की एक छोटी छड़ से रंगकर्म करके निर्मित** की जाती है। • रोगन **वस्त्र पर चित्रकारी करने की तकनीक है**, जिसमें अरंडी के बीज के तेल से बने गाढ़े चमकीले पेंट जैसे पदार्थ का उपयोग किया जाता है। ○ रोगन एक **दर्पण कला** है; पेंट चिपचिपा होता है और दूसरे कपड़े में स्थानांतरित हो जाता है।
मोनपा हस्तनिर्मित कागज, अरुणाचल प्रदेश (Monpa Handmade Paper, Arunachal Pradesh)	• खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा **अरुणाचल प्रदेश के त्वांग में** 1,000 वर्ष प्राचीन विरासत कला को पुनर्जीवित करने के लिए **मोनपा हस्तनिर्मित कागज निर्माण इकाई** की शुरूआत की गई है। • मोनपा एक महीन बनावट वाला हस्तनिर्मित कागज है। इसे स्थानीय भाषा में **मोन शुगु (Mon Shugu)** कहा जाता है। यह तवांग में स्थानीय मोनपा जनजाति की जीवंत संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। • इस कागज की उत्पत्ति 1,000 वर्ष पहले हुई थी। इसका अत्यधिक ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है, क्योंकि इस कागज का उपयोग **बौद्ध मठों में धर्मग्रंथों एवं स्तुतिगान लिखने के लिए** किया जाता था। ○ मोनपा द्वारा इन कागजों को तिब्बत, भूटान, थाईलैंड और जापान जैसे देशों में विक्रय किया जाता था, क्योंकि उस समय इन देशों में कागज बनाने का कोई उद्योग मौजूद नहीं था। ○ हालांकि, धीरे-धीरे स्थानीय उद्योग में गिरावट शुरू हुई और चीनी कागज द्वारा स्वदेशी हस्तनिर्मित कागज को प्रतिस्थापित कर दिया गया। • मोनपा हस्तनिर्मित कागज, **शुगु शेंग (Shugu Sheng)** नामक **स्थानीय वृक्ष की छाल से** बनाया जाएगा, जिसमें कुछ औषधीय गुण भी होते हैं।

 © Vision IAS

पुलिक्कली या पुलिकली, केरल (Pulikkali, Kerala)	• पुलिक्कली (बाघ नृत्य) **केरल की लोककला का एक स्वरूप है।** इस वर्ष, यह कोविड-19 महामारी के कारण ऑनलाइन मनाया जाएगा। • **इसमें कलाकार अपने शरीर को बाघ की त्वचा की भांति पीली, लाल और काली धारियों से रंग लेते हैं** तथा पारंपरिक ढोल सदृश्य वाद्ययंत्रों, जैसे- तकिल व उडुक्क की लय पर नृत्य करते हैं। • पुलिक्कली की शुरुआत दो शताब्दी पूर्व कोचीन के पूर्व शासक **महाराजा राम वर्मा सकतन तमपुरन** द्वारा की गई थी।
ढोकरा कलाकृतियां, पश्चिम बंगाल (Dhokra Decorative Pieces, West Bengal)	• **ढोकरा कलाकृतियां**, धातु की मूर्तियां हैं। इन्हें **'लुप्त मोम ढलाई तकनीक'** (lost wax casting) का उपयोग करके **कांस्य और ताम्र मिश्र धातुओं** से निर्मित किया जाता है। ○ यह नाम **पश्चिम बंगाल के पारंपरिक धातुकर्मियों**, "ढोकरा डामर" जनजाति के नाम पर रखा गया है। • एक **सबसे प्राचीन ढोकरा कलाकृति मोहनजोदड़ो की 'नृत्यांगना' (dancing girl) है।**

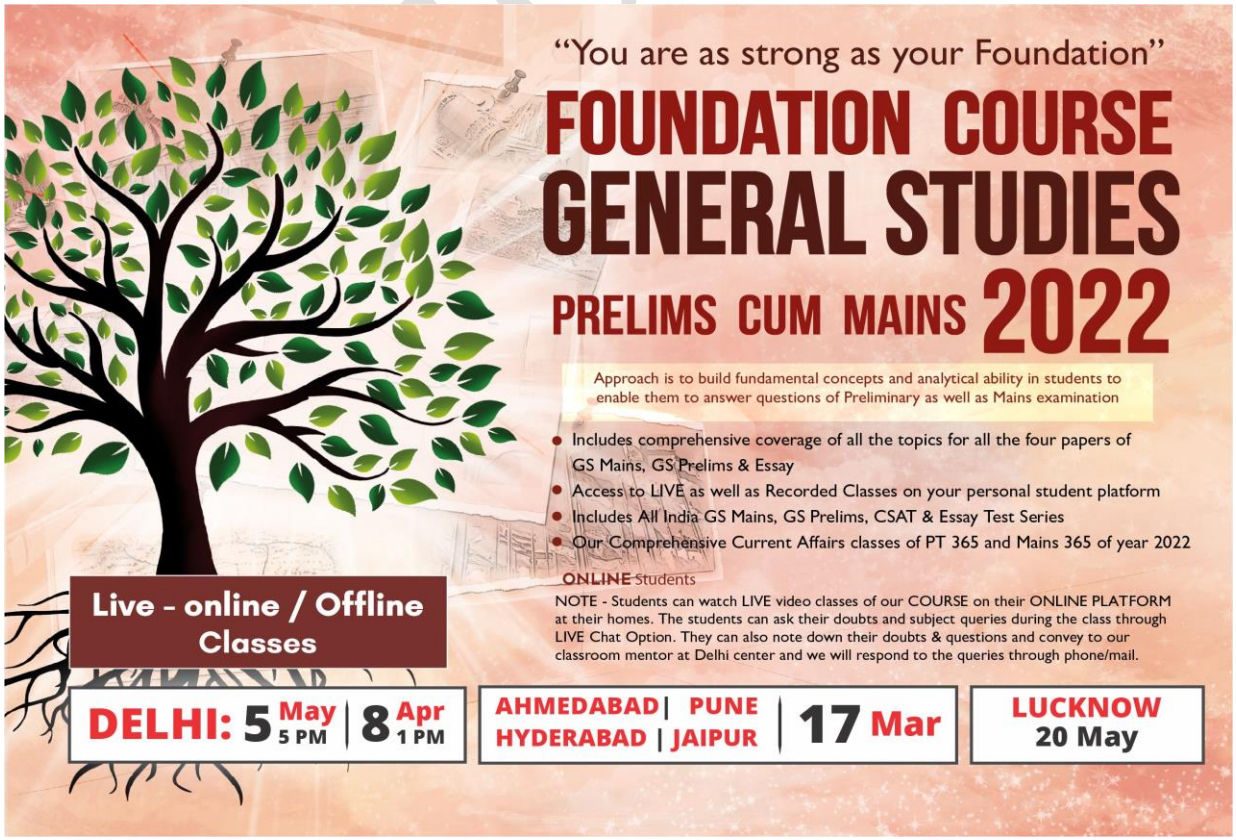

3. नृत्य और संगीत (Dances & Music)

3.1. खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2021 में स्वदेशी खेलों का समावेश (Inclusion of Indigenous Sports in Khelo India Youth Games 2021)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय ने चार स्वदेशी खेलों को **खेलो इंडिया यूथ गेम्स (KIYG) 2021** का हिस्सा बनने को स्वीकृति प्रदान की है। इन खेलों में शामिल हैं- **गतका, कलारीपयट्टु, थांग-टा और मल्लखंभ।** साथ ही, **योगासन** को भी अनुमोदन प्रदान किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- KIYG, **खेल के विकास के लिए संशोधित राष्ट्रीय कार्यक्रम 'खेलो इंडिया'** का एक हिस्सा है। इसे केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा वर्ष 2017 में अनुमोदित किया गया था।
- **खेलो इंडिया कार्यक्रम,** देश में खेले जाने वाले सभी खेलों के लिए एक मजबूत ढांचा बनाकर और एक महान खेल राष्ट्र के रूप में भारत की स्थापना के लिए **खेल संस्कृति को ज़मीनी स्तर पर पुनर्जीवित करने** हेतु प्रारंभ किया गया है।

भारत की अन्य मार्शल आर्ट्स

- **तमिलनाडु:** सिलंबम और कुट्टू वरिसई;
- **मणिपुर:** सरित सरक;
- **हिमाचल प्रदेश:** ठोडा;
- **बंगाल:** लाठी खेला;
- **महाराष्ट्र:** मर्दानी खेल; तथा
- **जम्मू और कश्मीर:** स्क्वे (Squay)

अन्य तथ्य

एक प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में योगासन

- **आयुष मंत्रालय** तथा **युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय** ने **योगासन को** एक **प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में औपचारिक मान्यता** प्रदान करने की घोषणा की है।
- इससे **एथलीटों और अधिकारियों को लाभ पहुंचाने के लिए नई तकनीकों एवं नई रणनीतियों का खेलों में प्रवेश** सुनिश्चित होगा।
- यह **योग को प्रोत्साहित** करेगा, इसके लाभ के बारे में जागरूकता का प्रसार करेगा और लोगों के शारीरिक एवं मानसिक कल्याण में सुधार करने में मदद करेगा।
- योगासन, योग का एक अभिन्न और महत्वपूर्ण घटक है।
- प्रस्तावित प्रतिस्पर्धाओं में **पारंपरिक योगासन, कलात्मक योगासन (एकल), कलात्मक योगासन (युग्म में) लयबद्ध योगासन (युग्म में)** आदि शामिल हैं।

चार स्वदेशी खेल

कल्लारिपयट्टू (Kallaripayattu)	• यह **केरल** की एक **मार्शल आर्ट शैली** है। • कल्लारिपयट्टू में विभिन्न तकनीकों, जैसे- **मिपयट्टू** (शरीर का शारीरिक व्यायाम), **वाड़िपयट्टु** (लाठी का उपयोग करके लड़ाई), **वेलपयट्टू** (तलवारों का उपयोग करके लड़ाई) और **वेरुमकाई-प्रयोगम** (मल्लयुद्ध) का उपयोग किया जाता है। • **कल्लारिपयट्टू स्वदेशी औषधीय प्रथाओं में विशेषज्ञता पर भी ध्यान केंद्रित करती है।** ○ **कलारी उपचार (चिकित्सा की एक प्रणाली) इसके पाठ्यक्रम का एक भाग है।**

PT 365 - संस्कृति

 © Vision IAS

मल्लखंभ (Mallakhamb)	• यह **मध्य प्रदेश का राजकीय खेल** है। • यह भारत का एक पारंपरिक खेल है। इसमें पहलवान एक काष्ठ के स्तंभ या लटकते हुए रस्से पर योग व कुश्ती के दावपेंचों का हवाई प्रदर्शन करते हैं। ○ **मल्लखंभ** विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे- **बेंत पर मल्लखंभ, निराधार (सहारे के बिना) मल्लखंभ, स्तंभ मल्लखंभ, लटकता हुआ मल्लखंभ और रस्सी मल्लखंभ।** • **मल्लखंभ** की उत्पत्ति 12वीं शताब्दी में हुई प्रतीत होती है। 1135 ई. में चालुक्य शासक सोमेश्वर तृतीय द्वारा रचित एक ग्रंथ "**मानसोल्लास**" में इसका उल्लेख किया गया है। यह महाराष्ट्र में भी लोकप्रिय है।
गतका (Gatka)	• यह काष्ठ की **छड़ी का प्रयोग कर लड़ने की एक शैली है। इसकी उत्पत्ति 15वीं शताब्दी में पंजाब में हुई थी।** • यह दो या दो से अधिक **कलाकारों के बीच छड़ी से लड़ी जाने वाली लड़ाई** है। काष्ठ की छड़ियों को **सोटी** कहा जाता है जो तलवारों की भांति प्रयोग की जाती हैं।
थांग टा	• यह एक **मणिपुरी मार्शल आर्ट** है, जिसे तलवार और भाला चलाने की कला भी कहा जाता है। • यह **युद्ध कौशल** के प्रदर्शन और **देव आराधना** के प्रति समर्पित होती है। • इसमें **श्वास लेने के तरीके, ध्यान और अनुष्ठानों** जैसे शारीरिक नियंत्रण के आंतरिक अभ्यास के साथ, **तलवार, भाला, खंजर** आदि जैसे विभिन्न बाहरी शस्त्रों का समेकित उपयोग किया जाता है।

3.2. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

भवाई (Bhavai)	• यह **सौराष्ट्र और उत्तरी गुजरात** के गांवों में आयोजित की जाने वाली एक **पारंपरिक नुक्कड़ नाटक** (street play) शैली है। • यह एक अनूठी **मंच कला (stage art)** शैली है, जिसे **'भव' के साथ** संपन्न किया जाता है, जिसका तात्पर्य **भावनाओं को प्रकट करना होता** है। • यह विशेष रूप से विभिन्न वेशभूषा और चारित्रिक भूमिकाओं में **पुरुष सदस्यों द्वारा प्रदर्शित किया जाता**

	है। • यह मुख्य रूप से **तरगला समुदाय** (Targala community) द्वारा आयोजित किया जाता है, जिसे **भवाया** (Bhavaya) भी कहा जाता है। इस समुदाय के लोग हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों से संबंधित हैं।
गुजरात का लोकनृत्य गरबा (Garba -folk dance of Gujarat)	• शब्द **"गरबो"** संस्कृत शब्द **"गर्भदीप"** से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है **गोलाकार छिद्र वाला एक मिट्टी का पात्र।** • यह नवरात्रि और वैवाहिक समारोहों के दौरान **"शक्ति" की पूजा** से संबंधित है। • इसमें एक **दीपक (गरबा दीप)** या देवी दुर्गा की एक प्रतिमा को केन्द्रीय वृत्त में रखा जाता है। • इसमें लोग **ढोल की थाप पर** अपने हाथों से ताली बजाते हुए केंद्र के आसपास नृत्य करते हैं।
यक्षगान, कर्नाटक (Yakshagana, Karnataka)	• कर्नाटक का पारंपरिक नाट्य रूप यक्षगान मिथकीय कथाओं तथा पुराणों पर आधारित है। इसके प्रमुख लोकप्रिय वृत्तांत (एपिसोड) महाभारत और रामायण से लिये गए हैं। • इसमें एक विशिष्ट शैली और रूप में नृत्य, संगीत, संवाद, परिधान, श्रृंगार तथा मंच संबंधी निपुणताओं को संयोजित किया जाता है। • यक्ष का अर्थ उप अथवा गौण देवता तथा गान का अर्थ गीत होता है। • यह माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति 11वीं और 15वीं शताब्दी के मध्य भक्ति आंदोलन के दौरान हुई थी।

© Vision IAS

4. भाषा और साहित्य (Languages and Literature)

4.1. प्रबुद्ध भारत पत्रिका (Prabuddha Bharat Journal)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रबुद्ध भारत पत्रिका ने अपनी 125वीं वर्षगांठ मनाई।

प्रबुद्ध भारत के बारे में

- **प्रबुद्ध भारत (Awakened India),** रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित एक अंग्रेजी भाषा की मासिक पत्रिका है।
- **स्वामी विवेकानंद** के अनुदेश पर प्रबुद्ध भारत की स्थापना **मद्रास** (अब चेन्नई) में वर्ष 1896 में **पी. अयासमी, बी. आर. राजम अय्यर, जी. जी. नरसिम्हाचार्य और बी. वी. कामेश्वर अय्यर** द्वारा की गई थी।
- यह देश की **"सबसे लंबे समय से प्रचलित" मासिक अंग्रेजी पत्रिका** है।
- यह ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विज्ञान विषयों को शामिल करते हुए सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी पर लेख प्रकाशित करती है।
- नेताजी सुभाष चंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, सिस्टर निवेदिता, श्री अरबिंदो, सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदि जैसे साहित्यकारों के लेख इस पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं।
- **रामकृष्ण मिशन के अन्य प्रकाशन:**
  - **उदबोधन: यह बंगाली मासिक पत्रिका है।** यह जनवरी 1899 में **स्वामी विवेकानंद** द्वारा आरंभ की गई थी।
  - **वेदांत केसरी** अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पत्रिका है। इसकी शुरुआत वर्ष 1914 में हुई थी।
  - **श्री रामकृष्ण विजयम:** यह **तमिल** मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन वर्ष 1921 में प्रारंभ हुआ था।

रामकृष्ण मिशन के बारे में

- रामकृष्ण मिशन की स्थापना कलकत्ता (अब कोलकाता) में स्वामी विवेकानंद द्वारा वर्ष 1897 में **दोहरे उद्देश्य** से की गई थी:
  - हिंदू संत रामकृष्ण (वर्ष 1836-86) के जीवन में सन्निहित वेदांत की शिक्षाओं का प्रचार करना; और
  - भारतीय लोगों की सामाजिक स्थितियों में सुधार करना।
- यह एक **परोपकारी और स्वयंसेवी संगठन** है।
- मिशन का आदर्श वाक्य **'आत्मनो मोक्षार्थं जगद् हिताय च'** है। इसका आशय **'अपने मोक्ष और संसार के हित के लिए'** है। इसका प्रतिपादन स्वामी विवेकानंद ने किया था।
- यह संगठन **तीन मुख्य आदर्शों** पर आधारित है, यथा- **आराधना, आत्मा की संभावित दिव्यता और धर्मों के सामंजस्य के रूप में कार्य करना।**

4.2. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

मंगोलियाई कंजुर (Mongolian Kanjur)	• संस्कृति मंत्रालय ने **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन** (National Mission for Manuscripts: NMM) के तहत **मंगोलियाई कंजुर के 108 वॉल्यूम (अंकों) के पुनर्मुद्रण** हेतु एक परियोजना आरंभ की है। • मंगोलियाई कंजुर वस्तुतः **बौद्ध धर्म से संबंधित एक ग्रंथ (Buddhist canonical text)** है। मंगोलियाई बौद्धों द्वारा इसका काफी सम्मान किया जाता है तथा वे मंदिरों में कंजुर की पूजा (अर्थात् कंजुर की पंक्तियों का पाठ) करते हैं। ○ मंगोलियाई कंजुर मंगोलिया को एक सांस्कृतिक पहचान उपलब्ध कराने का भी स्रोत है। • भारत सरकार के **पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय** द्वारा फरवरी 2003 में राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन का शुभारंभ गया था। इसे पांडुलिपियों में संरक्षित ज्ञान के दस्तावेजीकरण, संरक्षण एवं प्रसार करने का अधिदेश प्राप्त है।
तांगम (Thangam)	• यह **तिब्बत-बर्मा भाषा परिवार** (Tibeto-Burman language family) से संबंधित एक मौखिक भाषा (बोली) है। ○ यह **अरुणाचल प्रदेश के तांगम समुदाय** द्वारा बोली जाती है। • इसे **यूनेस्को के वर्ल्ड एटलस ऑफ़ इंडेंजर्ड लैंग्वेज** (UNESCO World Atlas of Endangered Languages) के तहत क्रिटिक्ली इंडेंजर्ड भाषा की श्रेणी में रखा गया है।

	• **संकटग्रस्त भाषा:** ○ **भारत में लगभग 197 भाषाएं खतरे (endangerment) के विभिन्न चरणों में** हैं, जो विश्व के किसी भी देश से सर्वाधिक है। ○ यूनेस्को (UNESCO) के अनुसार, 10,000 से कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली कोई भी भाषा **संभावित रूप से लुप्तप्राय (potentially endangered)** होती है। ▪ वे भाषाएं **गंभीर रूप से लुप्तप्राय भाषाएं (Critically endangered languages)** हैं, जो केवल किसी समुदाय के **पितामह-मातामही अथवा वृद्धजनों** द्वारा ही बोली जाती हैं। ○ भारत में, 1971 की जनगणना के पश्चात्, 10,000 से कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली किसी भी भाषा को **आधिकारिक सूची में शामिल नहीं** किया गया है। ○ **लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए उठाए गए कदम:** ▪ **लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए योजना (Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages),** के तहत देश की **लुप्त हो चुकी या निकट भविष्य में लुप्त होने की संभावना से ग्रस्त भाषाओं** को प्रलेखित और संग्रहित (archive) किया जाता है। ▪ सरकार द्वारा नौ केंद्रीय विश्वविद्यालयों में **लुप्तप्राय भाषाओं हेतु केंद्र स्थापित करने** के लिए निधि उपलब्ध करवाई जाती है।
बख्शाली पांडुलिपि (Bakhshali manuscript)	• ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा बख्शाली पांडुलिपि पर मुद्रित **एक काले बिंदु को शून्य हेतु गणितीय प्रतीक के प्रयोग के प्रथम रिकॉर्ड के रूप अभिनिर्धारित किया गया है।** ○ **भारत में ग्वालियर के एक मंदिर की एक दीवार पर नौवीं शताब्दी के शिलालेख को** शून्य के प्रयोग का शुरूआती उदाहरण माना जाता था। • बख्शाली पांडुलिपि एक तीसरी शताब्दी की **भारतीय गणितीय पांडुलिपि** है, जो **बर्च (सनौबर के वृक्ष) की छाल पर स्याही से लिखी** गई है। • यह 1881 ईस्वी में पेशावर, पाकिस्तान के निकट बख्शाली गांव के आसपास के क्षेत्र में पाई गई थी। • **शून्य** का उपयोग **लीलावती** में भी किया गया है। लीलावती की रचना खगोल विज्ञानी और गणितज्ञ **भास्कराचार्य (भास्कर द्वितीय)** द्वारा की गई थी।
दिल्ली सरकार ने कोंकणी भाषा अकादमी स्थापित करने को स्वीकृति प्रदान की (Delhi govt nod to set up Konkani language academy)	• कोंकणी एक **हिंद-यूरोपीय भाषा** है। यह गोवा (राज्य भाषा) और महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा केरल के तटीय क्षेत्रों में बोली जाती है। • यह पाँच लिपियों यथा **रोमन, नागरी, कन्नड़, फारसी-अरबी और मलयालम** में लिखी जाती है। • इसे **वर्ष 1992 में मणिपुरी और नेपाली भाषा के साथ संविधान की 8वीं अनुसूची में** शामिल किया गया था। ○ **8वीं अनुसूची में शामिल अन्य भाषाएं हैं:** असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी। • भारत में हिन्द-यूरोपीय भाषा बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक (देश की कुल आबादी का लगभग 73%) है।

 © Vision IAS

	• इसमें उत्तरी और पश्चिमी भारत की सभी प्रमुख भाषाएं शामिल हैं- हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, असमिया, उड़िया, पहाड़ी (गढ़वाली आदि), भोजपुरी, कश्मीरी, उर्दू तथा संस्कृत।
विश्व उर्दू सम्मेलन (World Urdu Conference)	• इसका आयोजन **राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद** (National Council for Promotion of Urdu Language: NCPUL) द्वारा किया जा रहा है। • NCPUL भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के **उच्चतर शिक्षा विभाग** के तहत एक स्वायत्त निकाय है। ○ इस परिषद को **उर्दू भाषा को बढ़ावा देने, विकसित करने और प्रचारित करने के लिए स्थापित किया गया था।** • उर्दू **भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध भाषाओं** में से एक है।

5. यूनेस्को की पहलें (Initiatives of UNESCO)

5.1. यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची {UNESCO's World Heritage Cities (WHC) List}

सुर्ख़ियों में क्यों?

मध्य प्रदेश के ग्वालियर और ओरछा शहर को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल (World heritage cities: WHC) सूची में शामिल किया गया है।

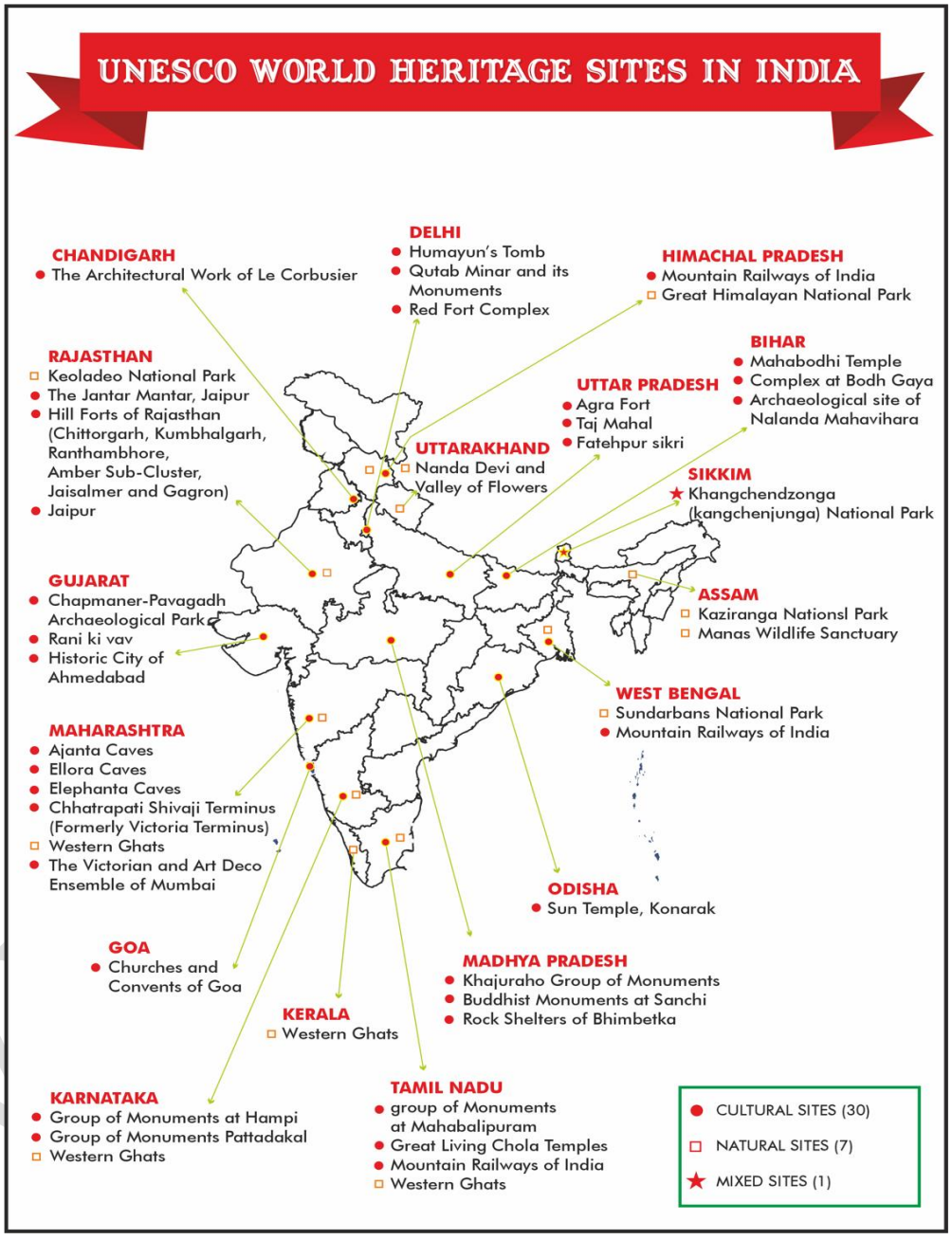

विवरण

- इन दोनों स्थलों को **यूनेस्को (UNESCO) के अर्बन लैंडस्केप सिटी प्रोग्राम के अंतर्गत शामिल किया गया है।** इससे पूर्व भारत के 38 स्थलों को विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया जा चुका है। इनमें 30 सांस्कृतिक स्थल/स्मारक, 7 प्राकृतिक स्थल और 1 मिश्रित स्थल (बॉक्स देखें) के रूप में शामिल हैं।
- ऐतिहासिक शहरी भू-दृश्य दृष्टिकोण अपने सभी मूर्त और अमूर्त गुणों के साथ **संपूर्ण मानव पर्यावरण पर केंद्रित है और भौतिक पर्यावरण के संरक्षण से आगे तक की अवधारणा तक विस्तृत है।**
  - यह संरक्षण प्रयासों में **अधिक लोगों को शामिल करने, जागरूकता के स्तर में वृद्धि करने और अभिनव योजनाओं की खोज करने पर केंद्रित है।**
- ग्वालियर की स्थापना **9वीं शताब्दी** में की गई थी। इसे गुर्जर प्रतिहार राजवंश, तोमर, बघेल कछवाहो और सिंधिया द्वारा शासित किया गया था।
  - **यह शहर अपने महलों और मंदिरों के लिए विख्यात है,** जिसमें सास बहू का मंदिर भी शामिल है।
- **ओरछा मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है।** 16वीं शताब्दी में यह पूर्ववर्ती बुंदेला राजवंश का राजधानी शहर था।
  - **इस शहर में प्रसिद्ध स्मारक** जहाँगीर महल, रामराजा मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि हैं।

© Vision IAS

- **WHC सूची में शामिल किए जाने के लाभ:**
  - **ऐतिहासिक स्मारकों का रासायनिक उपचार किया जाएगा,** ताकि उन पर उत्कीर्ण कला स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो सके।
  - **यूनेस्को इन स्थलों/स्मारकों के विकास के लिए सर्वोत्तम उपाय और संसाधन सुझाएगा।**

5.2. स्ट्रीट हॉकर संस्कृति (Street Hawker Culture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, सिंगापुर की लोकप्रिय और जीवंत स्ट्रीट हॉकर संस्कृति को यूनेस्को द्वारा एक **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage: ICH)** के रूप में नामित किया गया है।

विवरण

- 'प्रथाएं, प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति, ज्ञान, कौशल और साथ ही उपकरण, वस्तुएं, कलाकृतियां तथा संबद्ध सांस्कृतिक स्थल; जिन्हें समुदाय, समूह और कुछ मामलों में, व्यक्ति जो अपनी सांस्कृतिक विरासत के हिस्से के रूप में चिन्हित किए जाते हैं' को **'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत'** के रूप में संदर्भित किया जाता है। **अमूर्त विरासत के उदाहरणों में शामिल** हैं: मौखिक परंपराएं, प्रदर्शन कला, स्थानीय ज्ञान और पारंपरिक कौशल।
- किसी समाज में भौतिक कलाकृतियों के सृजन, प्रबंधन या संरक्षण और पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेषित करने की प्रक्रिया को **'मूर्त सांस्कृतिक विरासत'** के रूप में संदर्भित किया जाता है। इसमें कलात्मक रचनाएं, निर्मित धरोहरें, जैसे- भवन एवं स्मारक और मानव रचनात्मकता के अन्य भौतिक या मूर्त उत्पाद शामिल किए गए हैं, जिन्हें किसी समाज में सांस्कृतिक महत्व के साथ निवेशित किया जाता है।
- हॉकर केंद्र **सिंगापुर के बहुसंस्कृतिवाद के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं,** जो चीनी, मलय, भारतीय मूल के वहनीय और स्वादिष्ट भोजन का विक्रय करते हैं।
- सिंगापुर सरकार द्वारा अपनी **राष्ट्रीय पर्यावरण एजेंसी** के माध्यम से हॉकर संस्कृति को जीवित रखने के लिए विभिन्न प्रयासों को लागू किया गया है।
- सिंगापुर द्वारा अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त **इनक्यूबेशन स्टॉल प्रोग्राम** और **हॉकर्स डेवलपमेंट प्रोग्राम** को भी स्थापित किया गया है, ताकि इच्छुक लोगों और मौजूदा स्ट्रीट हॉकर्स को संबंधित कौशल से युक्त किया जा सके।

यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची में सूचीबद्ध भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें	
केरल	
मुडियेट्टु	• यह **देवी काली और दारिक** नामक एक दुष्ट राजा के बीच संघर्ष की पौराणिक कथा पर आधारित **केरल** का पारंपरिक रंगमंच है।
कुटियाट्टम	• यह एक **संस्कृत रंगमंच** है और भारत की सबसे पुरानी जीवंत नाट्य परंपराओं में से एक है।
लद्दाख	
लद्दाख का बौद्ध जप	• भारत में लद्दाख के ट्रांस-हिमालय क्षेत्र में **विभिन्न मठों में रहने वाले और बौद्ध धर्म के विभिन्न संप्रदायों का अनुसरण करने वाले भिक्षुओं द्वारा** प्रतिदिन प्राचीन पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ किया जाता है।
मणिपुर	
संकीर्तन	• यह **मणिपुरी उपासना पद्धति** की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

पंजाब	
जंडियाला गुरु के ठठेरे	• जंडियाला गुरु के ठठेरों की शिल्पकला, **पंजाब में पीतल और तांबे के बर्तनों का विनिर्माण करने की पारंपरिक तकनीक** का प्रतिनिधित्व करती है।
राजस्थान	
कालबेलिया	• कालबेलिया नृत्य, **संपरों के रूप में कालबेलिया समुदाय की जीवनशैली** की अभिव्यक्ति है।
उत्तराखंड	
रम्मन	• यह **पारंपरिक आनुष्ठानिक रंगमंच** की एक शैली है। यह प्रति वर्ष चमोली जिले, उत्तराखंड के **भूमियाल देवता के मंदिर** के प्रांगण में आयोजित किया जाता है।
रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	• यह कई **दृश्यों की श्रृंखला** में रामायण महाकाव्य का प्रदर्शन है, जिसमें **गायन, कथा वाचन, वादन और संवाद** शामिल होते हैं। • प्रत्येक वर्ष शरद ऋतु में पारंपरिक हिन्दू पंचांग के अनुसार आयोजित किए जाने वाले दशहरे के त्यौहार के दौरान, संपूर्ण उत्तर भारत में इसका प्रदर्शन किया जाता है।
भारत में अन्य सर्व-सामान्य तत्व	
नौरोज	• **पारसी जोरोस्ट्रियन और ईरानी जोरोस्ट्रियन** के संपूर्ण समुदाय का त्योहार है।
वैदिक मंत्रोच्चारण	• वेदों में 3,500 वर्ष पूर्व आर्यों द्वारा विकसित तथा रचित **संस्कृत कविता, दार्शनिक संवाद, मिथकों और अनुष्ठानिक मंत्रों** का विशाल कोष समाहित है। • हिंदुओं द्वारा **वेदों को ज्ञान का प्रथम स्रोत और अपने धर्म का पवित्र मूलाधार** माना जाता है। वेद विश्व की सबसे पुरानी जीवित सांस्कृतिक परंपराओं में से एक हैं।
कुंभ मेला	• यह **सामान्यतया हिंदू तीर्थयात्रियों का, वृहद पैमाने पर होने वाला एक सामूहिक संगम** है। इसमें लोग पवित्र नदी में स्नान करने / डुबकी लगाने के लिए एकत्रित होते हैं। • इसे **विश्व का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण मेला** माना जाता है। • यह प्रत्येक **12 वर्ष में चार बार मनाया जाता है** और प्रत्येक चार वर्ष में इसका आयोजन स्थल बारी-बारी से चार पवित्र नदियों के तट पर स्थित चार तीर्थ स्थान होते हैं। ये स्थान हैं- **इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), हरिद्वार (उत्तराखंड), उज्जैन (मध्य प्रदेश) और नासिक (महाराष्ट्र)।** • **अर्द्ध ("आधा") कुंभ मेला** केवल दो स्थानों, यथा- **हरिद्वार और इलाहाबाद** में, प्रत्येक छह वर्षों में आयोजित किया जाता है। • **महाकुंभ** प्रत्येक 144 वर्षों के उपरांत आयोजित किया जाता है। • **उज्जैन** में, **कुंभ मेला (सिंहस्थ कुंभ),** बृहस्पति की स्थिति सिंह राशि में स्थित होने पर, प्रत्येक 12 वर्षों में आयोजित किया जाता है।
छऊ नृत्य	• यह **पूर्वी भारत** की प्रमुख नृत्य परंपरा है। • छऊ के तीन विशिष्ट रूप रहे हैं- **झारखंड का सरायकेला छऊ, ओडिशा का मयूरभंज छऊ और पश्चिम बंगाल का पुरूलिया छऊ।** • इसमें नाटक के पात्रों की पहचान करने के लिए **मुखौटों का उपयोग किया जाता है** और यह स्वदेशी नृत्य शैलियों तथा **युद्धप्रिय प्रथाओं** से विकसित हुआ है।

© Vision IAS

	• नर्तक विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन करते हैं, जिनमें विभिन्न विषय समाहित होते हैं: जैसे स्थानीय किंवदंतियाँ, लोककथाएं और **रामायण / महाभारत जैसे महाकाव्यों के सार प्रसंग** और सार विषय। • छऊ नृत्य, क्षेत्रीय त्योहारों विशेष रूप से **वसंत उत्सव चैत्र पर्व** से घनिष्ठ रूप से संबद्ध है। • इसमें नृत्य **ढोल और मरुई** जैसे वाद्ययंत्रों के तीव्र वादन के साथ किया जाता है।
योग	• यह देह, मन और आत्मा के सर्वांगीण एकीकरण पर केंद्रित व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक कल्याण की पारंपरिक एवं अतिप्राचीन भारतीय पूर्णतावादी प्रणाली है।

6. त्यौहार (Festivals)

ओडिशा	
रज पर्व उत्सव (Raja Parba festival)	• यह ओडिशा में तीन दिनों तक मनाया जाने वाला एक अद्वितीय उत्सव है। **मानसून के आगमन और पृथ्वी के वुमनहुड (नारीत्व) की शुरुआत** के उपलक्ष्य में इसे मनाया जाता है। • पृथ्वी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए इसके रजोधर्म के दौरान, तीन दिनों के लिए जुताई, बुवाई जैसे सभी कृषि कार्य स्थगित कर दिए जाते हैं।
नुआखाई जुहार (Nuakhai Juhar)	• यह मौसम की **नई फसल का स्वागत करने के लिए कृषि से संबंधित एक त्यौहार** है। • इसे **नुआखाई परब** या **नुआखाई भेटघाट** भी कहा जाता है। यह **ओडिशा, छत्तीसगढ़ और इनके पड़ोसी राज्यों** के कुछ क्षेत्रों में मनाया जाता है। • नुआखाई **दो शब्दों का एक संयोजन** है, जो नव चावल के सेवन का संकेत देता है, अर्थात् 'नुआ' का अर्थ है नया और 'खाई ' से तात्पर्य है खाना।
भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा (Lord Jagannath Rath Yatra)	• **यह रथयात्रा भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और छोटी बहन सुभद्रा के वार्षिक आनुष्ठानिक शोभायात्रा का प्रतीक** है। इस रथयात्रा के दौरान उन्हें रथ में बैठाकर उनके घर के मंदिर से दूसरे मंदिर में ले जाया जाता है, जिसे उनकी मौसी का घर माना जाता है। • **11वीं शताब्दी में पूर्वी गंग वंश के एक शासक अनंतवर्मन चोडगंग** ने जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कराया था।
चैत्र जात्रा (Chaitra Jatra)	• इसे ओडिशा के तारा तारिणी पहाड़ी मंदिर में मनाया जाता है। • यह मंदिर **रुशिकुल्या नदी** के तट पर एक पहाड़ी पर स्थित है। • यह शक्ति पूजा का एक प्रमुख केंद्र है।
बिष्णु सेंदरा पर्व (Bishnu Sendra Parva)	• यह झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के जनजातियों द्वारा मनाया जाने वाला एक वार्षिक शिकार उत्सव है। • ऐसी सूचना मिली है कि पहली बार झारखंड में बिष्णु सेंदरा पर्व के दौरान एक भी जानवर की हत्या नहीं की गयी।
केरल	
त्रिशूर पूरम (Thrissur Pooram)	• त्रिशूर पूरम **केरल** के **सबसे बड़े मंदिर उत्सवों में से एक** है तथा यह परंपरा प्राचीन समय से (200 वर्ष से अधिक) चली आ रही है। • यह फसल कटाई के उपरांत मनाया जाने वाला त्यौहार है। यह त्यौहार त्रिशूर में **मलयाली महीने 'मेडम' (अप्रैल/मई) में आयोजित** किया जाता है। • इस समारोह की शुरुआत कोच्चि के पूर्व शासक **सक्थान थामपुरन** द्वारा की गई थी। • इस त्यौहार संबंधी कार्यक्रम त्रिशूर में स्थित **वडकुनाथन मंदिर** में आयोजित किए जाते हैं।
थंबी महोत्सवम 2020 (Thumbimahotsavam 2020)	• केरल में प्रथम बार **राजकीय ड्रैगनफ्लाई महोत्सव (State Dragonfly Festival)** का आयोजन किया जा रहा है। ○ **पंतालू** (Pantalu) इस महोत्सव का आधिकारिक शुभंकर (मैस्कॉट) है। • यह राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) और आई.यू.सी.एन.-सी.ई.सी. (IUCN-CEC) के सहयोग से डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. इंडिया (WWF India), बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी तथा इंडियन ड्रैगनफ्लाई सोसाइटी द्वारा आयोजित **राष्ट्रीय ड्रैगनफ्लाई महोत्सव** का भाग है। • ड्रैगनफ्लाई और डैम्ज़ल्फ्लाइ (ड्रैगनफ्लाई की एक प्रजाति) द्वारा पर्यावरण में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिकाओं के विषय में लोगों को शिक्षित करने व जानकारी प्रदान करने हेतु

© Vision IAS

	वर्ष 2018 में ड्रैगनफ्लाई महोत्सव का शुभारंभ किया गया था।
मलयालम नव वर्ष (Malayalam New Year)	• मलयालम पंचांग में **चिंगम माह** (Chingam month) के पहले दिन को नव वर्ष के प्रथम दिन के रूप में मनाया जाता है। • इसे **पुथुवार्षम** (Puthuvarsham) के नाम से भी जाना जाता है।
मकरविलाक्कू त्यौहार (Makaravilakku festival)	• मकरविलाक्कू त्यौहार सबरीमाला में आरम्भ होने वाला है। • यह **मकर संक्रांति पर सबरीमाला मंदिर (केरल) में आयोजित किया जाने वाला एक वार्षिक उत्सव है।** • त्यौहार में त्रिरुवाभरणम (भगवान अयप्पा के पवित्र आभूषण) शोभायात्रा और सबरीमाला के पहाड़ी मंदिर में जाने के लिए एक मंडली शामिल होती है।
असम	
अम्बुबाची मेला (Ambubachi Mela)	• यह ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित नीलाचल पहाड़ियों (गुवाहाटी, असम) के शीर्ष पर स्थित **कामाख्या मंदिर में आयोजित किया जाने वाला एक वार्षिक उत्सव** है। • देवी कामाख्या की **जननक्षमता की देवी** के रूप में पूजा की जाती है। • कामाख्या मंदिर, शाक्त (शक्ति) मत की हिंदू परंपरा में महत्वपूर्ण तीर्थस्थल माने जाने वाले **51 शक्तिपीठों में से एक** है। ये शक्तिपीठ **भारत, बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, चीन और श्रीलंका** में स्थित हैं।
गुजरात	
अषाढ़ी बीज़ (Ashadhi Bij)	• यह **गुजरात के कच्छ क्षेत्र** में आयोजित किया जाता है, जो वर्षा के आगमन के उपलक्ष्य में एक उत्सव के आयोजन से संबंधित है। • **कच्छी समुदाय के लोग अपना नववर्ष अषाढ़ी बीज़ पर** मनाते हैं।
नागालैंड	
हॉर्नबिल फेस्टिवल	• यह नागालैंड की **देशज योद्धा जनजातियों के सबसे बड़े समारोहों में से एक** है। इसे **प्रत्येक वर्ष दिसंबर के प्रथम सप्ताह** में मनाया जाता है। • इस त्यौहार का उद्देश्य **नागालैंड की समृद्ध संस्कृति को पुनर्जीवित करना और उसकी रक्षा करना** है। इसके अतिरिक्त, यह उत्सव इस राज्य की **अतिकल्पनाशीलता और परंपराओं को भी प्रदर्शित करता** है। • इस उत्सव का नाम, राज्य में सर्वाधिक श्रद्धेय **हॉर्नबिल** पक्षी के नाम पर रखा गया है, जिसका महत्व कई **जनजातीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, गीतों और नृत्यों में परिलक्षित** होता है।
अन्य	
संकल्प पर्व	• **संस्कृति मंत्रालय** द्वारा 28 जून से 12 जुलाई 2020 तक संकल्प पर्व का आयोजन किया जाएगा। • इसके तहत, मंत्रालय के सभी अधीनस्थ कार्यालयों, अकादमियों, संलग्न संस्थानों और संबद्ध संस्थानों द्वारा **अपने-अपने परिसरों में या उनके आसपास जहां भी संभव हो,** वहां अवश्य ही वृक्षारोपण किया जाएगा। • इसके लिए अनुशंसित किए गए पांच वृक्ष अग्रलिखित हैं: **बरगद, आंवला, पीपल, अशोक और बेल।**
धर्म चक्र दिवस / आषाढ़ पूर्णिमा (Dharma Chakra Day / Asaadh Poornima)	• भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (International Buddhist Confederation: IBC) द्वारा **4 जुलाई 2020 को आषाढ़ पूर्णिमा को धर्म चक्र दिवस (Dharma Chakra Day)** के रूप में मनाया गया। • इस दिवस को **बुद्ध द्वारा ऋषिपतन के मृगशिखावन (deer park) (वाराणसी के निकट**

	वर्तमान सारनाथ) में उनके प्रथम पांच तपस्वी शिष्यों को दिए गए सर्वप्रथम उपदेश के स्मरण में मनाया गया। • इसे बौद्धों द्वारा **'धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस'** के रूप में मनाया जाता है। • इस दिवस को बौद्धों और हिंदुओं दोनों द्वारा **गुरु पूर्णिमा** के रूप में भी मनाया जाता है, जिसे अपने **गुरुओं के प्रति श्रद्धा का प्रतीक** माना जाता है।
पर्युषण पर्व	• पर्युषण पर्व आध्यात्मिक उत्थान और आत्म-शुद्धि के लिए मनाया जाने वाला **जैन धर्म का एक वार्षिक त्यौहार** है। • जैनियों के लिए, पर्युषण के दौरान **उपवास करना, बुरे कर्म को समाप्त करने का एक अवसर** है। यह व्यक्ति को अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, धैर्य, क्षमा और पश्चाताप की भावना सृजित करने में सहायता प्रदान करता है।
डेस्टिनेशन नॉर्थ ईस्ट-2020 (Destination North East-2020)	• यह **उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय** द्वारा आयोजित **एक वार्षिक उत्सव** है। • इसका उद्देश्य **राष्ट्रीय-एकीकरण को सुदृढ़ करने** के लिए **उत्तर-पूर्वी क्षेत्र का देश के अन्य हिस्सों के साथ संपर्क स्थापित करना तथा उन्हें एक-दूसरे के निकट** लाना है। • इस वर्ष के लिए, इसका विषय (थीम) **"द इमर्जिंग डिलाइटफुल डेस्टिनेशंस"** है।

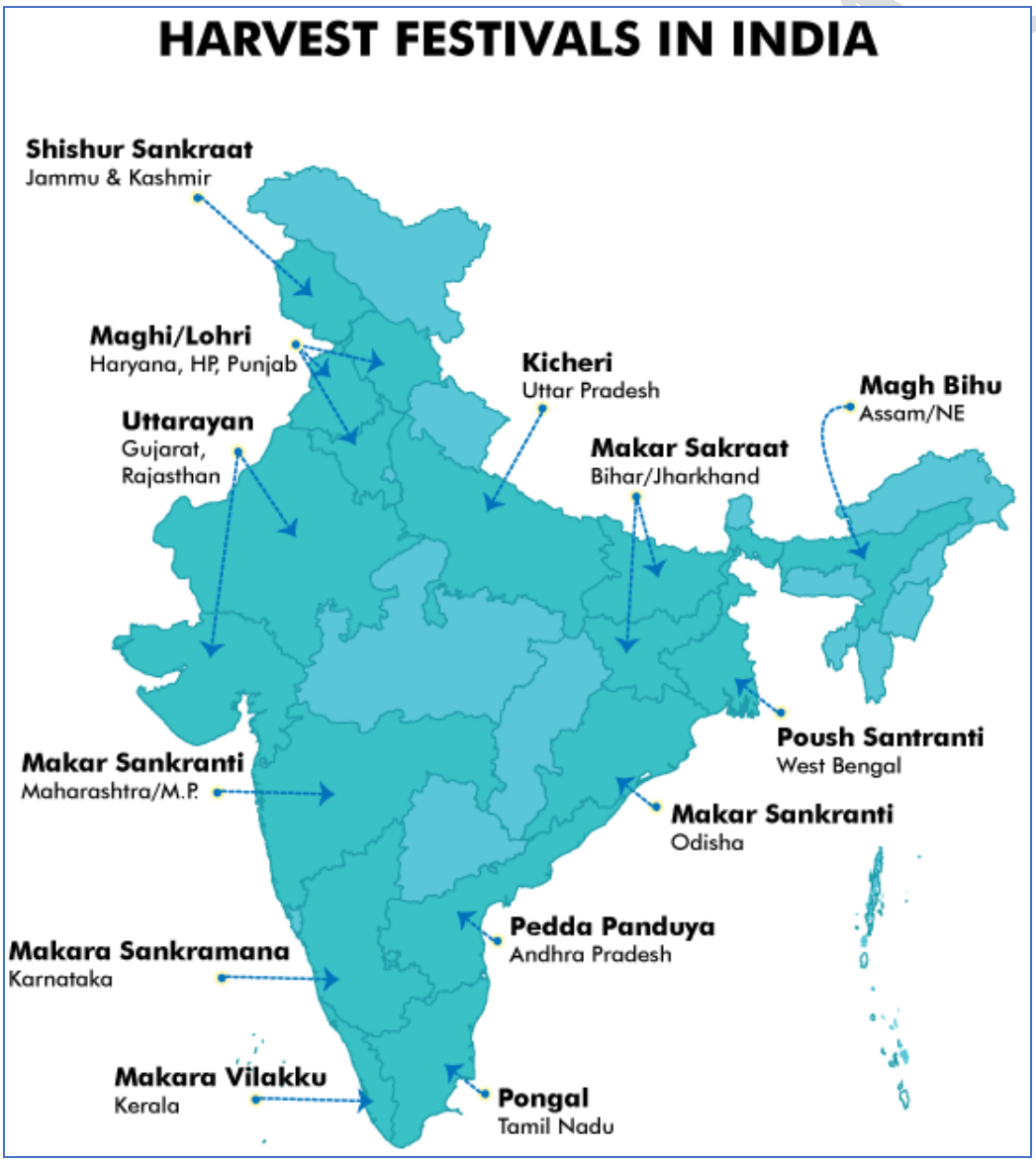

7. प्राचीन और मध्यकालीन भारत (Ancient & Medieval History)

7.1. गुर्जर-प्रतिहार (Gurjara-Pratiharas)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, वर्ष 1998 में देश के बाहर तस्करी की गई राजस्थान स्थित मंदिर की एक दुर्लभ बलुआ पत्थर से निर्मित मूर्ति **"नटेश"** को पुन: भारत वापस लाया गया है।

नटेश मूर्ति के विषय में

- नटेश, राजस्थान में **स्थापत्य की प्रतिहार शैली** से संबद्ध एक दुर्लभ बलुआ प्रस्तर निर्मित प्रतिमा है।
- यह मूर्ति मूल रूप से राजस्थान के **बाड़ोली स्थित घाटेश्वर मंदिर** से संबंधित है।
- यह प्रतिमा लगभग 4 फ़ीट ऊँची है तथा **भगवान शिव का एक विरल एवं वैभवशाली चित्रण प्रस्तुत** करती है।
  - नटेश मूर्ति में शिव के दाहिने पैर के पीछे नंदी (पवित्र बैल) का चित्रण दर्शाया गया है।
- स्थापत्य कला की प्रतिहार शैली **गुर्जर-प्रतिहार राजवंश (730 ई. से 1036 ई.)** से संबंधित है।

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के बारे में

- **राजवंश:**
  - गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के शासकों ने 730 ई. से लेकर 11वीं शताब्दी ई. तक **उत्तर भारत के अधिकांश भागों पर शासन** किया था।
  - वे **राजपूत** के रूप में संदर्भित जातीय समूह के प्रथम चार पितृवंशीय कुलों में से एक थे।
  - प्रतिहार संस्कृत के द्वारपाल शब्द का पर्यायवाची है तथा इसे **गुर्जरों के कबीलाई समूह अथवा वंश** के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- **महत्वपूर्ण शासक:**
  - **नागभट्ट प्रथम:** गुर्जर-प्रतिहार वंश का संस्थापक नागभट्ट प्रथम (730 ई. - 756 ई.) एक पराक्रमी शासक था। उसने अरब सैनिकों के सिंधु नदी के पूर्व की ओर विस्तार को रोक दिया था।
  - **नागभट्ट द्वितीय, मिहिरभोज और महेंद्रपाल प्रथम** इस राजवंश के अन्य महत्वपूर्ण शासक थे।
  - गर्जर-प्रतिहार राज्य कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर अन्य समकालीन शक्तियों, यथा- **बंगाल के पाल और दक्षिण के राष्ट्रकूटों के साथ त्रिपक्षीय संघर्ष (tripartite struggle)** में लिप्त था। (इंफोग्राफिक देखें)

- **प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था:**
  - उन्होंने प्रशासन में गुप्त शासकों व हर्षवर्धन द्वारा निर्धारित पदावली को ही बनाए रखा।
  - कुछ क्षेत्र प्रत्यक्षत: केंद्र के प्रशासनाधीन थे तथा कुछ प्रदेश **प्रांतों (भुक्ति) और जिलों (मंडल अथवा विषय)** में विभक्त थे।
  - **प्रांतों का प्रशासन प्रांतपति (उपरिक) के अधीन था तथा जिले का प्रशासनिक प्रमुख विषयपति कहलाता था।**
  - उपरिक और विषयपति राज्य द्वारा प्रदत्त सैनिकों की सहायता से क्रमश: प्रांत व जिले में **भू-राजस्व एकत्रित करते थे तथा कानून एवं व्यवस्था** बनाए रखते थे।

VISION IAS

- प्रतिहार शासक अपनी अश्वारोही सेना (cavalry) के लिए विख्यात थे। उल्लेखनीय है कि इन अश्वों का आयात मध्य एशिया एवं अरब से किया जाता था।
- भोज के पश्चात् प्रतिहारों की सैन्य शक्ति का पतन होने लगा, जिसके कारण वे अनेक अन्य उत्तरवर्ती शासकों से पराजित होने लगे थे।

- **स्थापत्य:**
  - गुर्जर-प्रतिहार शासकों द्वारा गुप्त स्थापत्य परंपरा का ही विस्तार किया गया। उनके द्वारा एकल गृभगृह युक्त मंदिर में एक पूर्ण विकसित मंडप का निर्माण करवाया जाने लगा था तथा मंदिर की मूल वास्तु योजना त्रिरथ, पंचरथ में मंडोवरा भी शामिल होने लगी थी, उदाहरणार्थ- **बड़ोह-पाथरी का गडरमल मंदिर** आदि।
  - गुर्जर-प्रतिहार अपने **खुले मंडप (pavilion) वाले मंदिरों** हेतु विख्यात थे।
  - **खुले स्थान की अवधारणा, संरचनात्मक व कार्यात्मक संरचनाएं, रूपांकन (motifs)** आदि उनके स्थापत्य की विशेषताएं थीं। ये विशिष्टताएं **स्थापत्य की नागर शैली** से संबंधित सौंदर्यात्मक व मूर्तिविज्ञान (iconographic) संबंधी मापदंडों से युक्त मंदिरों के साथ संयुक्त थीं।
- **व्यापार/अर्थव्यवस्था:**
  - गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतया **कृषि उत्पादन पर निर्भर थी** तथा उस समय सरकार के लिए राजस्व का प्रमुख स्रोत प्रचुर कृषि उत्पादन पर अधिरोपित कर था।
  - गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के व्यापार में अश्वों का एक महत्वपूर्ण स्थान था।
- प्रमुख साहित्यिक स्रोतों में शामिल हैं- **सुलेमान, अल-मसूदी** जैसे अरब यात्रियों के वृतांत तथा **महेन्द्रपाल प्रथम** के दरबारी कवि **राजशेखर** की कृतियां आदि।

7.2. काकतीय वंश (Kakatiya Dynasty)

सुर्ख़ियों में क्यों?

आंध्र प्रदेश की राजधानी **अमरावती में एक काकतीय शासक** द्वारा निर्मित एक मंदिर को **स्थानीय देवी बालुसुलम्मा (देवी दुर्गा) के अधिष्ठान (वास स्थान)** में परिवर्तित कर दिया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस मंदिर का निर्माण **काकतीय वंश के शक्तिशाली शासक गणपति देव** द्वारा करवाया गया था।
- 13वीं शताब्दी के इस **मंदिर की अधिष्ठात्री देवी काकती देवी** थी, जो काकतीय शासकों की कुल देवी भी थी।

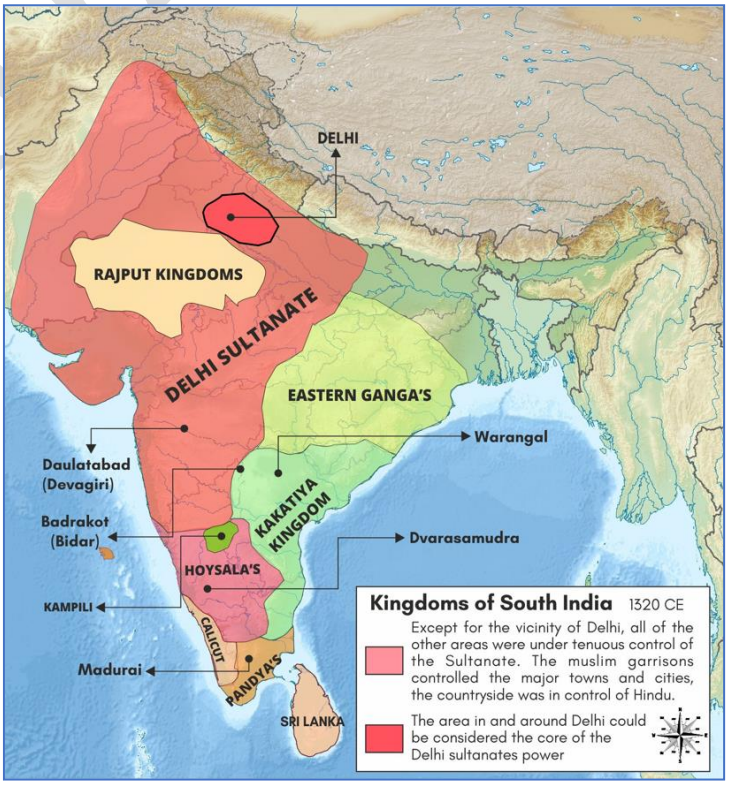

काकतीय राजवंश के बारे में

- आरंभ में ये **पश्चिमी चालुक्यों के सामंत** थे। ध्यातव्य है कि दक्कन के सभी **तीन समकालीन राजवंश अर्थात् होयसल, यादव और काकतीय** पश्चिमी चालुक्यों के सामंत थे।
- इस राजवंश की एक स्वतंत्र राजवंश के रूप में स्थापना तब की गई थी, जब रुद्रदेव (प्रतापरुद्र प्रथम) 1158 ईस्वी में काकतीय राजवंश का प्रथम स्वतंत्र शासक बना था।
- **वारंगल** काकतीय राजवंश की राजधानी थी।
- काकतीय शासकों ने 1310 ईस्वी में प्रथम बार **मुस्लिम आक्रमण (अलाउद्दीन खिलजी द्वारा)** का सामना किया था और अंततः **1323 ईस्वी में (सुल्तान ग़यासुद्दीन तुगलक द्वारा आक्रमण)** यह **दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण** में आ गया था।

VISION IAS

- **प्रमुख शासक:**
  - **गणपति देव** (1199 ईस्वी से 1262 ईस्वी) का शासनकाल सभी काकतीय शासकों में सबसे लंबा था। इस दौरान उसने अपने राज्य का विस्तार **पूर्व में तटीय बंगाल की खाड़ी से लेकर दक्षिण में कांचीपुरम तक** किया था।
  - **रानी रुद्रमा देवी (1262-89 ई.),** जो भारतीय इतिहास की कुछ प्रसिद्ध रानियों में से एक थीं, काकतीय वंश से ही संबंधित थी।
- **सामाजिक-आर्थिक इतिहास:**
  - **मोटुपल्ली** काकतीय लोगों का **प्रसिद्ध व्यापारिक बंदरगाह** था।
  - प्रसिद्ध वेनिस यात्री **मार्कोपोलो** ने इस बंदरगाह पर पहुंच कर ही काकतीय साम्राज्य की यात्रा की थी और अपने **यात्रा वृतांत में आंध्र क्षेत्र की समृद्धि और शक्ति का उल्लेख** किया था।
  - काकतीय राजवंश बड़े **पोखरों (टैंकों) के निर्माण के लिए प्रसिद्ध था** और फसल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इसमें **जलद्वार अवरोधकों (sluice-weir device)** का उपयोग किया जाता था।
  - काकतीय शासन के दौरान ही गोलकुंडा खानों से **कोह-ए-नूर हीरा** प्राप्त हुआ था
- **स्थापत्य:**
  - **रुद्रेश्वर मंदिर:** इसे तेलुगु में **वेय्यीस्थंबालागुड़ी (हजार स्तंभों वाला मंदिर)** के रूप में भी जाना जाता है, जो काकतीय स्थापत्य कला की प्राचीनतम संरचनाओं में से एक है।
    - इसे 1163 ईस्वी में **रुद्रदेव** द्वारा निर्मित करवाया गया था।
    - यह मंदिर अपने समृद्ध **नक्काशीदार स्तंभों, जालीदार चित्रपटों, प्रस्तर निर्मित हाथियों और एकाश्मिक नंदी** जैसे विशेष प्रतीकों के लिए विख्यात है।
    - दक्कन क्षेत्र पर आक्रमण के दौरान **तुगलक वंश के शासकों** द्वारा इस मंदिर को अपवित्र कर दिया गया था।
  - **रामप्पा मंदिर:** यह भारत का एकमात्र मंदिर है, जिसे अधिष्ठात्री देवता के स्थान पर **इसके शिल्पकार के नाम से जाना जाता** है।
    - इसका निर्माण **काकतीय शासक गणपति देव** की ओर से उसके **मुख्य सेनापति रुद्र समानी द्वारा** किया गया था।
    - मंदिर में नृत्य मुद्राओं की मूर्तिकला, **जयपा सेनानी की प्रसिद्ध कृति 'नृत्य रत्नावली' के लिए बहुत ही प्रेरणादायक** रही थी।
  - **वारंगल दुर्ग:** वारंगल दुर्ग का निर्माण **13वीं शताब्दी में राजा गणपति** द्वारा करवाया गया था और उसकी पुत्री रुद्रमा देवी ने **1261 ईस्वी में इसका निर्माण कार्य पूर्ण** करवाया था।
    - इस दुर्ग में नक्काशीदार और बुलंद द्वारों के साथ चार मार्ग हैं, जिन्हें **कीर्ति तोरण या हंस तोरण** के नाम से जाना जाता है।
  - इस क्षेत्र के वारंगल किला, हजार स्तंभ मंदिर और रामप्पा मंदिर को **यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची** में समाविष्ट किया गया है।

7.3. सिंधु घाटी सभ्यता से डेयरी उत्पादन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं {Evidence of Dairy Production in the Indus Valley Civilization (IVC)}

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ष 2020 को **सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता की खोज के 100वें** वर्ष के रूप में चिन्हित किया गया है। हाल ही में, एक नवीन अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि 2500 ई.पू. में हड़प्पावासियों द्वारा डेयरी उत्पादों का उत्पादन किया जाता था।

VISION IAS

प्रमुख निष्कर्ष

- **औद्योगिक स्तर पर डेयरी उत्पादन के आरंभिक साक्ष्य:** ये साक्ष्य **चमकहीन मृत्तिका पात्रों** में **अवशोषित वसीय अवशेषों (absorbed lipid residues)** के विश्लेषण पर आधारित थे।
- **डेयरी प्रसंस्करण के साक्ष्य:** इसका तात्पर्य किण्वन और अन्य तकनीकों के माध्यम से दुग्ध के परिरक्षण से है।
  - यह परिणाम **गुजरात में कोटड़ा भादली** नामक पुरास्थल से प्राप्त मृदभांडों के अवशेषों के **आणविक रासायनिक विश्लेषण** पर आधारित हैं।
  - वर्तमान समय में भी, गुजरात भारत में डेयरी उत्पादों का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है।
- **डेयरी उत्पादन के लिए उपयोग किए जाने वाले पशु:** विद्वानों ने क्षेत्र में पाए जाने वाले मवेशियों, वॉटर बफैलो (जल भैंस), बकरी और भेड़ के **जीवाश्म से दंतवल्क (tooth enamel) का अध्ययन** किया था। **गायों और वॉटर बफैलो को चारे में मोटा अनाज दिया जाता** था, जबकि भेड़ और बकरियां घास और पत्तियों का चारण करती थीं।
  - बड़े झुंड इंगित करते हैं कि **दुग्ध अधिशेष में उत्पादित** किया जाता था, ताकि इसके विनिमय के माध्यम से बस्तियों के मध्य किसी प्रकार का व्यापार हो सके।

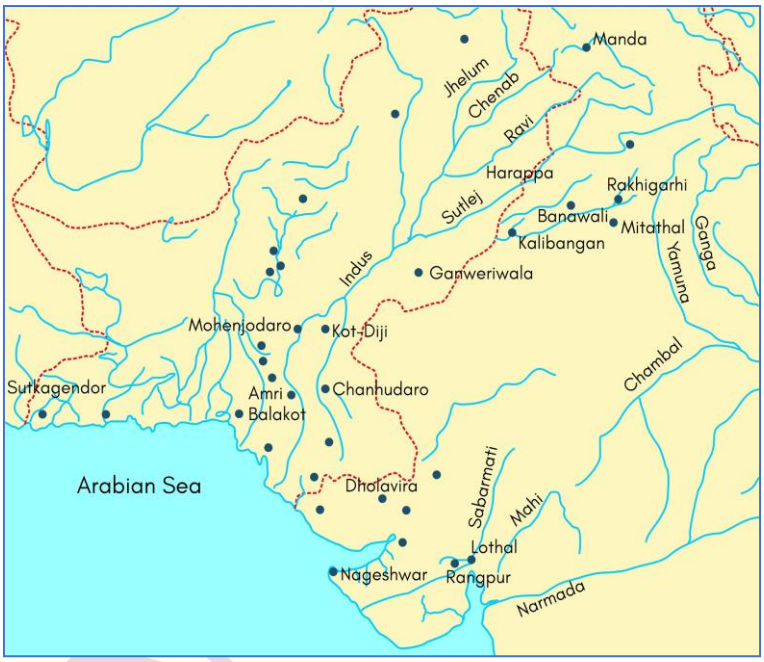

- इसलिए, यह खोज सैंधव सभ्यता की **ग्रामीण अर्थव्यवस्था** को दर्शाती है।

संबंधित तथ्य

- सिंधु घाटी के बर्तनों में मवेशी, भैंस के मांस के अवशेष पाए गए हैं (Cattle, Buffalo Meat Residue Found in Indus Valley Vessels)
- जर्नल ऑफ़ आर्कियोलॉजिकल साइंस में प्रकाशित अध्ययन से पता चला है कि जुताई और फसलों को उगाने के कार्यों के अतिरिक्त, इस सभ्यता में मांसाहार हेतु भी पशुओं का प्रयोग किया जाता था।
- वर्तमान हरियाणा और उत्तर प्रदेश में सिंधु सभ्यता की बस्तियों से प्राप्त प्राचीन चीनी मिट्टी के बर्तनों में विद्यमान वसीय अवशेषों के विश्लेषण से पता चला है कि उस समय के लोगों द्वारा पशुओं के मांस जैसे कि मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी और सूअर और दुग्ध उत्पादों का सेवन किया जाता था।
- वसा के क्षरण की संभावना कम होती है और विश्व भर के पुरातात्विक संदर्भों के आधार पर मिट्टी के बर्तनों में इन्हें खोजा गया है।
- वसीय अवशेषों के विश्लेषण में बर्तनों में अवशोषित वसा और तैलीय पदार्थों का निष्कर्षण तथा पहचान शामिल है।
- इस अध्ययन में फसल उत्पादों की विविधता और फसल प्रथाओं में क्षेत्रीय भिन्नता होने की बात कही गई है।
- ग्रीष्म और शरद ऋतु-आधारित दोनों फसलों प्रचलन था।
- जौ, गेहूं, चावल, बाजरा की विभिन्न किस्मों, ग्रीष्म और शरद ऋतु वाली दालों, तिलहन और फलों तथा सब्जियों, जैसे कि बैगन, ककड़ी, अंगूर, खजूर के उगाए जाने तथा सेवन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

सिंधु घाटी या सैंधव सभ्यता के बारे में

- यह **मेसोपोटामिया, मिस्र और चीन के साथ विश्व की चार आरंभिक सभ्यताओं में से एक** है।
- सैंधव सभ्यता एक सांस्कृतिक और राजनीतिक इकाई थी, जो 7000-600 ई.पू. के मध्य **भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी क्षेत्र में विकसित हुई** थी।
- वर्ष 1921 में **दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा स्थल की खोज** की गई थी।
- इसे इसका आधुनिक नाम सिंधु नदी की घाटी में इसकी अवस्थिति से प्राप्त हुआ है, परन्तु इसे सामान्यतः **सिंधु-सरस्वती सभ्यता (वैदिक**

© Vision IAS

स्रोतों में वर्णित सरस्वती नदी, जो सिंधु के निकट प्रवाहित होती थी) और हड़प्पा सभ्यता के रूप में जाना जाता है।

- यह स्पष्ट नहीं है कि **सिंधु सभ्यता का अंत** कैसे हुआ।
- **इस सभ्यता के सबसे दक्षिणी हिस्से** भारत में 1000 ई.पू. में विकसित होने वाली **लौहयुगीन सभ्यता तक अस्तित्व में बने रहे** होंगे।

सैंधव सभ्यता से संबंधित सुर्ख़ियों में रही कुछ खोजें

- हाल ही के एक अध्ययन के अनुसार जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप हुए **मानसून प्रारूप में परिवर्तन (shifting monsoon patterns)** सभ्यता के विकास एवं पतन का एक प्रमुख कारण हो सकता है।
- **हरियाणा में स्थित भिर्राना नामक स्थल** को **अब सबसे प्राचीन सैंधव स्थल** माना जा रहा है, जो लगभग 7500 ई. पू. का एक स्थल है।
    - इससे पूर्व, पाकिस्तान में स्थित मेहरगढ़ को सबसे पुराना सैंधव स्थल (7000 ई. पू.) माना जाता था।
    - राखीगढ़ी से प्राप्त अस्थिपंजरों के अवशेषों के डी.एन.ए. नमूने से दावा किया जा रहा है कि **सैंधवजन विशिष्ट स्वदेशी लोग थे**, जिससे **हड़प्पा संस्कृति को समाप्त** करने के लिए उत्तरदायी माने जाने वाले आर्य आक्रमण के सिद्धांत पर प्रश्नचिन्ह आरोपित किया जा सकता है।

सैंधव सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	अवस्थिति	पुरातात्विक खोज
हड़प्पा	पाकिस्तान में, रावी नदी के तट पर	छह अन्नागार, लिंग और योनी के पाषाण प्रतीक, मातृदेवी की प्रतिमा, कांस्य धातु में मृग का पीछा करते हुए कुत्ते का चित्र, एक लाल बलुआ पत्थर पर पुरुष का धड़ आदि।
मोहनजोदड़ो	पाकिस्तान में, रावी नदी के तट पर	दुर्ग, विशाल स्नानागार, दाढ़ी वाले पुरोहित की प्रतिमा, विशाल अन्नागार, नर्तकी की प्रसिद्ध कांस्य प्रतिमा, पशुपति मुहर आदि।
धोलावीरा	गुजरात, भारत	विशाल जलाशय, अद्वितीय जल दोहन प्रणाली आदि।
लोथल	गुजरात, भारत	बंदरगाह, अग्नि वेदी, अश्व और पोत की टेराकोटा आकृतियां आदि।
राखीगढ़ी	हरियाणा	सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल (भारत में), अन्नागार, टेराकोटा ईंटें इत्यादि।
रोपड़	पंजाब (भारत) में सतलज नदी पर स्थित	मानव के साथ कुत्ते को अंडाकार गर्त में दफन करने के साक्ष्य, ताम्र निर्मित कुल्हाड़ी इत्यादि।
बालाथल और कालीबंगा	राजस्थान	चूड़ी निर्माण कारखाना, खिलौना गाड़ियां, ऊंट की अस्थियां, अलंकृत ईंटें, दुर्ग और निचला नगर, अग्नि वेदी आदि।
सुरकोटदा	गुजरात	अश्व की अस्थियों के प्रथम वास्तविक अवशेष आदि।
बनावली	हरियाणा, सरस्वती नदी के सूखने पर प्राप्त हुआ	अर्ध-कीमती पत्थरों, टेराकोटा व स्टीटाइट से निर्मित मनके और **मृत्तिका, शैल, चीनी मिट्टी और ताम्र की चूड़ियां आदि।** सुनियोजित किलेबंदी एक **अर्द्ध-व्यास के प्रारूप (radial pattern)** में थी।
आलमगीरपुर	मेरठ, उत्तर प्रदेश (यमुना नदी के तट पर)	इस सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल, ताम्र और सिरेमिक धातु से बना फलक (ब्लेड) आदि।
मेहरगढ़	पाकिस्तान	सभ्यता का अग्रगामी स्थल, मृदभांड और ताम्र उपकरण पाए गए हैं।

7.4. सादिकपुर सिनौली में उत्खनन (Sadikpur Sinauli Excavations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India: ASI) ने उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के सादिकपुर सिनौली के पुरातात्विक अवशेषों को राष्ट्रीय महत्व का दर्जा प्रदान किया है।

सादिकपुर सिनौली के बारे में

- इस स्थल का उत्खनन सर्वप्रथम वर्ष 2003-04 किया गया था। उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों से पता चला कि यह एक उत्तर-हड़प्पाकालीन कब्रिस्तान है जो कि भारत में ज्ञात सबसे बड़ा शवाधान स्थल है।
- यह **यमुना नदी के बाएं तट** पर अवस्थित है।
- कार्बन डेटिंग तकनीक से शवाधानों की कालावधि 1900 ईसा पूर्व अर्थात् 3800 वर्ष पूर्व के होने की पुष्टि हुई है।
- **स्थल से प्राप्त पुरावस्तुएं:**
  - शवाधान हेतु **लकड़ी के ताबूत, "रथ", तांबे की तलवारें आदि।**
  - पहली बार शाही समाधि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
  - शवों पर पाए गए वस्त्र के छाप, हिंदू अनुष्ठानों की भांति शुद्धि के महत्व को अभिव्यक्त करते हैं।
  - **मृदभांड: गेरुआ वर्ण मृदभांड संस्कृति {Ochre Coloured Pottery (OCP) culture}।**
  - **अश्व संबंधी वाद-विवाद:** ताम्र-कांस्य युग (3300 BC-1200 BC) के दौरान उत्खनन में प्राप्त पुरावस्तुओं में तीन रथ, पाएदार ताबूत (legged coffins), ढाल, तलवार और शिरस्त्राण (सिर पर धारण किए जाने वाला हेलमेट सदृश्य कवच) शामिल हैं, जो एक योद्धा वर्ग की ओर संकेत करते हैं।
    - रथों के आकार और आकृति इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं वे अश्वों द्वारा खींचे जाते थे।
    - परिपक्व हड़प्पा स्थल, **सुरकोटदा** से प्राप्त पालतू **अश्व के अस्थि अवशेष** अन्य सहायक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
  - **आर्य आक्रमण सिद्धांत को प्रश्नगत करती हैं:** इस सिद्धांत के तहत यह यह दावा किया गया है कि लगभग 1500 से 1000 ईस्वी पूर्व में आक्रमणकारी आर्यों द्वारा मध्य एशिया से अश्वों को लाया गया था, जिसने आर्यों को बैलगाड़ी का प्रयोग करने वाले "द्रविड़" लोगों पर बढ़त दिलाई थी।
  - हालांकि नव प्राप्त साक्ष्यों से यह प्रमाणित होता है कि **लगभग 2000 ईसा पूर्व गेरूवर्णी मृदभांड (OCP) संस्कृति के लोग अश्व चालित रथों** का उपयोग करते थे।

आर्य आक्रमण सिद्धांत के बारे में

- ब्रिटिश पुरातत्त्ववेत्ता मार्टिमर व्हीलर द्वारा प्रदत्त इस सिद्धांत के अनुसार एक **यायावर, हिंद-यूरोपीय जनजाति (मैदानी चरवाहे या अनातोलियन और ईरानी किसान) जिसे आर्य कहा** जाता था, अकस्मात् अभिभूत हुए तथा उन्होंने सिन्धु नदी घाटी को विजित कर लिया, जिसके कारण सैंधव सभ्यता का पतन हो गया।
- उन्होंने पुरातात्त्विक स्थल **मोहनजोदड़ो के शीर्ष स्तरों से प्राप्त हुए कई बिना दफनाए हुए शवों** को युद्ध में मारे गए व्यक्ति वर्णित किया है।
- इस सिद्धांत में यह संभावना व्यक्त की गई है कि शांतिपूर्ण हड़प्पावासियों के विरुद्ध **अश्वों और अधिक उन्नत हथियारों** का उपयोग करके आर्यों ने उन्हें सरलता से पराजित कर दिया होगा।
- **ऋग्वेद से प्राप्त साक्ष्य:**
  - ऋग्वेद में कई बार दास, दस्यु और दुर्गों को संदर्भित किया गया है। वैदिक देवता **इन्द्र** को **'पुरंदर'** कहा गया है, जिसका अर्थ **'दुर्ग विध्वंसक'** है।
  - ऋग्वैदिक कालीन आर्यों के निवास के भौगोलिक क्षेत्र में **पंजाब और घग्गर-हकरा क्षेत्र** शामिल थे।
  - चूंकि इस ऐतिहासिक चरण में इस क्षेत्र में दुर्ग वाले अन्य सांस्कृतिक समूहों के कोई अवशेष नहीं थे, इसलिए व्हीलर का मानना था कि यह हड़प्पा शहर था, जिसका वर्णन ऋग्वेद में किया गया है।
  - वास्तव में, ऋग्वेद में **हरियूपिया** नामक एक स्थान का उल्लेख है। यह स्थान **रावी** नदी के तट पर स्थित था। आर्यों ने यहां एक युद्ध किया था। इस स्थान का नाम हड़प्पा के समान ही प्रतीत होता है।
  - **इन साक्ष्यों ने व्हीलर को यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया कि यह आर्य आक्रमणकारी ही थे जिन्होंने हड़प्पाई शहरों को नष्ट**

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI © Vision IAS

कर दिया था।

राष्ट्रीय महत्व का दर्जा प्राप्त होने के बारे में

- ऐसे क्षेत्र जहां **ऐतिहासिक या पुरातात्विक महत्व के भग्नावशेष या वस्तुगत अवशेष पाए जाते हों अथवा उनकी उपलब्धता के साक्ष्य मौजूद हों** (जो कम से कम एक सौ वर्षों से अस्तित्व में हों) को पुरातात्विक स्थल अथवा अवशेषों के रूप संदर्भित किया जाता है।
- **राष्ट्रीय महत्व** का दर्जा इन स्थलों को विश्व पर्यटन मानचित्र पर महत्व प्रदान करता है और ASI द्वारा प्राथमिकता के आधार पर इन स्थलों के संरक्षण, परिरक्षण एवं रखरखाव के लिए नियमित निधि (regular fund) की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है।

संबंधित तथ्य

दुर्लभ रेनाटी चोल अभिलेख की प्राप्ति (Rare Renati Chol Inscription Unearthed)

- इस अभिलेख की प्राप्ति **आंध्र प्रदेश के कड़पा (Kadapa) जिले** में हुए अन्वेषण के दौरान हुई है। यह पुरातन तेलुगू भाषा में लिखा गया है।
  - इस अभिलेख पर एक ब्राह्मण को उपहारस्वरुप प्रदान की गई **छह मार्टटस (भूमि मापन की इकाई) भूमि के साक्ष्य को उत्तकीर्णित किया गया है।**
- इसे 8वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास प्रदान किया गया था, उस दौरान इस क्षेत्र पर **रेनाडू के चोल महाराजा का शासन था।**
  - रेनाडू के तेलुगू चोल (जिन्हें रेनाटी चोल भी कहा जाता है) द्वारा रेनाडू क्षेत्र पर शासन किया गया था, जो **वर्तमान में कड़पा जिले** में स्थित है।
- वे मूल रूप से स्वतंत्र थे, कालांतर में उन्होंने पूर्वी चालुक्यों की अधीनता को स्वीकार कर लिया था।

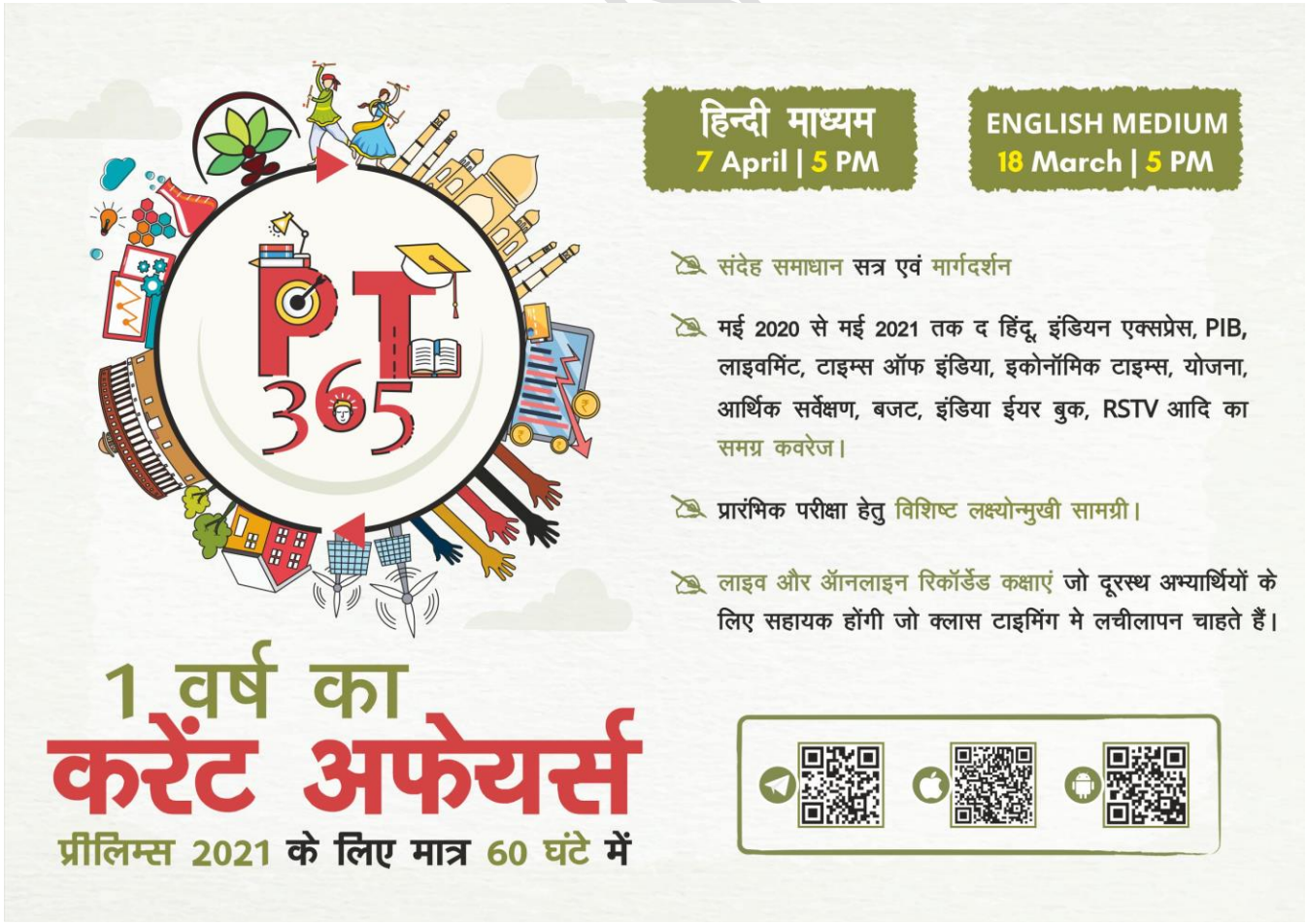

8. व्यक्ति (Personalities)

8.1. नेताजी सुभाष चंद्र बोस (Netaji Subhas Chandra Bose)

सुर्ख़ियों में क्यों?

23 जनवरी 2021 को, भारत ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती को **'पराक्रम दिवस'** के रूप में मनाया।

राजनीतिक जीवन

- **1920 के दशक की शुरुआत में राजनीतिक नेता चितरंजन दास के अधीन उनका कार्य:**
  - वर्ष 1921 में, बोस ने समाचार पत्र **'फॉरवर्ड'** का संपादन आरंभ किया और बाद में **'स्वराज'** नाम से स्वंय का समाचार पत्र प्रारंभ किया।
  - जब दास कलकत्ता के मेयर थे, तब उन्होंने **कलकत्ता नगर निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी** के रूप में भी कार्य किया था।
- **1920 के दशक के उत्तरार्ध में कांग्रेस में युवा नेता के रूप में उनकी भूमिका:**
  - वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के युवा एवं उग्र सुधारवादी समूह के नेता थे।
  - उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया था और वर्ष 1925 में बर्मा (म्यांमार) निर्वासित कर दिया गया था, क्योंकि उनका गुप्त क्रांतिकारी आंदोलनों के साथ संबंध होने का संदेह था।
  - उन्होंने **'द इंडियन स्ट्रगल'** नामक एक पुस्तक की रचना की थी। इसमें वर्ष 1920 से लेकर वर्ष 1934 तक के देश के स्वतंत्रता आंदोलन के विवरण को समाहित किया गया है।
- **1930 के दशक में INC के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका:**

अन्य संबंधित तथ्य

- नेताजी ने वर्ष 1920 में **इंडियन सिविल सेवा परीक्षा** उतीर्ण की थी। हालांकि, उन्होंने अप्रैल 1921 में परिवीक्षा अवधि के दौरान ही त्यागपत्र दे दिया था।
- चितरंजन दास, जवाहरलाल नेहरू के साथ, सुभाष चंद्र बोस ने **ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)** के **अध्यक्ष** के रूप में कार्य किया था।
- वे भगवद गीता तथा स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो घोष की शिक्षाओं से प्रेरित थे।

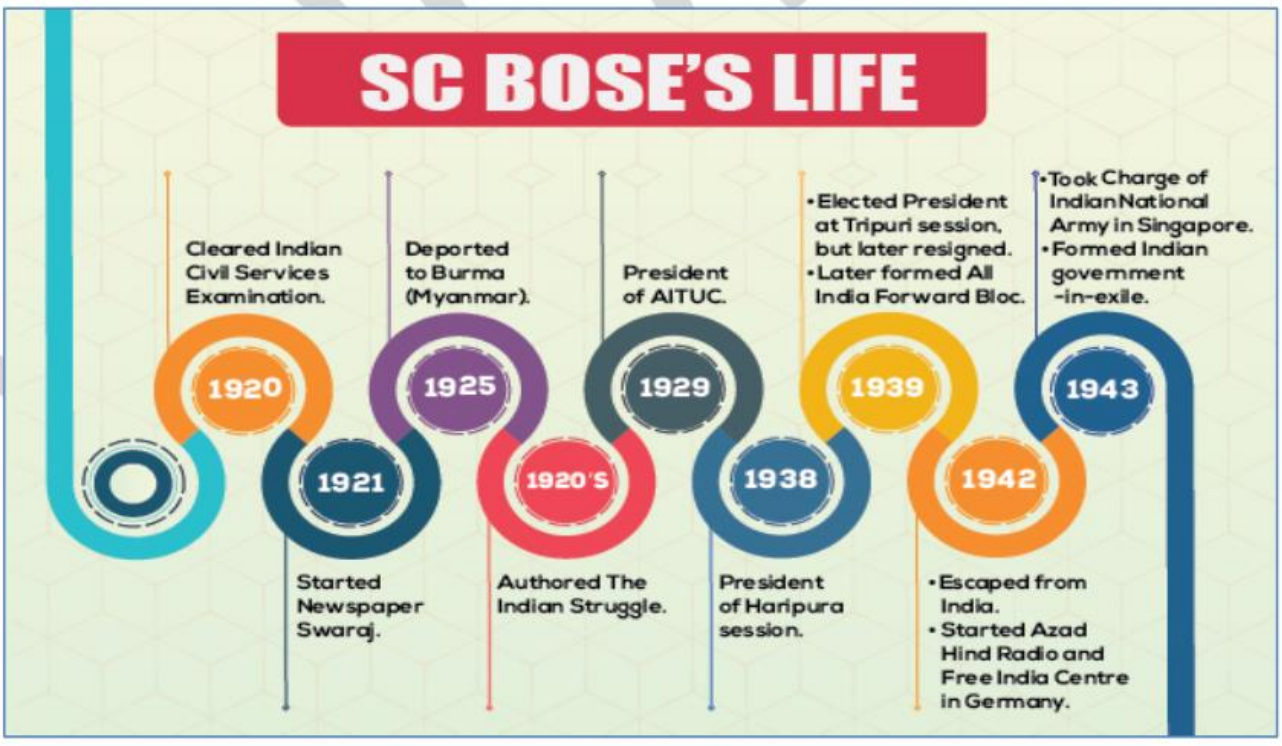

© Vision IAS

- वर्ष 1938 में उन्होंने गुजरात के बारदोली जिले में INC के **हरिपुरा अधिवेशन** के निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण किया था।
  - उन्होंने **राज्य-स्वामित्व और राज्य-नियंत्रण के तहत औद्योगिक विकास की एक व्यापक योजना** की आवश्यकता का उल्लेख किया था।
  - **राष्ट्रीय योजना समिति** की स्थापना **पं. जवाहर लाल नेहरू** की अध्यक्षता में की गई थी।
  - इसी अधिवेशन में उनके गांधीजी के साथ वैचारिक मतभेद उभर कर सामने आए थे।
- वर्ष 1939 में **त्रिपुरी अधिवेशन** में, वे गांधीजी द्वारा समर्थित **पट्टाभि सीतारमैय्या** को पराजित कर पुन: INC के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। यह प्रथम बार था, जब कांग्रेस के भीतर गांधीजी के प्राधिकार को किसी ने चुनौती दी थी। नेताजी राष्ट्रीय आंदोलन को विभाजित नहीं देखना चाहते थे और इसलिए उन्होंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया था।
- तत्पश्चात, उन्होंने वामपंथी विचारों को मजबूत करने के उद्देश्य से कांग्रेस के भीतर एक गुट, **ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक** का गठन किया था। हालांकि, उन्हें उनके चरम वामपंथी एवं साम्राज्यवाद विरोधी पक्ष के कारण कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया था।

- **भारत से उनका निर्वासन:**
  - नेताजी की उग्र सुधारवादी गतिविधियों से चिंतित **ब्रिटिश भारत सरकार** ने उन्हें नजरबंद कर दिया।
  - नेताजी का मानना था कि भारत को तब तक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि भारत के बाहर से सैन्य अभियान संचालित नहीं किया जाता।
  - वे यह भी जानते थे कि इस प्रकार के अभियान के लिए सुविधाएं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान केवल ब्रिटेन के शत्रु देशों से ही प्राप्त की जा सकती हैं, न कि ब्रिटेन के सहयोगियों से।
  - इन बुनियादी विचारों के साथ, वर्ष 1942 में वे भारत से पलायन कर गए और पहले वे जर्मनी गए तथा बाद में जापान के लिए रवाना हुए।
- **द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनकी सैन्य गतिविधियाँ:**
  - वर्ष 1942 में जर्मनी पहुंचने के उपरांत, उन्होंने **'आज़ाद हिंद रेडियो'** शुरू किया और **'फ्री इंडिया सेंटर'** (आज़ाद हिंद सरकार के पूर्ववर्ती) की स्थापना की।
  - वे जुलाई 1943 में सिंगापुर पहुंचे और **इंडियन नेशनल आर्मी (INA) या आजाद हिंद फौज** का नेतृत्व ग्रहण किया व इसका विस्तार तीन प्रभागों में किया। INA की स्थापना **मोहन बोस** ने की थी। जापान में निर्वासित राष्ट्रवादी **रास बिहारी बोस** ने नेताजी से सहयोग के लिए आग्रह किया था।
  - **सिंगापुर** में, उन्होंने **'आजाद हिंद सरकार'** नाम से एक भारतीय निर्वासित सरकार (government-in-exile) का गठन किया था। इस अंतरिम सरकार की अपनी मुद्रा, न्यायालय, नागरिक संहिता, सेना (INA) और राष्ट्रगान भी था।
  - वर्ष 1943 में, अंतरिम सरकार के मुखिया के रूप में, **उन्होंने भारत की मुक्ति के लिए ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी।**
  - **"चलो दिल्ली"** के स्पष्ट आह्वान के तहत **आई.एन.ए. मणिपुर के मोइरांग पहुंची।** इससे ब्रिटिश सरकार अत्यधिक चिंतित हो गई थी।
    - आई.एन.ए. **रंगून, इम्फाल और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह को पुन: विजित** करने में सक्षम रही थी।
    - नेताजी ने अंडमान और निकोबार (A&N) द्वीपसमूह का नाम परिवर्तित कर क्रमशः **शहीद एवं स्वराज** कर दिया था। वर्ष 2018 में अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के **रॉस द्वीप, नील द्वीप** और **हैवलॉक** का नाम बदलकर क्रमशः **नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप, शहीद द्वीप और स्वराज द्वीप** किया गया था।
  - वर्तमान में प्रत्येक सैन्यकर्मी द्वारा अभिवादन के लिए प्रयुक्त **'जय हिन्द'** शब्द नेताजी के सहयोगी **आबिद हसन** की देन है।

8.2. ज्योतिबा फुले (Jyotiba Phule)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, ज्योतिबा फुले की 130वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

ज्योतिबा फुले के बारे में

- **ज्योतिराव 'ज्योतिबा' गोविंदराव फुले** उन्नीसवीं सदी में भारत के एक प्रमुख समाज सुधारक और विचारक थे। उनका जन्म वर्ष 1827 में महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। उनका परिवार बाग़वानी और सब्जियों की खेती करने वाले किसानों की 'माली' जाति से संबंधित था।
- तेरह वर्ष की आयु में, ज्योतिराव का विवाह **सावित्रीबाई** से हुआ था।
- थॉमस पेन की प्रसिद्ध पुस्तक **'द राइट्स ऑफ मैन' (1791 ई.)** पढ़ने के पश्चात्, ज्योतिराव उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उनका मानना था कि सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन करने के लिए महिलाओं और निम्न जाति के लोगों को ज्ञान प्रदान करना ही एकमात्र उपाय है।
- वर्ष 1888 में **विट्ठलराव कृष्णजी वांडेकर द्वारा उनको महात्मा की उपाधि** से सम्मानित किया गया और वर्ष 1890 में उनका निधन हो गया।
- **सामाजिक सुधार की दिशा में प्रयास**
  - **शिक्षा:** फुले ने अनिवार्य, सार्वभौमिक और रचनात्मक शिक्षा का सुझाव दिया।
    - उन्होंने और उनकी पत्नी **सावित्रीराव फुले ने वर्ष 1848 में पुणे के भिडेवाडा में दलित कन्याओं के लिए प्रथम विद्यालय** स्थापित किया।
    - इस विद्यालय का पाठ्यक्रम पश्चिमी शिक्षा पर आधारित था तथा इसमें गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन जैसे विषय शामिल थे।
    - सावित्रीबाई ने एक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का अध्ययन किया और वर्ष 1847 में एक योग्य शिक्षिका बन गईं।
  - **महिला सशक्तीकरण:**
    - ज्योतिबा पुरुषों और महिलाओं की समानता में विश्वास करते थे।
    - उन्होंने **महिलाओं की शिक्षा** और **महिलाओं की मुक्ति** पर बल दिया। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का प्रवेश करवाया।
    - उन्होंने बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयों का सख्त विरोध किया।
    - वर्ष 1863 में, ज्योतिराव और सावित्रीबाई ने **भारत में पहली बार बालहत्या निषेध गृह की स्थापना की, जिसे बालहत्या प्रतिबंधक गृह** कहा जाता था। इसने गर्भवती ब्राह्मण विधवाओं और बलात्कार पीड़ितों को बच्चों को जन्म देने में सहायता प्रदान की।

  - **विधवा पुनर्विवाह:** ज्योतिबा ने विधवाओं की दयनीय स्थितियों का अनुभव किया और युवा विधवाओं के लिए एक आश्रम स्थापित किया तथा अंततः वे विधवा पुनर्विवाह के विचार के पैरोकार बन गए।
  - **जाति व्यवस्था के विरुद्ध:**
    - ज्योतिबा फुले अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था के कटु विरोधी थे तथा उन्होंने इसके दमनकारी ढांचे को पूर्णतया ध्वस्त करने का आह्वान किया था।
    - वह निम्न जाति और अस्पृश्य समझे जाने वाले सभी लोगों पर लागू होने वाले **'दलित' शब्द को प्रतिपादित करने वाले प्रथम व्यक्ति** थे।
    - उन्होंने वेदों की निंदा की तथा ब्राह्मणों को अपनी सामाजिक श्रेष्ठता बनाए रखने हेतु शोषणकारी और अमानवीय नियमों को तैयार करने के लिए उत्तरदायी माना।
    - वे महर्षि शिंदे, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर, गाडगेबाबा और साहू महाराज के प्रेरणा स्रोत थे।
- **संगठन:** वर्ष 1873 में, उन्होंने **पुणे में सत्यशोधक समाज (सोसाइटी ऑफ सीकर्स ऑफ ट्रुथ)** का गठन किया। यह एक सामाजिक सुधार संगठन था, जो दमित वर्गों के समान अधिकारों के लिए संघर्ष करता था। इस संगठन में मुस्लिम, गैर-ब्राह्मण, ब्राह्मण और सरकारी अधिकारी शामिल थे।

© Vision IAS

8.3. बाल गंगाधर तिलक (Bal Gangadhar Tilak)

सुर्ख़ियों में क्यों?

विगत वर्ष बाल गंगाधर तिलक की 100वीं पुण्यतिथि (23 जुलाई 1856 - 1 अगस्त 1920) मनाई गई।

बाल गंगाधर तिलक के बारे में

- **केशव गंगाधर तिलक** (जिन्हें **लोकमान्य तिलक** के नाम से भी जाना जाता है) **भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभिक नेताओं में से एक थे।**
  - वे बंगाल के बिपिन चंद्र पाल और पंजाब के लाला लाजपत राय द्वारा समर्थित **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल गुट से संबंधित थे।** ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों ने तिलक को 'भारतीय अशांति का जनक' कहा था।
  - तिलक ने **स्वराज या स्वशासन** का समर्थन किया था एवं बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलनों का प्रचार किया था।
  - तिलक द्वारा **लोगों में एकता और राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने हेतु गणेश चतुर्थी व शिवाजी जयंती जैसे उत्सवों** का आयोजन किया गया था।
  - जवाहरलाल नेहरू ने तिलक को **'भारतीय क्रांति का जनक'** कहा था तथा महात्मा गांधी द्वारा इन्हें **'आधुनिक भारत के निर्माता'** के रूप में वर्णित किया गया था।
- **तिलक निम्नलिखित संगठनों से संबंधित थे:**
  - वह **अखिल भारतीय होम रूल लीग (1916 ई.)** के संस्थापकों (एनी बेसेंट के साथ) में से एक थे।
  - वह सामान्य-जन को अंग्रेजी में शिक्षित करने के उद्देश्य से 1884 ई. में स्थापित **डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी (Deccan Education Society) के संस्थापक थे।**
- **साहित्यिक कार्य:**
  - उन्होंने साप्ताहिक समाचार-पत्र **केसरी (मराठी में) और मराठा (अंग्रेजी में)** का संपादन किया था।
  - **उनके द्वारा रचित पुस्तकें हैं:** गीता रहस्य, द आर्कटिक होम इन द वेदाज़ (The Arctic Home in the Vedas) आदि।

8.4. बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की 350वीं जयंती (350th Jayanti of Baba Banda Singh Bahadur)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की 350वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की है।

बाबा बंदा सिंह बहादुर (वर्ष 1670- 1716) के बारे में

- वे एक **सिख योद्धा** थे, जिन्हें अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में श्री गुरु गोबिंद सिंह से भेंट होने के पश्चात् **मुगल साम्राज्य के विरुद्ध किए गए संघर्ष हेतु** जाना जाता है।
- उन्हें **लछमन दास, लछमन देव या माधो दास** के नाम से भी जाना जाता था तथा उनका जन्म **मिन्हास राजपूत परिवार** में हुआ था।
  - उन्होंने गोदावरी नदी के तट पर **नांदेड़ (वर्तमान महाराष्ट्र में)** में एक आश्रम की स्थापना की थी, जिसका उन्होंने 1708 ई. में दौरा किया था और **गुरु गोबिंद सिंह के शिष्य बन गए थे, जिन्होंने बंदा बहादुर के नाम से उनका नया नामकरण किया** था।
- 1715 ई. में **गुरदास नांगल के दुर्गीकृत शहर** को मुगलों द्वारा घेर लिए जाने के उपरांत, बाबा बंदा सिंह को पकड़ लिया गया और **उन्हें दिल्ली लाया गया। 1716 ई.** में मोहम्मद फर्रुखसियर के शासनकाल के दौरान यातनाएं देकर उनकी हत्या कर दी गई थी।

- **बंदा सिंह बहादुर का योगदान:**
  - वे **जमींदारी व्यवस्था के उन्मूलन** और भूमि के वास्तविक जोतदार को **स्वामित्व अधिकार दिलाने वाले के रूप में** भी प्रसिद्ध थे।
  - उन्होंने **गुरु नानक देव और गुरु गोबिंद सिंह के नाम पर** सिक्कों की ढलाई आरंभ की थी तथा **अपनी मुहर के साथ आदेश** जारी किए थे।
  - उन्होंने हरियाणा में **मुखलिसगढ़ का नाम बदलकर लौहगढ़ (इस्पात का किला)** कर दिया था। इसी के साथ यह **प्रथम सिख राज्य की राजधानी** बन गया था।

बाबा बंदा सिंह बहादुर के समकालीन व्यक्तित्व

- **गुरु गोबिंद सिंह (वर्ष 1666-1708):** वह **10वें सिख गुरु** थे, जिन्होंने **सिखों को एक लड़ाकू जाति** में परिवर्तित किया था और **खालसा (विशुद्ध) पंथ** की स्थापना की थी।
- **शाह आलम (वर्ष 1643-1712):** वे 7वें मुगल सम्राट और औरंगजेब के पुत्र थे।

8.5. पुरंदर दास (Purandara Dasa)

सुर्ख़ियों में क्यों?

कर्नाटक सरकार, पुरंदर दास के **जन्म स्थान संबंधी रहस्य को सुलझाने के लिए** केशवपुरा (कर्नाटक) क्षेत्र में अनुसंधान शुरू करेगी।

अन्य संबंधित तथ्य

- अब तक, यह माना जाता था कि पुरंदर दास का जन्म महाराष्ट्र में पुणे के निकट पुरंदरगढ़ में हुआ था।
- हालांकि, कर्नाटक सरकार द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति ने स्पष्ट किया कि **केशवपुरा को उनके जन्म स्थान के रूप में सुझाव देने के लिए पर्याप्त साक्ष्य** मौजूद हैं तथा आगे के शोध की सिफारिश की गई है।

पुरंदर दास के बारे में

- पुरंदर दास (1484-1564 ई.) **विजयनगर साम्राज्य** के दौरान एक संत, कवि और गायक थे।
- वह विजयनगर साम्राज्य के **राजगुरु व्यासतीर्थ के शिष्य** थे।
- **हरिदास परंपरा** (वैष्णवों द्वारा संगीत और साहित्यिक परंपरा) की शुरुआत करने से पहले, पुरंदर दास एक अमीर व्यापारी थे और उन्हें **श्रीनिवास नायक** कहा जाता था।
- उन्हें **कर्नाटक संगीत का 'पितामह'** माना जाता है। कर्नाटक संगीत सिखाने की उनकी व्यवस्थित पद्धति का वर्तमान में भी पालन किया जा रहा है।
- उन्होंने संगीत निर्देशन के लिए **"माया मालवा गवला" राग** को मूल पैमाने के रूप में आरंभ किया।
- **'पुरंदरा विट्ठल'** उपनाम से, उन्होंने सरल कन्नड़ भाषा में लगभग 4.75 लाख भक्ति गीतों की रचना की है, जिन्हें दक्षिण भारत के स्थानीय मुद्दों और परंपराओं की व्याख्या करने वाले **कीर्तन** के रूप में जाना जाता है।
- **स्वामी हरिदास** भी पुरंदर दास के शिष्य थे, जो कि हिंदुस्तानी संगीतकार तानसेन के गुरु थे।

भारतीय शास्त्रीय संगीत को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है:

हिंदुस्तानी संगीत (Hindustani Music)	कर्नाटक संगीत (Carnatic Music)
इसकी उत्पत्ति **वैदिक परंपराओं** से हुई है, जिनमें **सामवेद** नामक पवित्र ग्रंथ की ऋचाओं का जाप करने की बजाये उनका गायन किया जाता है।	यह मुख्य रूप से **भक्ति आंदोलन** के दौरान विकसित हुई।
यह **राग आधारित** शैली है।	यह **कृति-आधारित** शैली है।
इसमें कई **तुर्क-फारसी संगीत तत्वों** की विद्यमानता पाई जाती है।	इसमें कोई **तुर्क-फारसी प्रभाव नहीं** है।
इसमें **समय की बंदिश (सीमा)** होती है।	इसमें **समय की बंदिश (सीमा) नहीं** होती है।
इनका गायन एक से अधिक शैलियों में किया जाता है, जिन्हें **घराने** कहा जाता है।	इनकी रचना **विशिष्ट तरीके से गायन** हेतु की जाती है।

© Vision IAS

इसमें **तबला, सारंगी, सितार, संतूर, शहनाई, वायलिन और बांसुरी** का उपयोग किया जाता है।	इसमें **वीणा, मृदंग, मैंडोलिन, जलतरंग, वायलिन और बांसुरी** का उपयोग किया जाता है।

8.6. सुर्ख़ियों में रहे अन्य प्रमुख व्यक्ति (Other Personalities in News)

प्राचीन और मध्यकालीन भारत	
लछित बोरफुकन (Lachit Borphukan)	• वह तत्कालीन **अहोम साम्राज्य (असम)** में एक सेनापति था। उसे असम में सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में माना जाता है, क्योंकि उसने वर्ष 1671 में **गुवाहाटी की रक्षा के लिए सरायघाट के युद्ध में ब्रह्मपुत्र के तट पर एक बड़ी मुगल सेना को हराया** था। • **राजा चक्रध्वज सिंह** द्वारा लछित को **'बोरफुकन'** के रूप में नियुक्त किया गया था। ○ बोरफुकन एक पद-स्थिति थी, जिसमें **कार्यकारी और न्यायिक शक्तियां दोनों एक साथ अंतर्निहित** होती थीं।
मलिक अंबर (Malik Ambar)	• मलिक अंबर एक अफ्रीकी दास था, जो कालांतर में एक विख्यात योद्धा बन गया था। उसने **खड़की** नामक एक शहर की स्थापना की थी, जिसे बाद में **औरंगाबाद** नाम दिया गया था। • मलिक अंबर का जन्म 1548 ई. में **दक्षिणी इथियोपिया** के खंबाता क्षेत्र में हुआ था। मलिक अंबर का संबंध ओरोमो जनजाति (Oromo tribe) से माना जाता है। • अंबर, चंगेज खान द्वारा खरीदे गए हजार अन्य 'हब्शियों' (अबीसीनिया उच्च भूमियों से संबंधित विभिन्न नृजातीय समुदायों के सदस्यों को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला शब्द) में से एक था। **मलिक अंबर को उसके भाग्य ने भारत के दक्कन क्षेत्र में पहुँचा दिया था।**
रहीम (Rahim) 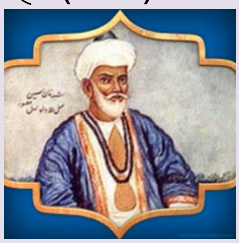	• अब्दुर्रहीम **अकबर के नवरत्नों में से एक** थे। वे एक प्रतिष्ठित सेनापति और एक दरबारी कवि थे ○ उन्हें सभी को स्वीकारने और सभी को समावेशित करने की संस्कृति को अपनाने वाले **एक धर्मनिरपेक्ष प्रस्तावक** के रूप में जाना जाता है। ○ उन्होंने बृज, संस्कृत, अरबी और फारसी में कई रचनाएं लिखी थीं। उन्होंने **बाबर की आत्मकथा बाबरनामा का तुर्की से फारसी में अनुवाद** किया था।
आधुनिक भारत	
नर्मदाशंकर दवे ('नर्मद') (24 अगस्त 1833-1886)	• प्रधान मंत्री ने नर्मदाशंकर दवे को उनकी 187वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की है। • वे एक **गुजराती कवि, नाटककार और समाज सुधारक थे।** • उन्हें **आधुनिक गुजराती साहित्य का संस्थापक** माना जाता है। • **डांडियो** (Dandio) उनकी एक प्रमुख कृति (पत्रिका) है।
राम मनोहर लोहिया (Ram Manohar Lohia)	• लोहिया एक **समाजवादी नेता** थे और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। • भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान लोहिया द्वारा बॉम्बे और कलकत्ता में भूमिगत रेडियो स्टेशन

	स्थापित किया गया था, जिन्हें **कांग्रेस रेडियो** कहा जाता था। • वे वर्ष 1934 में स्थापित **कांग्रेस समाजवादी दल** (Congress Socialist Party) के संस्थापकों में से एक थे और उन्होंने **'कांग्रेस सोशलिस्ट'** नामक एक आवधिक पत्रिका का संपादन भी किया था। • उन्होंने **द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की भागीदारी का विरोध** भी किया था। • उन्होंने जाति व्यवस्था के उन्मूलन हेतु सरकारी सेवकों के लिए अंतरजातीय विवाह अनिवार्य करने और सामुदायिक समारोहों का आयोजन करने का सुझाव दिया था।
गुरुजाडा अप्पाराव (वर्ष 1862-1915) {GurajadaAppa Rao (1862-1915)} 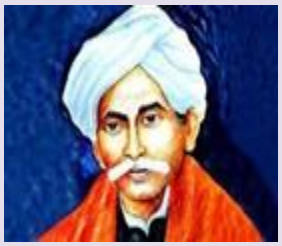	• वे एक तेलुगू **कवि, लेखक और समाज सुधारक** थे। • उन्होंने **लैंगिक समानता के समर्थन में और जाति एवं सांप्रदायिक पूर्वाग्रह के विरुद्ध लेखन** कार्य किया था। • **उनकी प्रमुख कृतियों में कन्यासुलकम,** देसामुणु प्रमिनच्युमन्ना, कोंडुभट्टीयं, बिल्हणीयं, पेड्डा मसीडू, मी पेरेमिति, उथाडी बोम्मा पूर्णमा आदि शामिल हैं।
कुशोक बकुला रिनपोछे (Kushok Bakula Rinpoche) 	• प्रधान मंत्री ने लद्दाख में निमू (Nimu) की यात्रा के दौरान, लद्दाख की संस्कृति की महानता और साथ ही **कुशोक बकुला रिनपोछे के महान उपदेशों को भी स्मरण किया।** ○ कुशोक बाकुला रिनपोछे एक **प्रमुख बौद्ध भिक्षु, राजनेता और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिज्ञ** थे। वे प्राय: "आधुनिक लद्दाख के वास्तुकार" (the architect of Modern Ladakh) के रूप में प्रसिद्ध हैं। ○ पाकिस्तान से कबायली हमलावरों के हमले और संयुक्त राष्ट्र द्वारा जनमत संग्रह के संदर्भ में, उन्होंने लद्दाख को भारत का हिस्सा बने रहने के लिए विस्तृत तथ्यों का संचय किया था। • **निमू** ज़ास्कर पर्वत श्रेणी (Zanskar range) से घिरा है और यह सिंधु नदी के तट पर अवस्थित है।
महात्मा अय्यंकाली (1863-1941 {Mahatma Ayyankali (1863-1941)} 	• महात्मा अय्यंकाली **त्रावणकोर, ब्रिटिश भारत (वर्तमान केरल)** के एक समाज सुधारक थे। • **वे 'अस्पृश्य' पुलाया जाति** से संबंधित थे और उन्होंने अपने जीवन काल में जातिगत भेदभाव का सामना किया था। • उन्होंने **साधु जन परिपालन संगम** (निर्धनों की सुरक्षा के लिए संघ) की स्थापना की थी, जिसके माध्यम से वे अपने स्वयं के विद्यालयों के संचालन हेतु धन जुटाया करते थे। • वे **त्रावणकोर की विधान सभा के सदस्य भी बने थे**, जिसे श्री मूलम लोकप्रिय सभा या प्रजा सभा के रूप में जाना जाता था।
जैनाचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज (Jainacharya Shree Vijay Vallabh Surishwer Ji Maharaj)	• हाल ही में, **जैनाचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज की 151वीं जयंती** मनाई गई। इस अवसर पर प्रधान मंत्री ने **राजस्थान के पाली में सूरीश्वर जी महाराज की शांति की प्रतिमा (Statue of Peace) का अनावरण किया।** • श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज (वर्ष 1870-1954) एक जैन संत थे, जिन्होंने **भगवान महावीर के संदेश के प्रसार के लिए समर्पित भाव से कार्य किया था।**

© Vision IAS

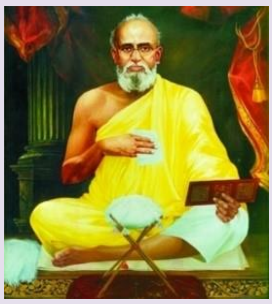

- उन्होंने **जनता के कल्याण, शिक्षा के प्रसार, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन आदि के लिए अथक प्रयास** किया था।
- उन्होंने **स्वतंत्रता आंदोलन और स्वदेशी के प्रचार का भी सक्रिय समर्थन** किया था।

श्री विश्वनाथ सत्यनारायण (Sri Viswanatha Satyanarayana)

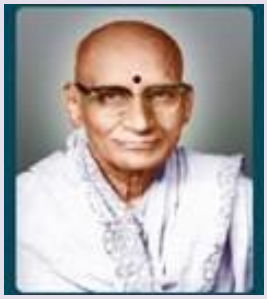

- वह एक **तेलुगू लेखक** थे, जिनकी रचनाओं में कविता, उपन्यास, नाटक, लघु कथाएँ और वाणियां शामिल हैं।
- वर्ष 1971 में उन्हें उनकी पुस्तक **"रामायण कल्पवृक्षम" के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार** से सम्मानित किया गया था। ये **ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम तेलुगू लेखक** थे।
  - ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ (एक साहित्यिक और अनुसंधान संगठन) द्वारा किसी लेखक को साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।
- पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी.नरसिम्हा राव द्वारा **सहस्रफन** नाम से उनके तेलुगू उपन्यास **'वेई पदागालू'** का हिंदी में अनुवाद किया गया था।
- उनकी **कुछ कविताओं और उपन्यासों का अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, मलयालम, उर्दू और संस्कृत भाषाओं में अनुवाद किया गया है।**

पंडित जसराज (Pandit Jasraj)

- वे भारत के एक **प्रमुख शास्त्रीय गायक** थे। वे **'मेवाती घराने' से संबंधित** थे।
  - मेवाती घराना 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्थापित एक **ख्याल शैली-आधारित हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत घराना** है।
  - मेवाती घराने का नाम राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र (Mewar region) के नाम पर रखा गया है। ज्ञातव्य है इस घराने के संस्थापक इसी क्षेत्र से संबंधित थे।
- **पंडित जसराज** को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था और वे **हवेली संगीत** में भी निपुण थे।

अन्य प्रमुख व्यक्ति

फ्लोरेंस नाइटिंगेल (Florence Nightingale)

- हाल ही में, 12 मई को आधुनिक नर्सिंग की संस्थापक फ्लोरेंस नाइटिंगेल की 200वीं जयंती मनाई गई है।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल (1820-1910) को **"द लेडी विद द लैंप"** के नाम से भी जाना जाता है, जो एक ब्रिटिश नर्स, समाज सुधारक और सांख्यिकीविद थीं जिन्हें **आधुनिक नर्सिंग की संस्थापक** के रूप में जाना जाता है।
- इनके द्वारा वर्ष 1860 में लंदन के सेंट थॉमस हॉस्पिटल में **'नाइटिंगेल ट्रेनिंग स्कूल फॉर नर्सेज'** की स्थापना की गई थी।
- इन्हें **संक्रमण नियंत्रण से स्वास्थ्य परिणामों में सुधार** को दर्शाने वाले **डेटा का उपयोग करने वाली प्रथम स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर** होने का श्रेय भी प्राप्त है।
  - अपने करियर के दौरान इन्होंने हाथ धोने के व्यवहार पर बल दिया जो वर्तमान में भी उतना ही प्रासंगिक है।
- वर्कहाउस इनफ़र्मरी में मिडवाइफ और नर्सों के लिए प्रशिक्षण स्थापित करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वह **ऑर्डर ऑफ मेरिट (1907) से सम्मानित** होने वाली प्रथम महिला थीं।
- इनके जन्म के उपलक्ष्य में और स्वास्थ्य देखभाल में नर्सों की महत्वपूर्ण भूमिका के उपलक्ष में प्रतिवर्ष **12 मई को अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस** मनाया जाता है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म की 200वीं वर्षगांठ के सम्मान में 2020 को **"नर्स और मिडवाइफ के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष"** के रूप में घोषित किया है।

नानाजी देशमुख (Nanaji Deshmukh)	• **चंडिकादास अमृतराव देशमुख** को **नानाजी देशमुख** के नाम से भी जाना जाता है। वे एक **समाज सुधारक और राजनीतिज्ञ** थे। उन्होंने **शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्मनिर्भरता** के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया था। • उन्होंने मध्य प्रदेश में **चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय** की स्थापना की थी, जिसे **देश का प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय** माना जाता है। • वे स्वतंत्रता सेनानी **लोकमान्य तिलक** और राष्ट्रवाद पर उनके विचारों से प्रेरित थे। o वर्ष 2019 में उन्हें **मरणोपरांत 'भारत रत्न'** से सम्मानित किया गया था।

9. ऐतिहासिक घटनाक्रम (Historical Events)

9.1. मालाबार विद्रोह (Malabar Rebellion)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ष 2021 में मालाबार विद्रोह की 100वीं वर्षगांठ होगी।

मालाबार विद्रोह के बारे में

- मालाबार विद्रोह, जिसे सामन्यतः **मोपला विद्रोह** के नाम से भी जाना जाता है, **1921 ई. में केरल के मप्पिला या मोपला मुसलमानों द्वारा** ब्रिटिश प्राधिकारियों और उनके हिंदू जमींदारों के विरुद्ध किया गया एक सशस्त्र विद्रोह था।
- छह-माह की दीर्घावधि वाले इस विद्रोह को प्रायः **दक्षिण भारत का प्रथम राष्ट्रवादी विद्रोह** माना जाता है।
- यह विद्रोह महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले **खिलाफत/असहयोग आंदोलन का एक हिस्सा** था।

पृष्ठभूमि

- मोपला/मप्पिला, मालाबार क्षेत्र में निवास करने वाले **मुस्लिम काश्तकार (कनामदार)** और **किसान (वेरुमपट्टमदार)** थे, जहाँ अधिकांश जमींदार **(जेनमी)** उच्च जाति के हिंदू थे।
  - मैसूर के शासकों (हैदर अली और टीपू सुल्तान) के आक्रमणों के दौरान मोपलाओं ने अपने जमींदारों पर कुछ प्रमुखता प्राप्त कर ली थी।
  - परन्तु 1792 ई. में (तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के उपरांत) मालाबार क्षेत्र पर ब्रिटिश अधिपत्य के पश्चात्, हिंदू जमींदारों का वर्चस्व पुनः स्थापित हो गया था।
- ऐसे परिदृश्य में, मोपलाओं ने शीघ्र ही स्वयं को हिंदू जमींदारों (जिन्हें ब्रिटिश प्राधिकारियों ने अपने एजेंट के रूप में बनाए रखा था) की अनुकंपा के अधीन पाया।

विद्रोह के कारण

- **मालाबार क्षेत्र में सामंती संघर्षों का इतिहास:** इस क्षेत्र में किसान-जमींदार संबंध ऐतिहासिक रूप से तनावपूर्ण थे। ज्ञातव्य है कि, 1836 ई. और 1919 ई. के मध्य, मोपलाओं द्वारा उच्च जाति के हिंदू जमींदारों, उनके संबंधियों या सहायकों एवं ब्रिटिश प्राधिकारियों के विरुद्ध लगभग **32 विद्रोह** संचालित किए गए थे।
- **कृषि-संबंधी असंतोष:** दमनकारी ब्रिटिश नीतियों के कारण मोपला काश्तकारों की आर्थिक स्थिति समय के साथ अत्यधिक ह्रासमान होती गई। इन नीतियों से कराधान में बढ़ोतरी, असुरक्षित काश्तकारी, अतिशय लगान, बलपूर्वक निष्कासन आदि में वृद्धि हुई। इनसे ब्रिटिश और सामंतवाद विरोधी भावनाएं उत्पन्न हुई।
- **मोपलाओं की राजनीतिक लामबंदी:** कांग्रेस ने खिलाफत आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्रता संघर्ष के लिए समर्थन जुटाने हेतु मोपला काश्तकारों से संपर्क किया तथा मालाबार क्षेत्र में कृषि सुधारों का समर्थन किया।
  - जून, 1920 में मालाबार क्षेत्र में **खिलाफत समिति** का गठन किया गया, जो अत्यधिक तीव्रता से सक्रिय हुई।
  - अगस्त 1920 में, **शौकत अली (भारत में खिलाफत आंदोलन के नेता) के साथ गाँधीजी** ने असहयोग और खिलाफत आन्दोलन के संयुक्त संदेश को मालाबार क्षेत्र के निवासियों के मध्य प्रचारित करने हेतु कालीकट की यात्रा की।
  - जनवरी 1921 तक, मोपलाओं ने अपने धार्मिक नेता **महदूम तंगल** के अधीन असहयोग आंदोलन का समर्थन किया।
- **तात्कालिक कारण:** अगस्त 1921 में मोपलाओं ने खिलाफत नेता अली मुसालियार की गिरफ्तारी और एक व्यापक अफ़वाह कि तिरुरंगाडी में एक प्रमुख मस्जिद पर छापा पड़ा है, के कारण वारीयमकुन्नथ कुनहम्मद हाजी के नेतृत्व में सशस्त्र विद्रोह कर दिया।

विद्रोह के दौरान की गई कार्रवाइयां

- इस विद्रोह में मुख्यतया जमींदारों, पुलिस और सैनिकों पर गुरिल्ला युद्ध पद्धति के अंतर्गत हमले किए गए।
- इस विद्रोह के दौरान टेलीग्राफ लाइनों, रेलवे स्टेशनों, न्यायालयों, डाकघरों आदि जैसे औपनिवेशिक शासन के प्रतीकों तथा जमींदारों के आवासों पर हमले किए गए।
- जब मालाबार जिले में सर्वत्र विद्रोह का विस्तार हो गया, तब ब्रिटिश अधिकारी और स्थानीय पुलिस **इस प्रदेश के विशाल क्षेत्र को स्थानीय विद्रोहियों के नियंत्रण में छोड़कर** पलायन कर गए।
  - अगस्त 1921 में इस क्षेत्र को एक **'स्वतंत्र राज्य' घोषित कर दिया गया** और हाजी इसके नेता बन गए।

- उन्होंने लगभग छह माह तक **समानांतर खिलाफत शासन (जिसका मुख्यालय नीलाम्बुर में था)** का संचालन किया था। इस शासन के अंतर्गत पृथक पासपोर्ट, मुद्रा और कराधान की व्यवस्था की गई थी।
- **काश्तकारों को कर छूट के साथ उन भूमियों पर अधिकार प्रदान किया गया**, जिनमें वे कृषि किया करते थे।

- यद्यपि यह आंदोलन व्यापक रूप से ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध विरोध-प्रदर्शन के रूप में आरंभ हुआ था, किंतु इसने सांप्रदायिक स्वरुप धारण कर लिया था, जिसका समापन सांप्रदायिक हिंसा के रूप में हुआ।
- **अंग्रेजों द्वारा इस विद्रोह का दमन:**
  - ब्रिटिश सरकार द्वारा अत्यधिक आक्रामकता के साथ इस विद्रोह के विरुद्ध प्रतिक्रिया की गई। इस विद्रोह के दमन हेतु **गोरखा रेजिमेंट** को तैनात किया गया और **मार्शल लॉ (सैनिक शासन)** भी लागू कर दिया गया था।
    - **रेल बोगी त्रासदी (Wagon tragedy):** जेल जाने के मार्ग में लगभग 60 मोपला कैदियों की, रेल मालगाड़ी के एक बंद डिब्बे में दम घुटने के कारण मृत्यु हो गई थी।
  - जनवरी 1922 तक, अंग्रेजों ने विद्रोहियों के कब्ज़े वाले क्षेत्रों पर पुन:अधिकार कर लिया था तथा उनके सभी प्रमुख नेताओं को हिरासत में ले लिया था।
    - हाजी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें उनके अनेक साथियों के साथ मृत्युदंड दिया गया।

9.2. अखिल भारतीय श्रमिक संघ कांग्रेस (All India Trade Union Congress: AITUC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, अखिल भारतीय श्रमिक संघ कांग्रेस (AITUC) की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण हुए हैं।

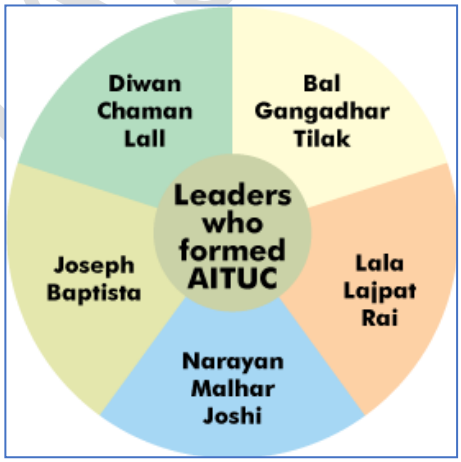

AITUC के बारे में

- AITUC का गठन वर्ष 1920 में बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, नारायण मल्हार जोशी, जोसेफ़ बॅप्टिस्टा, दीवान चमन लाल आदि नेताओं द्वारा किया गया था। इसका प्रयोजन अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) में भारत के लिए श्रम प्रतिनिधित्व प्राप्त करना था।
- **लाला लाजपत राय को AITUC के प्रथम अध्यक्ष** और दीवान चमन लाल को प्रथम महासचिव के रूप में चुना गया था।
  - सी. आर. दास, जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाष चंद्र बोस ने भी AITUC के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया था।
- **कांग्रेस के गया अधिवेशन (वर्ष 1922) में AITUC के गठन का स्वागत किया गया** था। साथ ही, इसकी सहायता के लिए एक समिति भी गठित की गई थी।
- बाद में AITUC के भीतर कम्युनिस्टों के अलग-थलग पड़ जाने से इसका विभाजन हो गया। इसके विभाजन से वर्ष 1929 में नेशनल ट्रेड यूनियन फेडरेशन (NTUF) और वर्ष 1931 में रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस (RTUC) का गठन हुआ।
- **श्रमिक संघ या ट्रेड यूनियन** संबंधित क्षेत्रों के श्रमिकों द्वारा गठित संगठन होते हैं। ये अपने सदस्यों के सामान्य हितों, जैसे- न्यायसंगत वेतन, काम के घंटे, आदि के लिए कार्य करते हैं। इस प्रकार **ये प्रबंधन**

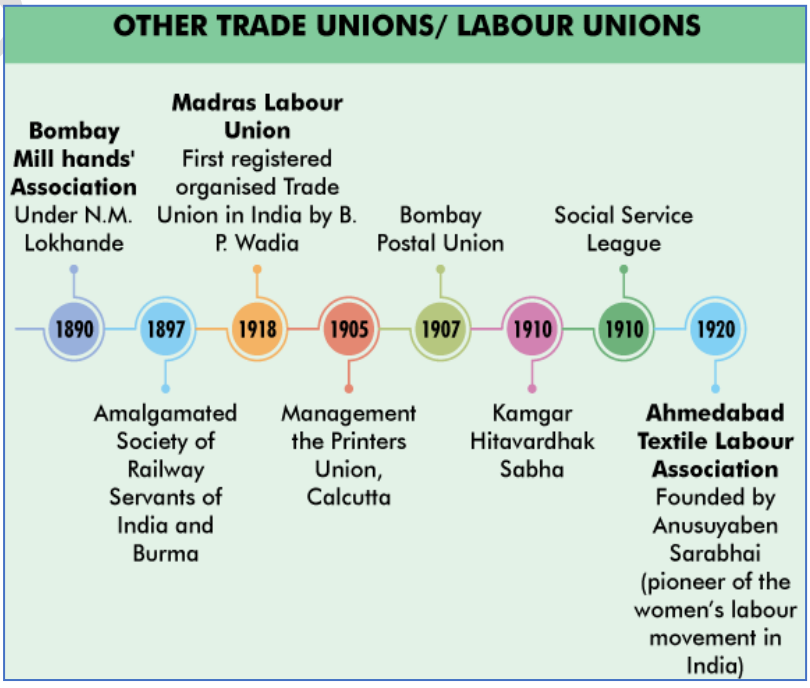

© Vision IAS

और श्रमिकों के मध्य एक संपर्क सूत्र स्थापित करते हैं।

यूनियनों का गठन करने वाले कारक

- **वैश्विक श्रमिक आंदोलनों का प्रभाव:** वर्ष 1917 में रूसी क्रांति भारतीय श्रमिक आंदोलन के लिए एक बड़ी प्रेरणा थी, क्योंकि पहली बार किसान वर्ग के साथ-साथ मजदूर वर्ग ने भी सत्ता पर अधिकार किया था।
- **औद्योगिक अशांति:** कार्य के घंटों के विस्तार के विरुद्ध बंबई में हड़तालें और तिलक के कारावास आदि के विरोध में श्रमिक वर्ग ने एक वृहद पैमाने पर संघर्ष का संचालन किया था।
- **ब्रिटिश शासन के तहत दमन और शोषण:** आत्मनिर्भर ग्राम अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो गई थी, जबकि इसके स्थान पर कोई नई संरचना स्थापित नहीं हुई थी। इससे निर्धन किसान वर्ग और भूमिहीन श्रमिक वर्ग का उदय हुआ था।
- **राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन:** 20वीं शताब्दी की शुरुआत में, स्वतंत्रता आंदोलन में श्रमिकों की भागीदारी बढ़ी थी और यूनियनों के गठन में भी वृद्धि हुई थी। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन को प्रत्यक्षत: श्रमिक कल्याण से संबद्ध किया था।

9.3. द्वितीय विश्व युद्ध (World War 2)

सुर्ख़ियों में क्यों?

संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और रूस द्वारा 8 मई (रूस में 9 मई) को यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के अंत की 75वीं वर्षगांठ को विजय दिवस (Victory Day) के रूप में मनाया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में

- यह विश्व का अब तक का सबसे भीषण और व्यापक युद्ध था।
- प्राथमिक प्रतिद्वंद्वी:
  - **धुरी राष्ट्र (Axis nations) -** जर्मनी, इटली एवं जापान।
  - **मित्र राष्ट्र (Allied nations) -** ग्रेट ब्रिटेन (और इसके राष्ट्रमंडल देश), फ्रांस, सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका।

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

- **वर्साय की संधि:** इसे जर्मनी द्वारा एक अपमानजनक संधि माना गया और इसने जर्मनी में आक्रोश उत्पन्न किया।
- सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा को बनाए रखने में **लीग ऑफ़ नेशन की विफलता।**
- **वैश्विक आर्थिक संकट:** यह संयुक्त राज्य अमेरिका में आई महामंदी से प्रेरित था, जिसने हिटलर और अन्य फासीवादी शक्तियों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।
- **हिटलर की भूमिका:**
  - केवल पोलिश गलियारे और डैनजिग (Danzig) पर कब्जा करने के बजाए हिटलर ने **पोलैंड की गतिविधियों के सभी क्षेत्रों पर हमला** कर दिया था। इसे युद्ध का सबसे तात्कालिक कारण माना जाता है।
  - हिटलर रूस को नष्ट करना चाहता था और रुसी क्षेत्र को **'जर्मनी वासियों के रहने के स्थान'** के रूप में उपयोग करना चाहता था। हिटलर के प्रचार ने जर्मनी वासियों में क्रोध को और भड़का दिया था तथा इस प्रकार जर्मनी वासियों ने हिटलर की कार्रवाइयों को स्वीकृति प्रदान कर दी।
- **तुष्टिकरण की भूमिका:** ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा अपनाई गई तुष्टिकरण की नीति ने स्थानीय तौर पर हिटलर की प्रतिष्ठा को बढ़ा दिया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के वैश्विक प्रभाव

- **विनाश:** इस दौरान 40 मिलियन से अधिक लोग मारे गए और कई लोग बेघर हो गए। इस दौरान की दो घटनाएँ, यथा - होलोकॉस्ट (Holocaust) और हिरोशिमा एवं नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बम मानव जाति के प्रति सबसे बड़ी त्रासदियाँ थीं।
- **संयुक्त राष्ट्र की स्थापना:** विश्व शांति की स्थापना, व्यक्तियों के अधिकारों का संरक्षण और विश्व भर में सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की गई थी।
- **मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (Universal Declaration of Human Rights: UDHR):** यह दस्तावेज़ मानव अधिकारों के इतिहास में एक मील का पत्थर है। इसे द्वितीय विश्व युद्ध के कारण हुए होलोकॉस्ट और विनाश की पृष्ठभूमि में घोषित किया गया था। यह सभी लोगों और सभी देशों के लिए **उपलब्धियों का एक सामान्य मानक** निर्धारित करता है।
- **शक्ति संतुलन में परिवर्तन:** विश्व पर यूरोपीय वर्चस्व समाप्त हो गया तथा शक्ति संतुलन USSR और संयुक्त राज्य अमेरिका के पक्ष में स्थानांतरित हो गया।
- **शीत युद्ध की शुरुआत:** विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया - पश्चिमी और पूर्वी गुट। एक दूसरे की जासूसी, राजनीतिक अशांति और छद्म युद्धों का उपयोग दो महाशक्तियों (USSR और संयुक्त राज्य अमेरिका) के मध्य की प्रतिद्वंद्विता की महत्त्वपूर्ण विशेषता थी।

- गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) और **तृतीय विश्व की संकल्पना का उदय** हुआ, जिसका अर्थ था कि दोनों महाशक्तियों के प्रति गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाना।
- **उपनिवेषवाद का अंत:** एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय के परिणामस्वरूप 1950 के दशक में कई नए राष्ट्र राज्यों का उदय हुआ।

9.4. किस्सा ख्वानी बाजार नरसंहार (Qissa Khwani Bazaar Massacre)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **पेशावर के किस्सा ख्वानी बाजार नरसंहार** को अप्रैल 2020 में 90 वर्ष पूर्ण हुए हैं। इसके अतिरिक्त, वर्ष 1921 में **अंजुमन-ए-इस्लाह उल-अफ़गान** की 100वीं वर्षगांठ भी है, जिसे **खुदाई खिदमतगार आंदोलन के अग्रदूत** के रूप में भी संदर्भित किया जाता है।

इस नरसंहार के बारे में

- 1930 के दशक में नमक सत्याग्रह से उद्भूत विरोध प्रदर्शनों के दौरान **खान अब्दुल गफ़्फ़ार ख़ान** को गिरफ्तार कर लिया गया था। इसके पश्चात् खुदाई खिदमतगारों का एक समूह पेशावर के किस्सा ख्वानी (कहानीकार) बाजार में एकजुट हुआ था।
- **स्थिति को नियंत्रित करने हेतु** ब्रिटिश सैन्य दल ने निहत्थे समूह पर गोलियां चला दी, जिससे 400 लोगों की मृत्यु हो गई थी।

खुदाई खिदमतगार के बारे में

- खुदाई खिदमतगार, पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत में ब्रिटिश राज के विरुद्ध पश्तून अहिंसक प्रतिरोध आंदोलन था।
  - ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान ने पश्तूनों के मध्य **सुर्ख पोश या लाल कुर्ती आंदोलन** (खुदाई खिदमतगार अथवा ईश्वर के सेवक) की स्थापना की थी। फख्र-ए-अफगान ("पश्तूनों का गौरव"), बादशाह खान या बासा खान (सरदारों का राजा) उनके उपनाम थे।
  - प्रारंभिक अवस्था में यह एक समाज सुधार संगठन था, जो शिक्षा और **अफगानी समाज में विद्यमान रक्तरंजित संघर्षों को समाप्त करने पर केंद्रित था। परन्तु कालांतर में यह एक राजनीतिक संगठन में परिवर्तित हो गया।**
- जून 1947 में **खुदाई खिदमतगारों द्वारा बन्नू प्रस्ताव (Bannu Resolution)** की घोषणा की गई थी। इसमें उन्होंने पाकिस्तान में शामिल होने के बजाए, ब्रिटिश भारत के सभी पश्तून क्षेत्रों को समायोजित करते हुए एक स्वतंत्र पश्तूनिस्तान राष्ट्र का विकल्प प्रदान करने की मांग की थी।
  - बाद में एक जनमत संग्रह के पश्चात् सीमांत प्रांत, नव स्वतंत्र पाकिस्तान का भाग बन गया।

खान अब्दुल गफ़्फ़ार ख़ान के बारे में

- अहिंसक प्रतिरोध में खान की निष्ठा के सम्मान में उनके घनिष्ठ सहयोगी अमीर चंद बोम्बवाल द्वारा उन्हें **सीमांत गाँधी** उपनाम से विभूषित किया गया था।
- उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अखिल भारतीय आज़ाद मुस्लिम सम्मेलन का पक्ष लेते हुए **भारत के विभाजन के प्रस्ताव का दृढ़तापूर्वक विरोध किया था।**
- गफ़्फ़ार ख़ान ने वर्ष 1928 में पश्तो भाषा में एक मासिक राजनीतिक पत्रिका **"पश्तून"** का प्रकाशन आरंभ किया था। उनकी आत्मकथा **"मेरा जीवन और संघर्ष"** वर्ष 1969 में सार्वजनिक हुई थी।
- **वर्ष 1987** में उन्हें **भारत रत्न पुरस्कार** से सम्मानित किया गया था तथा यह सम्मान प्राप्त करने वाले वे **प्रथम गैर-भारतीय** थे।

9.5. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News)

गोवा का 60वां मुक्ति दिवस (60th Goa Liberation Day)	• **गोवा मुक्ति दिवस** प्रति वर्ष 19 दिसंबर को मनाया जाता है। यह **वर्ष 1961 में भारतीय सशस्त्र बलों** द्वारा **450 वर्षों के** पुर्तगाली शासन से **गोवा** को मुक्त करवाने की स्मृति में मनाया जाता है। • पुर्तगालियों ने 1510 ईस्वी में भारत के कई हिस्सों को अपना उपनिवेश बनाया था, किंतु 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में **गोवा, दमन व दीव (दिसंबर 1961 को मुक्त) और दादरा एवं नगर हवेली (2 अगस्त 1954 को मुक्त) के रूप में कुछ पुर्तगाली उपनिवेश ही शेष रह गए थे।**
पुन्नप्रा-वायलार विद्रोह (Punnapra-Vayalar revolt)	• भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) की एक रिपोर्ट ने **पुन्नप्रा-वायलार, करिवेल्लूर (Karivelloor) और कवुम्बयी (Kavumbayi) आंदोलन के साम्यवादी (कम्युनिस्ट) शहीदों को**

© Vision IAS

	भारत के स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की सूची से हटाने का सुझाव दिया है। • **पुन्नप्रा वायलार आंदोलन** त्रावणकोर के महाराजा और उनके प्रधान मंत्री सर सी. पी. रामास्वामी अय्यर के विरुद्ध भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में संचालित एक सशस्त्र संघर्ष था। • वर्ष 1946 में **त्रावणकोर के दीवान सर सी. पी. रामास्वामी अय्यर** द्वारा त्रावणकोर रियासत के लिए "अमेरिकन मॉडल" की घोषणा की गई थी, जिसके अनुसार यह एक स्वतंत्र राष्ट्र बना रहता। • पुन्नप्रा वायलार के संघर्षों ने **कृषि सुधारों और श्रमिक अधिकारों हेतु संघर्ष में किसान-मजदूर एकता को सुदृढ़ करने का** कार्य किया था।
जामिया मिलिया इस्लामिया के 100 वर्ष पूर्ण (100 years of Jamia Millia Islamia)	• हाल ही में, **जामिया मिलिया इस्लामिया (JMI) ने 100 वर्ष पूर्ण** किए। • इसे वर्ष 1920 में खिलाफत और असहयोग आंदोलन के दौरान **गांधीजी के सरकार द्वारा समर्थित शैक्षिक संस्थानों के बहिष्कार के आह्वान** की अनुक्रिया में अलीगढ़ में एक स्वतंत्र राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया था। • इसकी स्थापना शेखुल हिंद मौलाना महमूद हसन, मौलाना मोहम्मद अली, हकीम अजमल खान, डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी, अब्दुल मजीद ख्वाजा और डॉ. जाकिर हुसैन ने की थी। • इसका उद्देश्य **ब्रिटिश प्रभाव से मुक्त स्वदेशी शिक्षा प्रदान करना** था। • आगे इसका नाम परिवर्तित करके **जामिया मिलिया इस्लामिया (JMI)** कर दिया गया और इसे **अलीगढ़ से नई दिल्ली स्थानांतरित** कर दिया गया। • **जौहर इसके पहले कुलपति (vice-chancellor)** बने और **हकीम अजमल खान इसके पहले कुलाधिपति (chancellor)** थे। • वर्ष 1921 में स्नातक हुए प्रथम बैच में 21 छात्र (सभी पुरुष) शामिल थे। • वर्ष 1938 में, जामिया ने **उस्तादों का मदरसा** स्थापित किया, जिसे करोल बाग में **शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय** कहा जाता था, तथा **इदारा-ए-तालीम-ओ-तरक्की** में वयस्क शिक्षा के लिए शाम को कक्षाएं आयोजित की जाती थीं।

10. विविध (Miscellaneous)

10.1. भौगोलिक संकेतक टैग {Geographical Indication (GI) Tag}

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, अनेक उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्रदान किया गया।

भौगोलिक संकेतक (GI) टैग के बारे में

- GI टैग उन उत्पादों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक संकेतक है, जिनकी एक विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति (पहचान) होती है और जिनकी मूलस्थान के कारण विशिष्ट गुण या विशिष्ट पहचान होती है।
  - इन्हें **वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999** {Geographical Indications of Goods (Registration and Protection) Act,1999} के तहत नियंत्रित किया जाता है। इसे **पेटेंट, डिजाइन और ट्रेड मार्क्स के नियंत्रक जनरल** (Controller General of Patents, Designs and Trade Marks) द्वारा जारी किया जाता है, जो कि **भौगोलिक संकेतकों का महापंजीयक** है।
  - GI को **बौद्धिक संपदा अधिकार के व्यापार संबंधित पहलुओं पर समझौते (Trade Related Aspects of Intellectual Property Rights: TRIPS)** के तहत कवर किया गया है।
  - GI टैग एक दशक के लिए वैध होता है, जिसके बाद इसे अगले 10 वर्षों के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है।

GI टैग प्राप्त उत्पाद

© Vision IAS

GI टैग	राज्य / संघ शासित प्रदेश	विशेषताएं
कश्मीरी केसर (Kashmir Saffron)	जम्मू और कश्मीर	• इसकी खेती जम्मू और कश्मीर के **करेवा (उच्च भूमि)** में की जाती है। • यह 1,600 मीटर से 1,800 मीटर की ऊंचाई पर उगाया जाने वाला विश्व में केसर की एकमात्र किस्म है। • प्राचीन संस्कृत साहित्य में, केसर को **'बहुकम'** कहा जाता है। • **विशेषताएं:** लंबे और मोटे वर्तिकाग्र, प्राकृतिक गहरा-लाल रंग, सुगन्धित व कड़वा स्वाद, रसायन मुक्त प्रसंस्करण तथा क्रोकिन (रंग बढ़ाने वाला), सफ़ारील (स्वाद) और पिक्रोकसिन (कड़ुवापन) की उच्च मात्रा। • **इसके तीन प्रकार हैं:** गुच्छी, लाच्छा और मोंगरा केसर। • ईरान केसर का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और **भारत दूसरे स्थान** पर आता है। • **जम्मू-कश्मीर के अन्य GI उत्पाद:** कश्मीरी पश्मीना, कश्मीरी सोज़ानी शिल्प, कानी शॉल, कश्मीर पेपर माची, कश्मीरी अखरोट की नक्काशी, खातमबंद और कश्मीरी हाथ से बुनी हुई कालीन।
चक-हाओ (मणिपुर का काला चावल) Chak-Hao (black rice of Manipur)	मणिपुर	• यह एक सुगंधित चिपचिपा चावल (scented glutinous rice) है, जिसकी खेती सदियों से मणिपुर में की जा रही है। एक विशेष प्रकार की सुगंध इसकी विशेषता है। • चक-हाओ का उपयोग पारंपरिक चिकित्सकों द्वारा **पारंपरिक चिकित्सा के रूप में** भी किया गया है। • इसमें चावल रेशेदार चोकर परत और उच्च कच्चे फाइबर मात्रा की उपस्थिति के कारण इसके पकने में **40-45 मिनट का सबसे लंबा समय लगता** है।
गोरखपुर टेराकोटा (Gorakhpur terracotta)	उत्तर प्रदेश	• यह सदियों पुरानी एक पारंपरिक कला शैली है, जिसमें कुम्हारों द्वारा विभिन्न जानवरों की आकृतियों का निर्माण किया जाता है, जैसे- घोड़े, हाथी, ऊँट, बकरी, बैल आदि। • यह **पूरा काम नंगे हाथों से किया जाता** है। इसमें कारीगरों द्वारा **प्राकृतिक रंग का उपयोग** किया जाता है, जिसमे लंबे समय तक चमक बनी रहती है। टेराकोटा की 1,000 से अधिक किस्में स्थानीय कारीगरों द्वारा डिजाइन की गई हैं।
सोहराई खोवर चित्रकला (Sohrai Khovar painting)	झारखंड	• यह झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थानीय आदिवासी महिलाओं के मध्य प्रचलित एक **पारंपरिक और अनुष्ठानिक भित्ति चित्र कला** है। • यह स्थानीय और प्राकृतिक रूप से उपलब्ध **विभिन्न रंगों की मिट्टी का उपयोग** करके स्थानीय फसल और विवाह समारोह के दौरान चित्रित की जाती है।

तेलिया रुमाल (Telia Rumal)	तेलंगाना 	• यह एक **जटिल हस्तनिर्मित कार्य** है, जो तीन विशेष रंगों - लाल, काले और सफेद - में सूती करघे के माध्यम से विभिन्न प्रकार के डिज़ाइन और रूपांकनों को प्रदर्शित करता है।
अरुंबवुर काष्ठ नक्काशी (Arumbavur Wood Carvings)	तमिलनाडु 	• 'अरुंबवुर की काष्ठ नक्काशी' मुख्य रूप से **पेरम्बलुर के कारीगरों** द्वारा संपादित की जाती है। यह नक्काशी **लिंगम, आम, प्रभूर्ज, वागई, माविलंगई, अठ्ठी (अंजीर), वेम्बु, वेंगई, सागौन, नीम और शीशम** के वृक्षों की लकड़ी के लट्ठों पर की जाती है। • शिल्पकारों द्वारा **मंदिरों के लिए काष्ठ के रथों**, **मूर्तियों**, **सजावटी वस्तुओं और लकड़ी** के कई प्रकार के अन्य उत्पादों का निर्माण किया जाता है। • इसमें शिल्पकार, **शिल्पशास्त्र में निर्धारित किए गए मूर्ति-विज्ञान के नियमों** का पालन करते हैं। • मंदिर के रथ, **अधिकतर इलुप्पाई से बने होते हैं**। इन रथों को कारीगरों द्वारा पारंपरिक उपकरणों का उपयोग करते हुए हाथों से निर्मित किया जाता है। • काष्ठ को उत्तम आकार प्रदान करने, छीलने और उस पर विभिन्न प्रतिमानों (पैटर्न) एवं विस्तृत विषयवस्तु की नक्काशी करने हेतु किसी भी मशीन का उपयोग नहीं किया जाता है। • काष्ठ की आपूर्ति, **त्रिची के निकटवर्ती पचमलाई पहाड़ियों** और **पेरम्बलुर क्षेत्र** एवं तंजावुर के कुंभकोणम क्षेत्र से होती है।
तंजावुर नेट्टी शिल्पकला (पिथ शिल्पकला) {Thanjavur Netti Works (pith works)}	तमिलनाडु 	• यह एक पारंपरिक शिल्प कला है, जिसे नेट्टी (पिथ) से तैयार किया गया है। **नेट्टी एक दलदली पादप है, जिसे एशिनोमेन एस्पेरा के नाम से जाना जाता है।** • बृहदेश्वर मंदिर, मालाओं, हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, दरवाजे पर लटकन और सजावटी वस्तुओं में नेट्टी शिल्प कला दृष्टिगोचर होती है। • नेट्टी शिल्प कला **तंजावुर, कुंभकोणम और पुडुकोट्टई** में प्रचलित है। • पिथ शिल्प कला से निर्मित आकृतियां रखरखाव के संबंध में संवेदनशील होती हैं, इसलिए इन्हें सामान्यतः कांच के बक्से के भीतर संरक्षित रखा जाता है। ये दिखने में हाथीदांत और संगमरमर के हस्तशिल्प के समान प्रतीत होती हैं।

© Vision IAS

कोविलपट्टी कदलाई मताई (Kovilpatti kadalai mittai)	**तमिलनाडु** 	• यह एक प्रकार की मिठाई (candy) है, जिसे मूंगफली द्वारा बनाया जाता है। इसे ऊपर से कसे हुए नारियल, गुलाबी, हरे और पीले रंग के टॉप्स के द्वारा सजाया जाता है। • इसे **सभी प्रकार के प्राकृतिक अवयवों (ingredients)** जैसे कि पारंपरिक और विशेष 'वेल्लम' (गुड़) और मूंगफली का उपयोग करके बनाया जाता है तथा **थामिराबरानी नदी के जल का उपयोग** किया जाता है, जो प्राकृतिक रूप से इसके स्वाद को बढ़ाता है।

सुर्ख़ियों में रहे अन्य GI टैग

वाड़हाकुलम अनानास (Vazhakulam pineapples)

- वर्ष 2009 में केरल के वाड़हाकुलम अनानास की मॉरीशस किस्म ने **भौगोलिक संकेतक (GI) टैग** प्राप्त किया था।
- इसकी कृषि केरल के एर्नाकुलम, कोट्टायम, पथनमथिट्टा और **इडुक्की जिले के कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में की जाती है।**
- वाड़हाकुलम अनानास की अपनी **विशिष्ट सुगंध, स्वाद तथा शर्करा की उच्च मात्रा और कम अम्लता के कारण मिठास होती** है। इसकी शेल्फ लाइफ (shelf life) लगभग 10-15 दिनों की होती है।

टोडा कढ़ाई (Toda Embroidery)

- यह तमिलनाडु के नीलगिरी में टोडा ग्रामीणों के मध्य प्रचलित कढ़ाई कला है।
- इसे वर्ष 2013 में GI टैग मिला था।
- इसे स्थानीय रूप से "पुखूर (Pukhoor)" के रूप में भी जाना जाता है और इसे विशेष रूप से टोडा समुदाय की महिलाओं द्वारा बनाया जाता है।
- यह सूती कपड़े की पृष्ठभूमि पर लाल और काले धागे की कढ़ाई द्वारा बनाई गई है। यह उत्कृष्ट परिकृष्टता के साथ वस्त्र पर उभरी हुई कढ़ाई के रूप में दिखाई देती है।

10.2. विरासत प्रबंधन (Heritage Management)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, नीति आयोग ने **'भारत में विरासत स्थलों के प्रबंधन में सुधार (Improving Heritage Management in India)'** पर एक कार्य समूह द्वारा जारी रिपोर्ट को प्रकाशित किया है।

संक्षिप्त विवरण

- देश भर में लगभग **5 लाख से अधिक विरासत स्थल एवं स्मारक हैं।** इनमें 3,691 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India-ASI) द्वारा संरक्षित स्मारक, 38 यूनेस्को (UNESCO) विश्व विरासत स्थल, 6,000 से अधिक राज्य पुरातत्व निकायों द्वारा संरक्षित स्मारक और 4 लाख से अधिक धार्मिक विरासत स्थल सम्मिलित हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India: ASI)

- यह देश में सांस्कृतिक स्मारकों के संरक्षण और परिरक्षण तथा उनके पुरातात्विक अनुसंधान हेतु उत्तरदायी एक प्रमुख संस्था है।
- इसकी स्थापना 1861 ई. में हुई थी।
- यह **संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक संलग्न कार्यालय** है।
- ASI द्वारा किए जाने वाले महत्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं: अन्वेषण/उत्खनन; स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण; पुरावशेषों के व्यापार का पंजीकरण और विनियमन; रखरखाव और संरक्षण एवं पर्यावरणीय विकास; पुरातत्व स्थल के संग्रहालय; अनुसंधान और प्रकाशन; पुरालेखीय सर्वेक्षण (Epigraphical Surveys) (संस्कृत, द्रविड़, अरबी और फारसी); पुरातत्व संस्थान।
- **हाल ही में, संस्कृति मंत्रालय ने ASI के 7 नए सर्किल की घोषणा की है।**
  - नए सर्कल, यथा- **त्रिची, रायगंज, राजकोट, जबलपुर, झांसी, मेरठ और हम्पी** हैं।
  - इससे पहले संपूर्ण देश में ASI के 29 सर्किल थे।

- भारतीय संविधान में इन स्मारकों, सांस्कृतिक विरासतों और पुरातात्विक स्थलों पर क्षेत्राधिकार को निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है:
  - **संघ:** प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्मारक और पुरातात्विक स्थल तथा अवशेष, जिन्हें संसद द्वारा राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया जाता है।
    - इस प्रावधान के तहत केंद्र सरकार द्वारा **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम (Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains: AMASR), 1958** को अधिनियमित किया गया है।
    - **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम (Antiquities and Art Treasures Act), 1972** को पुरावशेषों और बहुमूल्य कलाकृतियों के निर्यात व्यापार को विनियमित करने एवं पुरावशेषों की तस्करी तथा उनके कपटपूर्ण संव्यवहार (fraudulent dealings) के निवारण हेतु अधिनियमित किया गया था।
  - **राज्य:** राज्य द्वारा नियंत्रित या वित्तपोषित पुस्तकालय, संग्रहालय या वैसी ही अन्य संस्थाएं; तथा राष्ट्रीय महत्व के रूप में घोषित (संसद द्वारा निर्मित विधि द्वारा या उसके अधीन) प्राचीन और ऐतिहासिक संस्मारकों एवं अभिलेखों से भिन्न अन्य प्राचीन और ऐतिहासिक संस्मारक व अभिलेख।
  - **समवर्ती (Concurrent):** उपर्युक्त दोनों स्थितियों के अतिरिक्त, विधि और संसद द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व के पुरातात्विक स्थलों एवं अवशेषों को छोड़कर ऐसे पुरातात्विक स्थल और अवशेष जिन पर संघ तथा राज्यों दोनों की समवर्ती अधिकारिता है।

भारत में विरासत के संरक्षण एवं प्रबंधन में शामिल गैर-सरकारी संगठन (NGOs)

- **आगा खान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर (Aga Khan Trust for Culture: AKTC) :** यह विकासशील देशों में समुदायों के भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पुनरुद्धार पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत न्यास (Indian National Trust for Art and Cultural Heritage: INTACH):** यह भारत की विरासत से संबंधित जागरूकता सृजन और उनके संरक्षण में अग्रणी भूमिका का निर्वहन करता है।
- **इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मोनुमेंट्स एंड साइट्स (ICOMOS):** यह सांस्कृतिक विरासत स्थलों के संरक्षण और परिरक्षण का कार्य करता है। यह इस प्रकार का एकमात्र वैश्विक NGO है, जो सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु सिद्धांतों, कार्य-पद्धतियों और वैज्ञानिक तकनीकों के अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करने के प्रति समर्पित है।
  - यह सांस्कृतिक विरासत के संबंध में (विशेष रूप से विश्व विरासत अभिसमय के कार्यान्वयन के संबंध में) यूनेस्को के लिए एक सलाहकार निकाय भी है।
  - वर्ष 1964 के **वेनिस चार्टर** के परिणामस्वरूप इसे वर्ष 1965 में **वारसॉ (पोलैंड)** में स्थापित किया गया था।
  - इसका मुख्यालय **पेरिस, फ्रांस** में है।
- **वर्ल्ड मोनुमेंट्स फंड (WMF):** यह भारत में विरासत संरक्षण परियोजनाओं और जागरूकता कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करता है। **WMF इंडिया** की स्थापना वर्ष 2015 में हुई थी। यह संबद्ध परियोजनाओं के प्रबंधन में सहायता प्रदान करता है तथा WMF में भारत का प्रतिनिधित्व करता है।

अन्य संबंधित आँकड़े

- विश्व आर्थिक मंच द्वारा जारी **विश्व यात्रा और पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक (World Travel and Tourism Competitiveness Index), 2019 में भारत 34वें स्थान पर** रहा।

- **अन्य संवैधानिक प्रावधान:**
  - भारतीय संविधान का **अनुच्छेद 253** संसद को किसी अन्य देश या देशों के साथ की गई किसी संधि, करार या अभिसमय अथवा किसी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, संगम या अन्य निकाय में किए गए किसी विनिश्चय के कार्यान्वयन के लिए भारत के संपूर्ण राज्यक्षेत्र या उसके किसी भाग के लिए कोई विधि बनाने हेतु प्राधिकृत करता है।
  - **अनुच्छेद 51 A(f)** के तहत हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझना और उसका परिरक्षण करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

विरासत के संरक्षण हेतु भारत सरकार की पहलें

- **राष्ट्रीय विरासत शहर विकास एवं संवर्धन योजना (ह्रदय) (National Heritage City Development and Augmentation Yojana: HRIDAY):** इसका उद्देश्य भारत में विरासत स्थलों की विशिष्ट विशेषताओं का संरक्षण और उनका पुनरुद्धार करना है।
- **राष्ट्रीय तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान (प्रसाद) (Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual**

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI © Vision IAS

Heritage Augmentation Drive: PRASHAD): इसके तहत निर्धारित तीर्थ स्थलों (40 से अधिक) का विकास और सौंदर्यीकरण किया जाना है।
  - इस योजना का लक्ष्य अवसंरचना जैसे कि प्रवेश बिंदु (सड़क, रेल और जल परिवहन), अंतिम बिंदु तक कनेक्टिविटी, बुनियादी पर्यटन सुविधाओं, जैसे- सूचना/द्विभाषी केंद्र, ATM/मुद्रा विनिमय, परिवहन हेतु पर्यावरण-अनुकूल साधन, ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों से क्षेत्र में प्रकाश की व्यवस्था, पार्किंग आदि का विकास करना है।
- **स्वच्छ आइकॉनिक स्थल:** स्वच्छ भारत मिशन के तहत पर्यटकों के अनुभवों में वर्धन करने के लिए स्मारकों को आदर्श 'स्वच्छ पर्यटन स्थल' के रूप में रूपांतरित करना।
- **एडॉप्ट ए हेरिटेज'- "अपनी धरोहर, अपनी पहचान":** यह परियोजना संपूर्ण देश में विरासत/प्राकृतिक/पर्यटन स्थलों पर पर्यटन संबंधी सुविधाओं को योजनाबद्ध और चरणबद्ध तरीके से विकसित करने और इन्हें पर्यटकों के अनुकूल बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राज्यों /संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों द्वारा किया जा रहा एक सहयोगात्मक प्रयास है।
  - इस योजना के तहत निजी क्षेत्रक (जैसे- लाल किले के लिए डालमिया समूह का योगदान) की संलग्नता के साथ विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान की जाएगी।
  - इस परियोजना का उद्देश्य सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रक की कंपनियों, कॉर्पोरेट नागरिकों, गैर-सरकारी संगठनों, व्यक्तियों और अन्य हितधारकों को इन स्थलों पर बुनियादी और उन्नत पर्यटन संबंधी सुविधाओं का विकास करने और उनका उन्नयन करने का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करना है।
  - इन संगठनों को उनकी सहयोगात्मक पहल के लिए "स्मारक मित्र" (Monument Mitras) के रूप में जाना जाएगा।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा **स्वदेश दर्शन योजना** के तहत विषय-आधारित (theme-based) पर्यटन परिपथों और विश्व स्तरीय अवसंरचना को विकसित किया जा रहा है।
- **अतुल्य भारत 2.0 अभियान, (2018):** यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के संवर्धन हेतु एक अभियान है।
- **आदर्श स्मारक:** ASI ने आदर्श स्मारकों के रूप में विकसित किए जाने वाले 100 स्मारकों की पहचान की है।
- **प्रोजेक्ट मौसम:** हिंद महासागरीय क्षेत्र से संबद्ध देशों के मध्य संप्रेषणों को पुनः संयोजित और पुनः स्थापित करना, जिससे उनके राज्यक्षेत्रीय सामुद्रिक परिवेश में सांस्कृतिक मूल्यों और सरोकारों के बारे में समझ में वृद्धि होगी।

10.3. कुशीनगर (Kushinagar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **उत्तर प्रदेश के कुशीनगर विमान पत्तन को अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन** के रूप में घोषित करने को स्वीकृति प्रदान की है।

कुशीनगर के बारे में

- कुशीनगर **एक महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थस्थल** है। गौतम बुद्ध की **महापरिनिर्वाण (मोक्ष)** स्थली होने के कारण यह विश्व विख्यात है। यह **बौद्ध सर्किट** का भी एक भाग है।
  - बौद्ध धर्म में महापरिनिर्वाण का तात्पर्य **निर्वाण की परम अवस्था (अनंत, परम शांति और आनंद)** से है, जो एक प्रबुद्ध मानव के देह त्याग के पश्चात् प्राप्त होती है।

- इस शहर के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों में शामिल हैं: **महापरिनिर्वाण स्तूप** और **मठ** {इस मठ में 1500 वर्ष प्राचीन एक शोभायमान शयन (reclining) अवस्था में महात्मा बुद्ध की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है} और **मुक्तबंधन स्तूप** (बुद्ध के अंतिम संस्कार से संबंधित स्थल)।
- प्रथम बार 1877 ई. में **सर अलेक्जेंडर कनिंघम** द्वारा कुशीनगर के इन ऐतिहासिक स्थलों की पहचान की गई थी। **कनिंघम** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India: ASI) के प्रथम महानिदेशक थे।

10.4. करतारपुर कॉरिडोर (Kartarpur Corridor)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, करतारपुर गलियारे के शुभारंभ की पहली वर्षगांठ मनाई गई।

करतारपुर कॉरिडोर के बारे में

- ज्ञातव्य है कि नवंबर 2019 में **गुरु नानक देव जी की 550वीं जयंती की पूर्व संध्या पर करतारपुर गलियारा खोला** गया था।
- यह गलियारा **गुरदासपुर जिले (पंजाब) में स्थित डेरा बाबा नानक** तीर्थ को **करतारपुर (पाकिस्तान) के गुरुद्वारा दरबार साहिब** से जोड़ता है।
- इस कॉरिडोर की लंबाई 4 कि.मी. (अंतर्राष्ट्रीय सीमा के दोनों ओर लगभग 2-2 कि.मी.) है। यह कॉरिडोर **रावी नदी** से होकर गुजरता है।
- गुरुद्वारा दरबार साहिब का निर्माण वर्ष 1921-1929 के मध्य पटियाला के महाराजा द्वारा कराया गया था और ऐसा माना जाता है कि **गुरु नानक देव** ने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष यहीं व्यतीत किए थे।

गुरु नानक देव जी के बारे में

- गुरु नानक देव सिख धर्म के **संस्थापक** एवं **प्रथम गुरु** (आदि गुरु) थे।
- उनका जन्म वर्ष 1469 में **लाहौर** के निकट **राय-भोए-दी-तलवंडी** (आगे चलकर **ननकाना साहिब** के रूप में पुनःनामकरण) में हुआ था। उनकी मृत्यु करतारपुर, पाकिस्तान में हुई थी।
- गुरु नानक और सिख धर्म मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन की निर्गुण (निराकार ईश्वर) परंपरा से प्रभावित थे।
- उनका मानना था कि ईश्वर निराकार **(निरंकार)** है, तथा एक ही ईश्वर **(एक ओंकार)** है, जो अपने द्वारा सृजित प्रत्येक प्राणियों में निवास करता है और सभी मनुष्य बिना किसी अनुष्ठान या पुजारी के ईश्वर तक प्रत्यक्ष पहुंच स्थापित कर सकते हैं।
- गुरु नानक देव ने सिख धर्म के 3 स्तंभों की स्थापना की एवं उन्हें औपचारिक स्वरूप प्रदान किया:
  - **नाम जपना:** ईश्वर के नाम और सद्गुणों के गहन अध्ययन तथा उनकी समझ के पश्चात् पाठ, जप, गायन और निरंतर स्मरण के माध्यम से ईश्वर का ध्यान करना।
  - **किरत करनी:** ईमानदारी द्वारा शारीरिक और मानसिक प्रयास से उपार्जन करना तथा दुःख और सुख दोनों को ईश्वर का उपहार एवं आशीर्वाद मानकर स्वीकार करना।
  - **वंड छकना:** सिखों को वंड छकना के व्यवहार द्वारा समुदाय के भीतर अपने धन को साझा करने के लिए कहा गया- **"एक दूसरे के साथ साझा एवं उपभोग करें"।**

10.5. लद्दाख की भाषा, संस्कृति और भूमि की रक्षा के लिए समिति का गठन (Committee to Protect Language, Culture & Land of Ladakh)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्र सरकार ने केंद्रीय गृह राज्य मंत्री की अध्यक्षता में लद्दाख की भाषा, संस्कृति और भूमि की रक्षा के लिए समिति गठित करने का निर्णय किया है। इस समिति के गठन का महत्व इस संदर्भ में परिलक्षित होता है कि स्थानीय लोगों ने लद्दाख को **संविधान की 6वीं अनुसूची में शामिल करने की मांग** की है, ताकि इसकी विशिष्ट पहचान की रक्षा की जा सके।

VISION IAS

अन्य संबंधित तथ्य:

- **लद्दाखी जनसंख्या मुख्य रूप से** तिब्बत और मध्य एशिया के धर्म एवं संस्कृति के समान **बौद्ध** है।
  - फाह्यान ने लद्दाख को किआ-छा और ह्वेनसांग ने मा-लो-फा के रूप में संदर्भित किया है।
  - **बोली जाने वाली भाषाएं:** लद्दाखी, तिब्बती, उर्दू व बल्टि।
  - **संगीत एवं नृत्य:** चाम या मुखौटा नृत्य, लाहरना, जबरो, स्पावो, शोंडोल, चार्टसेस और मेंटॉक स्टैनमो।
    - लद्दाख के लोक संगीत में **धार्मिक जप** (जैसे यांग जप) शामिल है। इन लोक संगीत और नृत्यों के प्रदर्शन में उपयोग किए जाने वाले वाद्योपकरण दमन, सुरना एवं पिवांग हैं।
    - **लद्दाख के बौद्ध जप को** यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया गया है।
  - **सोवा-रिग्पा:** यह भगवान बुद्ध द्वारा प्रयुक्त और प्रचलित एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली है। इसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के लिए राष्ट्रीय सूची में शामिल किया गया है।
  - **प्रसिद्ध मठ:** लामायुरु, हेमिस, थिकसे, शी, अलची, लिकिर, फयांग।
  - **प्रसिद्ध त्यौहार:** लोसर, हेमिस त्सू और साका डावा।

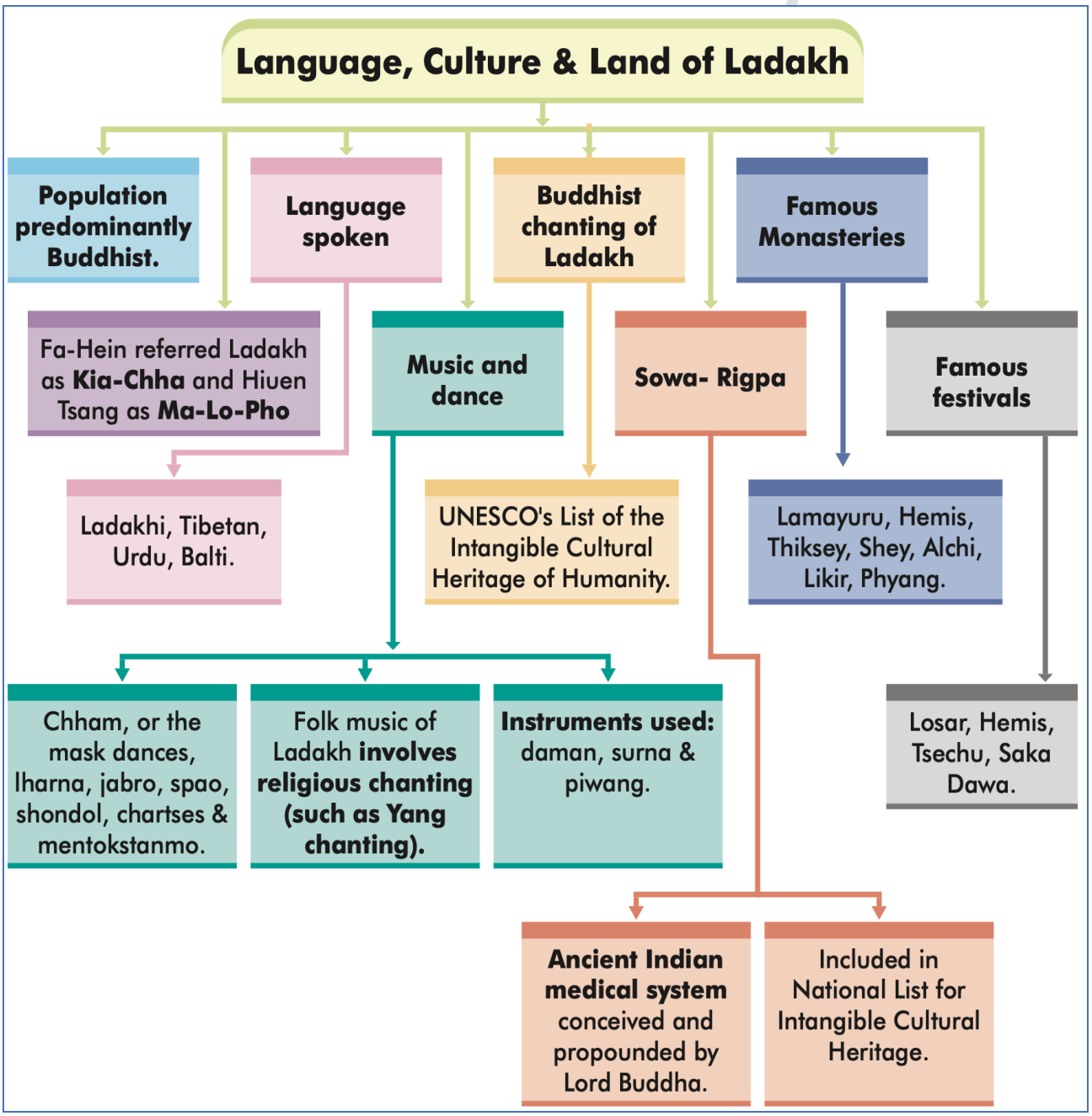

10.6. साहित्य में नोबेल पुरस्कार (Nobel Prize in Literature)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ष 2020 के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार **लुईस ग्लूक** को "उनकी सुस्पष्ट काव्य अभिव्यक्ति के लिए प्रदान किया गया है, जो सादगीपूर्ण सुंदरता के साथ व्यक्तिगत अस्तित्व को सार्वभौमिक बनाती है।"

लुईस ग्लुक के बारे में

- साहित्य में नोबेल पुरस्कार **रॉयल स्वीडिश अकादमी** द्वारा एक लेखक के संपूर्ण रचनात्मक योगदान के लिए दिया जाता है तथा इसे संभवत: **विश्व का सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार** माना जाता है।
- **लुईस ग्लुक,** वर्ष 1996 में पोलिश (पोलैंड देश के मूल नागरिक) लेखिका **विस्साव शिम्बोर्स्का (Wisława Szymborska)** के उपरांत नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम महिला कवि हैं।
- वर्ष 1943 में न्यूयॉर्क शहर में जन्मी, ग्लूक ने **12 कविता संग्रह और निबंध की 2 पुस्तकें** लिखी हैं।
- उन्होंने वर्ष 1992 में अपनी कृति **'द वाइल्ड आइरिस'** के लिए **वर्ष 1993 में काव्य श्रेणी में पुलित्जर पुरस्कार** भी प्राप्त किया था।
- उनके विषयों में **बाल्यावस्था, पारिवारिक जीवन, आघात, मृत्यु और उपचार** शामिल हैं।

नोबेल पुरस्कार के बारे में

- अल्फ्रेड नोबेल की **वसीयत में नामित** नोबेल पुरस्कार **भौतिकी, रसायन विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान या चिकित्सा, साहित्य और शांति** के क्षेत्र में दिया जाता है।
- यह **मरणोपरांत प्रदान नहीं** किया जाता है तथा **एकल श्रेणी के लिए अधिकतम तीन व्यक्तियों** को प्रदान किया जाता है।
- अल्फ्रेड नोबेल ने विशेष रूप से उन संस्थानों को नामित किया, जो पुरस्कारों की स्थापना के लिए उत्तरदायी थे:
  - भौतिकी और रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार के लिए **रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज**,
  - शरीर क्रिया विज्ञान या चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार के लिए **कैरोलिंस्का संस्थान (Karolinska Institute)**,
  - साहित्य में नोबेल पुरस्कार के लिए **रॉयल स्वीडिश अकादमी,** तथा
  - नोबेल शांति पुरस्कार के लिए **नॉर्वे की संसद {स्टॉर्टिंग (Storting)}** द्वारा चयनित पांच व्यक्तियों की समिति।
- रवींद्रनाथ टैगोर वर्ष 1913 में गीतांजलि के लिए साहित्य में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम गैर-यूरोपीय थे।

10.7. सुर्ख़ियों में रही जनजातियाँ (Tribes in News)

© Vision IAS

कतकारी जनजाति (Katkari Tribe)	• ये मुख्य रूप से **महाराष्ट्र और गुजरात** के कुछ स्थानों में अधिवासित हैं। ○ गृह मंत्रालय के वर्गीकरण के अनुसार कतकारी **75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG)** में से एक है। • कतकारी समुदाय के आदिवासी युवाओं का एक समूह ट्राइफेड (TRIFED) द्वारा संचालित **प्रधान मंत्री वन धन योजना** के माध्यम से **गिलोय (गुडूची)** का विपणन करने के लिए एकजुट हुआ है। ○ गिलोय एक औषधि है, जिसका उपयोग **वायरल फीवर और मलेरिया के साथ-साथ मधुमेह** के उपचार में भी किया जाता है। इस औषधि की फार्मा कंपनियों में अत्यधिक मांग है।
सिद्दी समुदाय (Siddi Community)	• सिद्दी समुदाय को **कर्नाटक विधान मंडल में अपना प्रथम प्रतिनिधि** प्राप्त हुआ है। • ये भारत और पाकिस्तान में अधिवासित एक नृजातीय (ethnic) समूह हैं। • ये उत्तर-पूर्वी और पूर्वी अफ्रीका के अफ्रीकी लोगों (अफ्रीकी मूल) के वंशज हैं, जिन्हें गुलाम, सैनिक या सेवक के रूप में औपनिवेशिक काल में भारत लाया गया था। • भारत में, ये **गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश** के तटवर्ती क्षेत्रों में अधिवासित हैं। • **वर्तमान में इनकी अनुमानित जनसंख्या** 20,000 से 55,000 के मध्य है। • **धर्म:** सिद्दी प्रमुख रूप से सूफी मुसलमान हैं। हालांकि, इनमें से कुछ हिंदू और रोमन कैथोलिक ईसाई भी हैं।
थारू जनजाति (Tharu Tribe)	• हाल ही में, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अपनी नृजातीय **थारू जनजाति** की अनूठी संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु एक योजना को प्रारंभ किया गया है। • **थारू जनजातियों के बारे में:** ○ थारू लोग दक्षिणी नेपाल और उत्तरी भारत के तराई क्षेत्र में अधिवासित एक नृजातीय समूह हैं। भारत में, वे मुख्यतः उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रों में अधिवासित हैं। ○ उनमें से अधिकांश वनवासी और कुछ कृषक हैं। ○ इनके द्वारा भाषा के रूप में थारू (इंडो-आर्यन उपसमूह की एक भाषा) की विभिन्न बोलियाँ, हिंदी की कुछ बोलियाँ, उर्दू और अवधी भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। ▪ मध्य नेपाल में, इनके द्वारा भोजपुरी के एक संस्करण का प्रयोग किया जाता है, जबकि पूर्वी नेपाल में, ये मैथिली भाषा के एक संस्करण का प्रयोग करते करते हैं। ○ थारु लोग **भगवान शिव को महादेव के रूप में पूजते हैं,** और उन्हें "नारायण" कहते हैं, उन्हें धूप, वर्षा और फसल के प्रदाता मानते हैं। ○ थारू जनजाति के लोगों द्वारा **प्रत्येक वर्ष श्रावण के महीने में 'बरना' त्यौहार** का आयोजन किया जाता है। इसके दौरान, वे घर के अंदर रहते हैं ताकि पौधों को कोई नुकसान न पहुंचे। यह त्यौहार प्रकृति के प्रति उनके प्रेम और वनों के संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ○ स्वामित्व अधिकार के सम्बन्ध में थारू महिलाओं की स्थिति बेहतर है।
बोंडा जनजाति (Bonda Tribe)	• बोंडा, एक **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)** है। ये ओडिशा के मलकानगिरि जिले के पर्वतीय अंचलों में छोटी-छोटी कुटीरों के रूप में स्थापित बस्तियों में निवास करते हैं। • बोंडा समुदाय के लोग **मातृसत्तात्मक समाज का अनुसरण करते हैं**। वे अभी भी अपनी भाषा **रेमो (Remo)** का उपयोग करते हैं। • वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बोंडा जनजाति के सदस्यों की संख्या लगभग 12,000 है, जो अत्यल्प है।
ग्रेट अंडमानी जनजाति (Great Andamanese tribe)	• ग्रेट अंडमानी अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में निवास करने वाले पांच **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों** (PVTG) में से एक हैं। अन्य PVTG समूह हैं: जारवा, ओंग, शॉम्पेन और सेंटिनेलीज़।
मालधारी जनजाति (Maldhari tribe)	• प्रोजेक्ट लायन (सिंह परियोजना) के अंतर्गत **गिर संरक्षण क्षेत्रों** के भीतर से **मालधारी जनजाति** के लोगों को दूसरे स्थान पर बसाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है।

	• मालधारी जनजाति **गुजरात में चरवाहों का एक समुदाय है।** वे नेस नामक बस्तियों में रहते हैं और अपनी वाटर बफेलो (जल भैंसों) का दूध बेचकर अपना जीवनयापन करते हैं। • मालधारी जनजाति के लोग विगत हजारों वर्षों से गिर राष्ट्रीय उद्यान के **बन्नी घास के मैदान वाले आरक्षित क्षेत्र (Banni Grasslands Reserve area)** में निवास करते आए हैं।
'मिया' समुदाय ('Miya' community)	• हाल ही में, **असम में** "चार-चपोरियों में रहने वाले लोगों की **संस्कृति और विरासत" को दर्शाने वाले "मिया संग्रहालय"** को शंकरदेव कलाक्षेत्र परिसर में शामिल करने के एक प्रस्ताव ने विवाद को उत्पन्न किया है। ○ 'मिया' समुदाय में **पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश)** से असम में प्रवासित **मुस्लिम प्रवासियों के वंशज** शामिल हैं। • चार-चपोरियाँ ब्रह्मपुत्र के स्थान परिवर्तित कर रहे नदी द्वीप हैं और मुख्य रूप यहाँ बंगाली मूल के मुस्लिम निवास करते हैं (जिन्हें 'मिया' कहा जाता है)। ○ **चार एक तैरता हुआ द्वीप** है, जबकि चपोरी बाढ़ के प्रति सुभेद्य नदी के निम्न तट हैं।
सेंटीनली और ग्रेट अंडमानी जनजाति (Sentinelese and Great Andamanese)	• **मानव विज्ञान सर्वेक्षण** ने वाणिज्यिक गतिविधियों के कारण इन 2 लुप्तप्राय समूहों के लिए संकट की चेतावनी जारी की है। • **सेंटीनली और ग्रेट अंडमानी** दोनों अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के **5 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) में से एक** हैं। अन्य PVTG हैं: **ओंग, जारवा और शोंपेन।** • **सेंटीनली जनजाति उत्तरी सेंटीनल द्वीप** पर **लगभग 50 से 100 की जनसंख्या** में अधिवासित है और बाह्य विश्व से इनका **संपर्क लगभग नगण्य** है। • अंडमान में अन्य **PVTGs के विपरीत, ग्रेट अंडमानी जनजाति, सामान्य आबादी के साथ संपर्क** में हैं।
मलयाली जनजातियाँ (Malayali tribes)	• **ट्राइब्स इंडिया के संग्रह में** तमिलनाडु की मलयाली जनजातियों के विशिष्ट शहद **जाइंट रॉक बी हनी** (Giant Rock Bee Honey) को **शामिल किया गया है।** • मलयाली जनजातीय समूह **उत्तरी तमिलनाडु में पूर्वी घाट से संबंधित है।** ये जनजातीय लोग सामान्य रूप से पर्वतीय किसान हैं और विभिन्न प्रकार के मोटे अनाजों का उत्पादन करते हैं। • मलयाली लोग मूल रूप से कृषि करने वालों की वेल्लाल जाति से संबंधित थे। ये जनजातीय लोग लगभग दस पीढ़ी पूर्व (जब दक्षिणी भारत में मुस्लिम शासन था) **पवित्र शहर कांची से पहाड़ियों की ओर पलायन कर गए थे।**
चकमा और हजोंग (Chakmas and Hajongs)	• उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय ने अरुणाचल प्रदेश सरकार को इन समुदायों को कोविड-19 राहत कार्यक्रम में शामिल करने का निर्देश दिया है। • चकमा और हजोंग एक नृजातीय समुदाय है, जो चटगांव के पर्वतीय क्षेत्रों में रहते थे। इनमें से अधिकांश लोग **बांग्लादेश** में निवासित हैं। • **चकमा मुख्य रूप से बौद्ध हैं, जबकि हजोंग हिंदू हैं।** वे पूर्वोत्तर भारत, पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश और म्यांमार में निवास करते हैं।
मनकिडिया जनजाति (Mankidia tribe)	• हाल ही में **सिमलीपाल टाइगर रिज़र्व (STR)** में मनकिडिया जनजाति के **वन अधिकारों के मुद्दों के संबंध में** जनजातीय कार्य मंत्रालय के तहत **पांडा समिति** का गठन किया गया। • मनकिडिया, ओडिशा में 13 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (Particularly Vulnerable Tribal Groups: PVTG) में से एक है। • उनकी आजीविका मुख्य रूप से रस्सी बनाने के कार्य पर निर्भर है। वे ये रस्सियां STR में व्यापक पैमाने पर उपलब्ध सियाली रेशों (siali fibre) से बनाते हैं। • ज्ञातव्य है कि **अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006** (संक्षेप में वन अधिकार अधिनियम, 2006) के तहत उन्हें STR के भीतर निवास के अधिकारों से वंचित कर दिया गया था।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI © Vision IAS

10.8. पुरस्कार और अवार्ड्स (Prize and Awards)

पुरस्कार	विशेषताएं/विवरण
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (Ramon Magsaysay Awards)	• कोरोना वायरस महामारी के कारण इस वर्ष के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार को रद्द कर दिया गया है। • इसे एशियाई नोबेल पुरस्कार के रूप में जाना जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 1957 में हुई थी। • इन पुरस्कारों का नाम **फिलीपींस गणराज्य के तीसरे राष्ट्रपति रेमन मैग्सेसे के नाम** पर रखा गया है। • यह पुरस्कार पारंपरिक रूप से एशिया में निम्नलिखित **पाँच श्रेणियों** वाले (सरकारी सेवा; सार्वजनिक सेवा; सामुदायिक नेतृत्व; पत्रकारिता, साहित्य और रचनात्मक संचार कला; और शांति और अंतर्राष्ट्रीय समझ) व्यक्तियों या संगठनों को प्रत्येक वर्ष प्रदान किया जाता था। • हालांकि, वर्ष 2009 के बाद से रेमन मैग्सेसे अवार्ड फाउंडेशन द्वारा प्रतिवर्ष **इमर्जेंट लीडरशिप क्षेत्र** हेतु विजेताओं का चयन किया जाता है।
पुलित्ज़र पुरस्कार 2020 (Pulitzer Prize 2020)	• जम्मू और कश्मीर के तीन फोटो जर्नलिस्ट - चन्नी आनंद, मुख्तार खान और डार यासीन- वर्ष 2020 के पुलित्ज़र पुरस्कार विजेताओं में से एक हैं। • पुलित्ज़र पुरस्कार **पत्रकारिता और कला** (समाचार-पत्र, पत्रिका एवं ऑनलाइन पत्रकारिता, फोटो जर्नलिज्म व साहित्य) की **22 श्रेणियों में** प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। • यह पुरस्कार **कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा प्रशासित** किया जाता है। इसका नाम एक अमेरिकी समाचार-पत्र के प्रकाशक जोसेफ पुलित्ज़र के नाम पर रखा गया है और यह वर्ष **1917 से** दिया जा रहा है।
गांधी शांति पुरस्कार (Gandhi Peace Prize: GPP)	• सरकार ने वर्ष 2020 के लिए **नामांकन प्राप्त करने की अंतिम तिथि 15 जून तक बढ़ा दी है।** • यह **संस्कृति मंत्रालय** द्वारा **ऐसे व्यक्तियों, संघों, संस्थाओं या संगठनों** को दिया जाने वाला वार्षिक पुरस्कार है, जिन्होंने **शांति, अहिंसा और मानवीय कष्टों के निवारण हेतु** निस्वार्थ भाव से कार्य किया होता है। • यह पुरस्कार वर्ष 1995 में स्थापित किया गया था तथा राष्ट्रीयता, नस्ल, भाषा, जाति, पंथ या लिंग के भेदभाव के बिना **सभी व्यक्तियों को** प्रदान किया जाता है। • **GPP की जूरी (Jury), प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली एक उच्च स्तरीय समिति होती है।**

10.9. खेलो इंडिया स्टेट सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस (Khelo India State Centres of Excellence: KISCE)

सुर्ख़ियों में क्यों?

खेल मंत्रालय मंत्रालय द्वारा अपने फ्लैगशिप, **खेलो इंडिया - नेशनल प्रोग्राम फॉर डेवलपमेंट ऑफ स्पोर्ट्स स्कीम** के तहत **'खेलो इंडिया स्टेट सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (KISCE)'** की स्थापना की जाएगी।

विवरण

- **उद्देश्य:** राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों में मौजूदा प्रशिक्षण केंद्रों को वैश्विक मानक के अनुरूप बनाना। प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र में मौजूदा प्रशिक्षण केंद्रों में से एक को खेलो इंडिया योजना के वर्टिकल खेलो भारत राज्य उत्कृष्टता केंद्रों (State Level Khelo India Centre: SLKIC) के तहत KISCE के रूप में नामित किया जाएगा।
- पहले चरण में, **मंत्रालय ने भारत के आठ राज्यों** अर्थात् कर्नाटक, ओडिशा, केरल और तेलंगाना तथा अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम और नागालैंड जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में **सरकारी स्वामित्व वाले ऐसे खेल सुविधा केन्द्रों की**

खेलो इंडिया योजना के बारे में

- भारत में प्रचलित सभी तरह के खेलों के लिए सुदृढ़ फ्रेमवर्क स्थापित कर जमीनी स्तर पर भारत में खेल-कूद की संस्कृति को पुनर्जीवित करने तथा भारत को खेल-कूद के क्षेत्र में एक महान राष्ट्र के रूप में स्थापित करने हेतु प्रारम्भ किया गया है।
- **उद्देश्य**
  - संरचित वार्षिक खेल प्रतियोगिता आयोजित करना तथा युवाओं की सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
  - इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभा की पहचान करना।
  - मौजूदा और नए बुनियादी ढांचे के माध्यम से प्रतिभा का मार्गदर्शन और विकसित करना।
  - विभिन्न स्तरों पर खेल अवसंरचना का निर्माण करना।
- इस योजना में वस्तुतः **तीनों योजनाओं** राजीव गांधी खेल अभियान (RGKA), शहरी खेल अवसंरचना योजना (USIS), राष्ट्रीय खेल प्रतिभा खोज योजना (NSTSS) **का विलय** कर दिया गया है।

पहचान की है जिन्हें खेलो इंडिया के स्टेट सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस (KISCE) में अपग्रेड किया जाएगा।

- मौजूदा केंद्र को KISCE में अपग्रेड करने के क्रम में सरकार निम्नलिखित घटकों के लिए **'वायबिलिटी गैप फंडिंग'** को विस्तारित किया जाएगा:
  - संबंधित केंद्र में अभ्यास किए जाने वाले खेल संबंधी विषयों (sports disciplines) के लिए खेल विज्ञान और प्रौद्योगिकी का समर्थन करना।
  - खेल उपकरण, विशेषज्ञ कोच और उच्च प्रदर्शन वाले प्रबंधकों की आवश्यकता के अंतराल को समाप्त करना।
- **कार्यान्वयन एजेंसी:** संबंधित राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के खेल विभाग।
- **वित्तीय सहायता:** सभी पात्र केंद्रों को चिन्हित KISCE के लिए वार्षिक अनुदान प्रदान किया जाएगा।
- यह परियोजना, ओलंपिक में उत्कृष्ट योगदान हेतु भारतीय प्रयासों का एक भाग है।

10.10. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियाँ (Other Important News)

स्वदेशी मैंगो हेरिटेज एरिया (Indigenous Mango Heritage Area)	• हाल ही में, केरल के कन्नूर शहर में **कन्नपुरम पंचायत** को स्वदेशी मैंगो हेरिटेज एरिया घोषित किया गया है। • केरल राज्य जैव विविधता बोर्ड ने कन्नपुरम ग्राम पंचायत के समन्वय से इस क्षेत्र को धरोहर क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया है। • कन्नपुरम में आमों की 200 से अधिक किस्में पायी जाती हैं तथा यह विभिन्न देशी आमों की किस्मों का एक प्रमुख स्थल भी है। • धरोहर क्षेत्र की घोषणा के भाग के रूप में, प्रत्येक घर में नर्सरी की स्थापना की जाएगी, ताकि घर पर उपलब्ध आम की किस्मों का विक्रय किया जा सके। यह देश में अपने प्रकार का पहला हेरिटेज एरिया है।
गांधी-किंग स्कॉलरली एक्सचेंज इनिशिएटिव विधेयक (Gandhi-King Scholarly Exchange Initiative Bill)	• हाल ही में, इस विधेयक को अमेरिकी हाउस पैनल द्वारा पारित किया गया था। • यह विधेयक **महात्मा गांधी और नागरिक अधिकार के प्रणेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर के कार्यों एवं विरासत का अध्ययन करने** हेतु भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य एक एक्सचेंज कार्यक्रम स्थापित करने का उपबंध करता है। • इस विधेयक में **गांधी-किंग ग्लोबल एकेडमी** की स्थापना का भी प्रावधान है, जो अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित संघर्ष समाधान संबंधी एक पहल है।

साथी पहल (Saathi Initiative)	• **सिस्टम फॉर असेसमेंट, अवेयरनेस एंड ट्रेनिंग फॉर हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री (SAATHI)** नामक एक पहल के माध्यम से **आतिथ्य उद्योग (Hospitality Industry)** को सहायता प्रदान करने के लिए, पर्यटन मंत्रालय ने भारतीय गुणवत्ता परिषद (Quality Council of India: QCI) के साथ एक साझेदारी शुरू की है।
	• **इसके उद्देश्य हैं:**
	  ○ सरकार द्वारा बनाए गए कोविड-19 से संबंधित नियमों के प्रति उद्योग को संवेदनशील बनाना।
	  ○ कर्मचारियों और मेहमानों के मध्य यह विश्वास सृजित करना कि आतिथ्य क्षेत्र **कार्यस्थल पर सुरक्षा तथा स्वच्छता सुनिश्चित करने** की दिशा में प्रतिबद्ध है।
	• **इस पहल के 3 चरण है:**
	  ○ होटलों द्वारा स्व-प्रमाणन।
	  ○ जारी दिशा-निर्देशों पर क्षमता निर्माण करने हेतु वेबिनार।
	  ○ QCI द्वारा प्रत्यानन प्राप्त एजेंसियों के माध्यम से स्थल-मूल्यांकन (वैकल्पिक)।
	• **संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (United Nations World Tourism Organisation: UNWTO)** ने वर्ष 2020 को पर्यटन और ग्रामीण विकास के वर्ष के रूप में नामित किया है।

कला संस्कृति विकास योजना	• संस्कृति मंत्रालय ने केंद्रीय क्षेत्र की योजना KSVY के विभिन्न योजना घटकों के तहत **आभासी/ऑनलाइन मोड में सांस्कृतिक कार्यक्रमों/गतिविधियों को आयोजित करने के लिए**

© Vision IAS

(Kala Sanskriti Vikas Yojana: KSVY)	**दिशा-निर्देश जारी किए हैं।** ○ KSVY **एक छत्रक (umbrella scheme) योजना** है, जिसे **देश में कला और संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु प्रारम्भ किया गया है।** ○ KSVY में निम्नलिखित उप-योजनाएँ शामिल हैं, **जिनके माध्यम से सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है:** ▪ कला और संस्कृति के संवर्द्धन के लिए वित्तीय सहायता योजना (Scheme of Financial Assistance for Promotion of Art and Culture)। ▪ सांस्कृतिक अवसंरचना के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता योजना (Scheme of Financial Assistance for Creation of Cultural Infrastructure)। ▪ अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए योजना (Scheme for Safeguarding the Intangible Cultural Heritage)।
सन इसिद्रो आंदोलन (San Isidro Movement)	• यह **कलाकारों और कार्यकर्ताओं** द्वारा **क्यूबा में संचालित** किया जा रहा एक अभियान है। इसके अंतर्गत देश में अभिव्यक्ति के लिए अधिक स्वतंत्रता की मांग की जा रही है। ज्ञातव्य है कि **क्यूबा** छह दशकों से भी अधिक समय से एक सत्तावादी कम्युनिस्ट शासन के अधीन रहा है। • **सन इसिद्रो एक अश्वेत-बहुल क्षेत्र** है, जो हवाना का सर्वाधिक निर्धन भाग होते हुए भी सांस्कृतिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है। यह **यूनेस्को (UNESCO) विश्व विरासत स्थल "ओल्ड हवाना"** का भी हिस्सा है।
विश्व-भारती विश्वविद्यालय (Visva-Bharati University)	• इस विश्वविद्यालय को वर्ष 1921 में **नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर** द्वारा स्थापित किया गया था। • वर्ष 1951 में इसे **संसद के एक अधिनियम द्वारा केंद्रीय विश्वविद्यालय** और "राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान" का दर्जा प्रदान कर दिया गया था । • यह देश का **सबसे पुराना केंद्रीय विश्वविद्यालय** है। • इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति **प्रधान मंत्री** होते हैं।
सरना संहिता (Sarna Code)	• झारखंड विधानसभा ने सरना संहिता पर प्रस्ताव पारित किया है, जो **सरना को वर्ष 2021 की जनगणना में एक पृथक धर्म के रूप में शामिल** करने का उपबंध करता है। अब इस प्रस्ताव को अनुमोदन के लिए केंद्र को प्रेषित किया जाएगा। • सरना अनुयायी **प्रकृति पूजक हैं, जो स्वयं को हिंदू नहीं मानते हैं।** ये दशकों से एक पृथक धार्मिक पहचान प्राप्त करने के लिए संघर्षरत हैं। ○ **संपूर्ण झारखंड के जनजातीय नेता** जनगणना सर्वेक्षणों में सरना संहिता को लागू करने की मांग कर रहे थे। ○ जनगणना सर्वेक्षणों में उन्हें **धर्म के कॉलम में "अन्य" के रूप में शामिल** किया जाता है।
एक भारत श्रेष्ठ भारत	• इसके तहत, **प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र को एक वर्ष के लिए किसी अन्य राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के साथ संयोजित किया जाता है,** जिसके दौरान वे भाषा, साहित्य, व्यंजन, त्यौहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि क्षेत्रों में एक-दूसरे के साथ एक संरचित संलग्नता स्थापित करते हैं। • विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की संस्कृति, परंपराओं एवं प्रथाओं का ज्ञान राज्यों के मध्य **संवर्धित समझ तथा संबंधों को बढ़ावा देगा**, ताकि भारत की एकता व अखंडता को मजबूत किया जा सके। • इस पहल के लिए **शिक्षा मंत्रालय** को नोडल मंत्रालय के रूप में नामित किया गया है।
नाज़का लाइन्स पेरू (Nazca Lines, Peru)	• हाल ही में पेरू की प्रसिद्ध नाज़का रेखाओं में एक आराम करती बिल्ली (लाक्षणिक भूगर्भ) की विशाल उत्कीर्णित रेखाचित्र की खोज की गई थी। • नाज़का रेखाएँ पेरू में नाज़का रेगिस्तान के भू-भाग पर विशाल रेखाचित्र हैं।

	• इन नाज़का रेखाओं को नाज़का संस्कृति द्वारा 500 ईसा पूर्व और 500 ईस्वी के मध्य उत्कीर्णित किया गया था। • यह यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल है। • क्षैतिज रूप में बिल्ली का रेखाचित्र 37 मीटर लंबा है। इसकी कालावधि उत्तरवर्ती पराकास युग (Paracas era) (500 ईसा पूर्व - 200 ईस्वी) की है।
अवधानम (Avadhanam)	• हाल ही में उपराष्ट्रपति द्वारा **'अंतर्राष्ट्रीय सातवाधानम' कार्यक्रम** का शुभारंभ किया गया। • उन्होंने कहा कि साहित्यिक कौशल के रूप में **'अवधानम' ने तेलुगु भाषा की गौरवशाली परंपरा में अत्यधिक योगदान दिया है।** • अवधानम, भारत में प्राचीन काल से प्रचलित एक साहित्यिक प्रदर्शन है। • यह एक संस्कृत साहित्यिक प्रक्रिया के रूप में उत्पन्न हुआ तथा आधुनिक समय में तेलुगु और कन्नड़ भाषा में कवियों द्वारा पुनर्जीवित किया गया। • इसमें विशिष्ट विषयों, रूपों या शब्दों का उपयोग करके कविताओं में आंशिक सुधार भी किया जाता है।
जल्लीकट्टू (Jallikatu)	• यह **तमिलनाडु का एक पारंपरिक खेल** है। इसमें **बैल/सांड के साथ दौड़ लगाई (पीछा करने के उद्देश्य से) जाती है।** इस खेल का आयोजन पोंगल (फसल-कटाई से संबंधित उत्सव) के दौरान किया जाता है। ○ जल्लीकट्टू का उल्लेख **संगम साहित्य में** भी किया गया है। ○ इसके अतिरिक्त, **मोहनजोदाड़ो से प्राप्त एक मुहर में** सांड को वश में करने का संदर्भ मिलता है। यह मुहर लगभग 2,500 ईसा पूर्व और 1,800 ईसा पूर्व के मध्य किसी समय से संबंधित है। • जल्लीकट्टू 'शब्द, तमिल शब्द 'सल्ली (सिक्का) कासु (पोटली)' से व्युत्पन्न हुआ है। जिसका तात्पर्य यह हुआ कि पुरस्कार राशि के रूप में सांड/बैल की सींगों पर एक पोटली में सिक्के बांधे जाते हैं।
स्पिक मैके (युवाओं में भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति के संवर्धन के लिए सोसाइटी) {SPIC MACAY (Society for the Promotion of Indian Classical Music And Culture Amongst Youth)}	• यह **डॉ. किरण सेठ** द्वारा वर्ष 1977 में स्थापित एक गैर-राजनीतिक, देशव्यापी व स्वैच्छिक आंदोलन है। • इसका उद्देश्य भारतीय और विश्व विरासत के समृद्ध एवं विषमांगी सांस्कृतिक मिश्रण में समाविष्ट रहस्यवाद के बारे में अवगत करके युवाओं को प्रेरित करना है। • **स्पिक मैके** को राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति मंत्रालय, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय (अब शिक्षा मंत्रालय) द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर समर्थन प्रदान किया जाता है। • अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्पिक मैके रिकस्कॉनसर्टीन (नॉर्वे) और गोएथे इंस्टीट्यूट (जर्मनी) द्वारा मान्यता प्राप्त और समर्थित है।

 © Vision IAS

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

Heartiest Congratulations to all successful candidates

7 IN TOP 10 SELECTIONS IN CSE 2019

FROM VARIOUS PROGRAMS OF VISION IAS

9 IN TOP 10 SELECTION IN CSE 2018

8468022022 WWW.VISIONIAS.IN

DELHI | JAIPUR | PUNE | AHMEDABAD | HYDERABAD | CHANDIGARH | LUCKNOW | GUWAHATI